स्वयम्बरा

उर्फ़

सती और असती

पहला बयान

"देखते क्या हो ज्वानो ! दौड़ो बाल्टी, गगरा लेकर बुझाओ नदी से आग ! तुम लोग इतने बहादुर आदमी खड़े मुँह ताकते और एक उपकारी रईस का मकान धाँय धाँय जल रहा है। धिक्कार है तुम लोगों की जवानी और जिन्दगी को। यह तुम्हारा पौरुष किस काम आवेगा बहादुरो !"

दरोगा से इतना सुनते ही वहाँ जितने आदमी खड़े थे। सब बालटी, गगरा, हंडा, घड़ा जो जिसको मिला सब लेकर पोखरो से पानी भर भर आग पर फेंकने लगे। कोई घड़ा ऊपर से उड़ेलने लगा। कोई सूप में भर भर कर फेंकने लगा, कोई पनिहा दौरे मे डाल कर आग पर डालने लगा जिससे जो बना सब उसी काम मे लग गये।

पुलिस के सिपाही, जमादार चौकीदार साठ सत्तर आदमी उन आग बुझाने वालो में पहुँच कर मदद करने लगे। उन लोगों के पहुँचने से पहले हवेली का बड़ा भाग तो जल कर खाक हो चुका था लेकिन जो कुछ बाकी था वह सब अब जलने नहीं पाया।

जलती हुई हवेली के एक कमरे में दो लड़कियाँ सोयी हुई थीं। एक मुस्तैद आदमी उसमे घुस कर दोनो को बाहर घसीट लाया और फुलवाड़ी मे उन्हे ले जाकर जी दान किया। वहाँ चार पाँच आदमी बग्घी फिटन पर से उतर कर भीतर पहुँचे तो एक खाट पर चारो ओर तकिया और गद्देदार कपड़े लगे हैं। बीच मे मकान मालिक देवदूत आधा बैठे और आधा सोये हुए बेहोश पड़े हैं। डाक्टर उनकी छाती पर टेलिथकोप लगाये उनके हृदय की धड़कन सुन रहे हैं। हाथ मे घड़ी है कान में रबर का पाइप है। आँखें मिनट की सूई निहार रही हैं और कान दिल की धड़कन सुन रहे हैं। मन और बुद्धि से डाक्टर साहब यह देख समझ रहे हैं कि मिनट मे कै बार नाड़ी चलती है। बहुत देर के बेहोश देवदूत अब सगबगाने लगे। आँखें उन्होने खोलीं। लेकिन

कन्धे से खून बराबर बहा जा रहा हैं। डाक्टर ने टेलिथकोप हटा कर घड़ी रख दी और झट चाकू से चीर कर छर्रें निकालने लगे। देवदूत के पाँव के पास ही उनकी स्त्री दयावती आँसू पोछती और सिसकती हुई सब को देखने लगी है।

एक ओर खाट पर एक लड़की पौढ़ी हुई है। उसकी देह कम्बल से ढकी है। दूसरी लड़की सिरहाने बैठी देव दूत का सिर दाबे है। यह दोनों लड़कियाँ देव दूत की दुलारी कन्या हैं। छोटी की देह में जुड़पित्ती निकली है इस कारण उसको कम्बल से ढाक दिया गया हैं।

फुलवाड़ी मे बिछौना वगैरः तो था नहीं। हवेली मे जब आग लगी तब सण्ड मुसण्ड नौकर दौड़कर भीतर घुस पड़े और खिड़की से बहुत से गद्दे, तकिये मसहरी गिलेफ पर जो कुछ बना बाहर फेंक फाँककर बचाया। चार छ बक्स भी आँगन मे पवार कर बचाया। आग लगन्ते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ की मसल हुई।

अगलही का कारण और घटना का विशेष विवरण जानने के लिये दारोगा पुलीस सब दल बल सहित पहुँच गये। डिपुटी मेजिस्ट्रेट भी मौके से आये। पास पड़ोस के रईस और मित्र गण भी आ धमके। देवदूत की रिआया किसान लोग भी मदद को ठीक समय खबर सुनते ही पहुँच गये।

बात यों हुई कि आधी रात के बाद कोई एक बज जानेपर दर-वाजे के कड़ा खटखटाने से राय राजनारायण बहादुर का द्वारपाल

नींद से उठकर आँखें मलता और बड़-बड़ाता हुआ बाहर आया कि कौन अहमक है रे इतनी रात के दरवाजा तोड़े डालता है। कहाँ का गँवार आ गया इस विरत रात के! निकम्मा कहीं का बेसहूर!"

जब द्वारपाल बाहर आकर एक उजड्ड किसान को हाथ में टट्टू की लगाम थामे दूसरे हाथ मे राम डंडा लिये देखा तब और बिगड़ा बोला—"अरे तू कौन है रे निकम्मा इस रात के क्यों दरवाजा पीटता है कहाँ से आया ?"

उसके इतने सवालो का जवाब न देकर किसान ने कहा—"मालिक को जल्दी खबर करो भैया! बड़ी आफत कपार पर आयी है। अब ये घड़ी तुम्हारी बातों का जवाब देने को मौका कहाँ! जाव मालिक को जगा दो। बड़ा सङ्कट पड़ने से इतनी रात के आये हैं। मालिक की जान जाती है। बड़ा अनरथ होने चाहता है।

लेकिन द्वारपाल को मालिक के जगाने की नौबत नही आयी। वह दरवाजे की भड़भड़ाहट सुनकर आपही हाल जानने के वास्ते नीचे उतर आये। रास्ता छोड़कर दरवान हट गया। मालिक ने बाहर निकल कर कहा—"कौन है रे तू कहाँ का जानवर है इस रात के इतना ऊधम करने आया है। ना समझा कही का!"

हाथ जोड़कर वह निकम्मा बोला—"सरकार हम देवदूत बहादुर की रिआया हैं। आप पहचानते नही हौ मालिक! जल्दी चलौ मालिक! हमारे मालिक की हवेली हहाकार जल रही है। आप चलकर सहाय करें सरकार।"

"अरे यह तो बड़ी आफत भयी रे! इतनी रात के कौन चण्डाल देवदूत से भले आदमी का दुश्मन हुआ जो उनकी हवेली मे आग लगा दिया। भला हम अकेले इस रात के जाकर क्या करेंगे वहाँ?"

"आपके चले पर मालिक सब काम बन जा है। लोग मदद को दौड़ पड़ेंगे। वहाँ पास ही में पानी है। जल्दी लोग बुझा देंगे। आपके हुक्म की देर है। वहाँ खाली आग ही नहीं सरकार और आफत आयी है।"

मालिक अकचका पूछने लगे—"और आफत क्या रे? साफ कहता काहे नहीं कोई जल ओल गया क्या बात है! बोल जल्दी।"

"जल नहीं गया मालिक को गोली मारा है।"

मा०—गोली किसने मारा है! किसको मारा है गोली? कोई मर गया है क्या।

"खुद मालिक को गोली लगी है सरकार! कई फैर हुए हैं। मालिक देवदूत बेहोश पड़े हैं सरकार।"

मालिक विचलित होकर बोले—"अरे बाप रे! देवदूत बहादुर को गोली किसने मारा रे! ऐसे भले आदमी को गोली! जो सदा सबका भला करने वाले उनको किस चाण्डाल ने ऐसा पातक किया है! वैसे उपकारी आदमी का दुश्मन कौन हुआ?"

"कौन जाने मालिक किस हत्यारे ने ऐसा अनरथ किया। मालकिन के तो दाँत पर दाँत लग रहे हैं सरकार जिस घर में

आग लगी है उसमें से निकाल कर नउको वगीचे मे रखा गया है सरकार हम लोग तो अनाथ हो गये मालिक !" कहकर आँसू बहाने लगा। कण्ठ भर आया। आगे बात नहीं निकली।

"ओ हो! वड़ा अनर्थ हुआ? अच्छा जा किसान! पहले थाने मे खबर दो हमारा नाम लेकर थानेदार को फौरन बुला लाओ! महल्ले महल्ले डुग्गी पिटवा देवें। तुम जाव जल्दी देरी मत करो। हम अभी आते हैं।"

हाथ जोड़कर बोला—"अच्छा सरकार हम जाते हैं। डाक्टर को भी लाना होगा। आप देरी नहीं करें मालिक।"

मा०—हाँ! हाँ! जल्दी डाक्टर को भी बुला सबसे पहले डाक्टर का काम है। हम डिपटी साहव को भी लेकर आते हैं। उनको भी कहता जा। हम सव लोग पहुँचते हैं देरी नही होगी।

अव और कुछ न कह कर वह सम्वाददाता जैसे आया था वैसे ही लौट गया। मालिक साहव उसको पीछे से अच्छी तरह देख देख कर मन मे दुःखी होने लगे।

हम यहाँ आगे वढ़ने से पहले मालिक साहव का कुछ परिचय पाठको को देना उचित समझते हैं।

आपका नाम राजा राजनारायण वहादुर है लोगो के उपकार मे आपका समय और सम्पति दोनो खर्च होते हैं। आपका स्वभाव ऐसा है कि पराये दुःख से दुःखी रहते हैं।

राजा वहादुर के मनमें वड़ी चिन्ता हुई। उनके मित्र इस समय वड़े संकट मे पड़ गये। घर का घर जला ऊपर से गोली

खाकर प्राण संकट मे आया। अब तब की दशा मे मिनटो के मेहमान हो रहे हैं।

मन में राजा साहब चिन्ता करने लगे कि कैसे उनके मित्र का प्राण बचेगा। उनसे थोड़ी ही दूर पर गवर्नमेण्ट प्लोडर रहते थे। उनको खुद जाकर मालिक ने पुकारा और देवदूत का सब संकट कहकर साथ लाये। थाने के दारोगा अपने दल बल सहित पहुँच गये। राजनारायण के कहने से डिपुटी मेजिस्ट्रेट साहब भी पधारे।

देवदूत की जान संकट मे है सुनकर सब लोग बड़ी तत्परता से पहुँच गये। वह कानपुर जिले के रहने वाले हैं वहाँ से मिर्जापुर आकर चुनार तहसील में कुछ जमींदारी खरीद कर वही रहने लगे हैं। उनकी प्रजा उनसे बहुत प्रसन्न रहती है। उनके किसान बड़े मिहनती और फरमाबरदार हैं। मालिक की कृपा भी उन पर खूब रहती है। देवदूत स्वयम् भी बड़े सुन्दर पुरुष हैं। उनके व्यवहार भी प्रजा और किसानों के साथ वैसे ही सुन्दर हैं। लेकिन स्त्री जाति से उनकी नही पटती। कुछ उनको ऐसा अनुभव हो गया था जिससे उन्होने जिन्दगी भर अकेले बिना ब्याहे रह कर संसार यात्रा निवाहने का प्रण कर लिया था। बयालीस बरस के हो चुके थे लेकिन ब्याह का नाम कभी नहीं लेते थे।

संयोग की बात ऐसी कि तैतालीसवें बरस मे एक स्त्री से उनके मन का मिलान हो गया और उसी से उन्होंने ब्याह कर लिया। उस समय वह स्त्री इक्कीस बरस की थी। उसी साल

उनको एक कन्या पैदा हुई। साढ़े तीन वर्ष बीतने पर एक और लक्ष्मी का जन्म हुआ। बड़ी बेटी पाँच बरस की हो चुकी है लेकिन छोटी अभी दो वर्ष से भी कम की है। देवदूत सिंह जैसे दयावन्त स्वभाव के हैं उनकी स्त्री दयावती भी यथा नाम तथा गुणवाली रमणी हैं।

उधर राजा राजनारायण राय जब अपने मित्र वकील, दल बल सहित दारोगा डिपुटी मेजिस्ट्रेट सहित अपनी गाड़ी मे लिये हुए देवदूत के घर की ओर रवाना हुए तब सवेरा होने मे अधिक देर नहीं थी।

जब राजनारायण की गाड़ी और फिटन अपने सवारों को लेकर देवदूत के बँगले की ओर रवाना होकर कुछ दूर निकल गयीं तब ऐसा कलरव सुनाई दिया जैसा हाट बाजार लगने पर दूर से सुनाई देता है। इतनी रात के सन्नाटे मे ऐसा खम खम सुनकर सब लोग दङ्ग हो गये। जब सवारियाँ देवदूत सिंह की फूलवाड़ी के द्वार पर पहुँच कर खड़ी हुईं तब उनके घर की अगलही की लवरें आस्मान की ओर उत्तान होकर बढ़ रही थीं। अम्बर में लाली दौड़ी जा रही थी। सब घटना देखते हुए जब लोग गाड़ियों से उतर कर देवदूत की फुलवाड़ी के भीतर गये तब दरोगा ने मुस्तैदी से सबको ललकारा था उसके बाद का हाल तो आगे कहा जा चुका है।

दूसरा बयान।

जब राजनारायण अपने आदमी दारोगा, पुलीस, डिपुटी मेजिस्ट्रेट सहित देवदूत की फुलवाड़ी मे पहुँचे। पुलीस ने आग बुझाने का प्रबन्ध किया। वकील साहब भी वहाँ पधारे सब अपने अपने काम में लग गये।

डिपुटी मेजिस्ट्रेट ने सब हाल सुना तब उनको इसी बात की अधिक चिन्ता हुई कि किसने उस हवेली में आग लगायी, किसने गोली मारी, आग किस कारण लगी। बन्दूक किस वास्ते चली। वह इसी की खोज में जो मिला उससे पूछने जाँचने लगे।

वहाँ साधारण दरजे के आदमी और खेतिहर किसान भी बहुतेरे जमा हो गये थे। दरवाजे पर पहुँच कर डिपुटी मेजिस्ट्रेट ने लोगों से पूछा—"तुम लोग यहाँ कब आये हो। आपही आप आग लगी थी या किसी ने लगाया था? तुम लोगो मे से कोई जानता है? तुम लोगो के मालिक को गोली किस बदमाश ने दागा है बतला सकते हो?"

इतना पूछने पर भी किसान और दूसरे आदमियों में से किसी ने कुछ जवाब नही दिया। केवल प्रणाम करके सब चुप रहे बात यह कि अपने मालिक को सब लोग बड़ा स्नेह करते थे। वह सब देवदूत की प्रजा हैं। मालिक का सब जलकर खाक हो गया। ऊपर से जान पर आफत आयी है। इसी कारण सब के सब बड़े विकल हैं। सब की आँखों से आँसू जारी है।

यहाँ एक बात याद रखने की है कि वहाँ के डिपुटी मजिस्ट्रेट को डाक्टर ऐसा ही देखते थे जैसा नेवला साँप का देखा करता है। राजनारायण राय भी डाक्टर को नहीं भाते थे ।

आग लगने के बाद बन्दूक की गोली से इलाके के मालिक की अब तब की दशा है सुनकर ही जो लोग नींद से उठकर वहाँ पहुँचे हैं मेजिस्ट्रेट साहब उनसे घटना का कारण जानना चाहते हैं यह देखकर डाक्टर साहब उनसे जलने ही नहीं लगे बल्कि उनको बुद्धू भी समझने लगे।

अपरेशन करते समय डाक्टर ने मुँह विचकाकर मेजिस्ट्रेट की ओर देखा और कुछ सेकन्ड तक अनखाये हुए घूरते भी रहे, मेजिस्ट्रेट की आँखो से यह भाव छिपा नहीं रहा। फिर भी मेजिस्ट्रेट डाक्टर को कुछ न कहकर उन लोगो से ही पूछने लगे—"तुम लोगो का किसी पर कुछ सन्देह होता है तो बोलो ? सन्देह होता है या नहीं ?"

अब डाक्टर से नहीं रहा गया। कड़े होकर बोले—"आपके कानून में क्या यही रास्ता है किसी पर सन्देह है या नहीं ।जानते हो तो कहो। यह कैसा सवाल है ?"

अब तो मेजिस्ट्रेट साहब का पारा बहुत ऊँचे चला गया। बोले—"देखिये डाक्टर साहब ! आप डाक्टरी में निपुण हैं यह हम जानते हैं लेकिन अपना काम मैं समझता हूँ। आपको मुझे सवाल करना सिखलाना नहीं होगा न डाक्टरी मे आप कायदे

कानून की बातें ही पा सकते हैं। अच्छा आप बतलाइये कितनी दूर से हत्यारे ने देवदूत को गोली मारी है?"

अब तो डाक्टर की नाक फूलने लगी। मुँह लटकाकर बोले—"मैंने डाक्टरी मे आपके इस सवाल का जवाब देने की विद्या नहीं पढ़ी है। इसका जवाब तो उस जमाने के गम्भीर विद्वान डाक्टर दे सकते हैं साहब! मैं तो देहाती डाक्टर हूँ। रोगी को देखकर जैसा मौका हो दवा देना मेरा काम है। मेरी दवा से लोग आराम होकर मेरा नाम करते हैं। मुझे इतनी बुद्धि नहीं है न यह मेरा काम है कि बतलाऊँ कि कितनी दूर पर से गोली मारी गई है।"

भवें चढ़ाकर आँखें टेढ़ी करके मेजिस्ट्रेट ने डाक्टर की ओर देखा और नजर फेर कर दूसरी ओर ताकने लगे। किसानों मे से एक कुछ आगे बढ़ कर मेजिस्ट्रेट से बोला—"शक सुबहा तो हम लोग नहीं कर सकते साहब! लेकिन एक आदमी को जानते जो इस मामले मे बहुत बात आपको बतला सकता है।"

मेजिस्ट्रेट साहब उम्मीद भरी दीठ से उसकी ओर ताक कर बोले—"कौन है वह आदमी कहाँ है?"

"वह एक लड़का है साहब! उसका नाम भुईफोड़ है। मालिक देवदूत के ही घर में इन दिनो रहता है। वह रात भर सोता नहीं है जो जैसा कहे वैसा करने मे कभी पाँव पीछे नहीं करता। मालिक की दो लड़कियों को जलती आग से उसीने जान पर खेलकर निकाल बाहर किया है।

"अच्छा उसको बुला लाओ यहाँ। उससे बहुत बातें काम की निकल सकती हैं। देखो तुम—

मेजिस्ट्रेटो की बात काटकर डाक्टर बीच ही में बोल उठे—"आप क्यो ऐसी फजूल बातो मे समय खराब करते हैं। वह एक पागल आदमी है। उसको बुलाकर क्या करेंगे? मैं उसको खूब जानता हूँ। उसके मुँह से बात तो सीधी निकलती नहीं। न उसका मिजाज ही ठिकाने रहता है। ऐसे संगीन मामले में उसकी बात पर कौन भरोसा कर सकता है।"

अब तो मेजिस्ट्रेट साहब जलते तेल के बैगन हो उठे। लाल होकर बोले--देखो डाक्टर साहब! मैं आपको पञ्चायत करने के लिये नही कहता। तहकीकात मे जो कुछ करना है वह आप मुझे सिखलाइये मत न मेरे काम मे आप दखल दीजिये। कानूनी ड्यूटी करते हुए राज कर्म्मचारी को खलल करने वाले का इलाज यही मौजूद है। आप खबरदार हो जाइये नहीं तो वह आपको-अपनी बात पूरी किये विना ही मेजिस्टेट साहब ने फिर उस किसान से कहा-"जाव जी ओ आदमी! उस लड़के को ढूँढ़कर जल्दी यहाँ लाओ।

किसानों मे से दूसरे ने कहा—"मैंने अभी उसको यहीं देखा है,।" कह कर चारो ओर देखा। फिर कहा—"अरे यही तो है! भागता क्यों है रे! देखो साहब अभी तक रहा। अब आपके डर से भागता है पकड़ो भाई। पकड़ो! पकड़ो!!"

कई आदमी दौड़ पड़े और भुइँफोड़ को थोड़ी ही दूर पर जा

पकड़ा लेकिन पकड़े जाने पर भी वह आना नहीं चाहता था। लोगों ने जबरदस्ती उसे टाँग लिया और मेजिस्ट्रेट के सामने लाकर हाज़िर कर दिया।

देखा गया तो उसकी उम्र सत्तरह अट्ठारह वर्ष की होगी। कद का बेतरह लम्बा रङ्ग का सोने ऐसा फीका देखने से जान पड़ा कि खून देह मे नहीं है। हाथ पाँव पतले छाती गहरी पेट निकला हुआ। सिर छोटा. मुँह बड़ा गहरा, ओठ निकले हुए नीचे को बिदुराये हुए, आँखें छोटी मिचमिची, कान दोनों बड़े हैं। बात करने में सारी देह खींच उठती है। चेहरा बिगड़ जाता है बहुत अकबका कर दो एक बात बड़ी कठिनता से बाहर निकलती है। अङ्ग सीधे नहीं। हाथ पाँव जहाँ लगे हैं वहाँ ऐंड़े बेंड़े हैं। चलने मे पाँव सीधे नहीं पड़ते।

हम यहाँ भुईंफोड़ का कुछ इतिहास कह देना उचित समझते हैं। यहाँ एक अमीर का घर बीस पच्चीस वर्ष हुए बन रहा था उसको रँगने के वास्ते बनारस से पाँच कुम्हार कारीगर आये थे। उस नयी हवेली के पासही एक महाजन का आढ़त वाला गोला था। उसमें बहुत सी मजदूरनें काम करती थीं। उनमें कई छैल चिकनियाँ थीं। तीन चार एक साथ काम करके छुट्टी के समय झूमर गाती हुई रोज अठिलाती जाती थीं। जो कारीगर काशी से आये थे उनमे एक कम उम्र का सुन्दर था। उसकी खड़ी मूंछें, उसकी चितवन और रसिया कजली सुनकर एक सुन्दर मजदूरनी उससे फँस गयी।

जब कारीगर सात आठ महीने तक इमारत में रँगाई का काम करके चले गये तब उस मजदूरनी के गर्भ जाहिर हुआ। गोला के मालिक ने उस युवती को निकाल बाहर कर दिया।

वह बेचारी गली गली ठोकर खाने लगी। जैसे नीच लफंगे की बातो मे फँसकर उसने अपना सत खो दिया था उन्हीं के नङ्गपन के मारे अब उसको भीख माँगकर निर्वाह करना भी कठिन हुआ। जहाँ जाती वहीं सब ताली देकर हँसते और दुरदुरा देते थे।

वह दुःखिनी बहुत सङ्कट सह कर भी जब नही दिन काट सको तब जङ्गल मे जाकर वन फल और पत्तों से गुजारा करने लगी। वहीं रात को अकेली सोकर समय विताने लगी।

भयङ्कर शीत के समय एक रात के उसी जङ्गल मे एक लड़का उसको पैदा हुआ। वह विकलाङ्ग होकर जन्मा और माता का दूध पीकर पला। जब बड़ा हुआ तब माता की देखा देखी वह भी वनफल मूल पर ही दिन काटने लगा। नदी का जल पी कर रहता था। उसको बोलने की शक्ति बहुत ही कम थी। बहुत कुछ कष्ट सह कर माता ने उसे बात करना सिखलाना चाहा लेकिन कुछ फल नहीं हुआ।

मुँह टेढ़ा करके, आँखें पथरा कर हाथ हिला कर बड़ी कठि-नता से दो एक बात करने मे उसकी देह में पसीना चलने लगता था। जब वह आठ नव वर्ष का हुआ तभी उसकी मा मर गयी। तब अकेला हो गया। वन मे अकेला रहा। भूख लगने पर बस्ती

में आता। जिसको दया आती उसको खाने पीने को दे देता था। कोई कभी पैसा भी देता था। एक किसान ने अपने गाय बैल और भैंसे चराने के वास्ते उसको नौकर रखा। खाना कपड़ा देने लगा। सोने का भी प्रबन्ध कर दिया। लेकिन वह भुंइफोड़ काम करना जानता नहीं था न किसीने उसको कभी सिखलाया। इस कारण उससे यह काम भी नहीं हुआ तब किसान ने दाम बेकाम जाता देखकर उसको विदा कर दिया।

उसके बाद एक डाक्टर उसको आराम करने की गरज़ से अपने घर ले गये। भुंइफोड़ को मूर्च्छा का रोग भी था। मग्ज़ के विकार से ही यह रोग होता है। यह वह डाक्टरी में पढ़ चुके थे उसको बड़ी निगरानी मे रखकर दवा और खाना पीना कपड़ा भी देने लगे। जब छ महीने तक उसको अपने यहाँ रखकर भी डाक्टर ने कुछ फल नहीं पाया तब लाचार होकर उसे घर से विदा कर दिया। तब से डाक्टर को उस पर बड़ी घृणा हो गयी।

जो डाक्टर आज देवदूत का इलाज करने आये थे, उनका नाम लोरन था। उन्होंने भुंइफोड़ का उतने दिनों तक इलाज किया था।

जब उसी भुंइफोड़ को लोगो ने मेजिस्ट्रेट के सामने हाजिर किया तब डाक्टर ने बहुत नाक भौं चढ़ायी और बराबर कहने लगे कि वैसे पागल से कुछ पूछना भूसे पर भीति उठाने की कोशिश करना है।

मेजिस्ट्रेट डाक्टर की इस हरकत से अब बहुत बिगड़ उठे।

बोले—"देखो डाक्टर तुमको बहुत बार मना कर दिया। तब भी तुम सुनते नहीं हो। सरकारी काम मे दखल देते हो। किसी राज कर्मचारी को ड्यूटी मे खलल करना सङ्गीन अपराध है समझने पर भी तुम बाज नही आते। अब मैं कहे देता हूँ। फिर ऐसी हरकत करोगे तो मैं पुलीस सुपुर्द कर दूँगा। खबरदार हो जाव।"

अब मेजिस्टेट ने इस तरह डाक्टर को फटकार कर सामने वाले किसान से पूछा—"आठ दस बरस पर भी जब यह बात नहीं कर सकता था तब इसका नाम कैसे मालूम हुआ?" किसान ने कहा—"जिसके यहाँ यह चरवाही करता रहा वह आदमी यहाँ मौजूद है हजूर उससे इसका जवाब ठीक मिलेगा।"

उस आदमी को पुकारना नहीं पड़ा। इसी समय भीड़ मे से एक बूढ़ा किसान लकुटिया थेघता हुआ मेजिस्टेट के सामने आया और दोनों हाथ जोड़ कर बोला—"हमने इसको लड़कपन में चरवाहा रखा रहा सरकार।"

मेजिस्टेट—तुमको इसका नाम मालूम रहा?

"ना सरकार! नाम इसीसे बहुत पूछा तब मुँह टेढ़ा करके आखें बिचका कर कई बल खाकर मुश्किल से बोला रहा—भूँफोड़।

अब मेजिस्ट्रेट को सन्तोष हो गया। उसे पास बुलाकर पूछने लगे—"तुम्हारा नाम क्या है।"

उसनें बड़ी कठिनता से ऐड़ी का पसीना कपार पर ले जाकर कहा—

"भूँफोड़।"

मे०—तुम इसी मकान में रहता है?

"हाँ। हाँ!!"

मे०—रात को क्या हुआ इस घर में, सो सब बोलो—

देवदूत के पयताने दयावती बैठी थी उसी की ओर ताक कर भुंइ फोड़ आँसू गिराने लगा।

बात यों थी कि दयावती ने भुइँ फोड़ को शरण दी थी। उसमें आदमियत तो और कुछ नहीं थी। न सीधे बोल सकता था। किसी की बात सुन कर जवाब देना उसको आता नहीं था लेकिन दयावती को बहुत मानता था। उसको देखते ही पालतू कुत्ते की तरह ओ ओ करके कूदने और उसके ऊपर चढ़ने लगता था। उसी के इशारे पर सब काम करता और इशारे पर ही उससे बातें किया करता था।

दयावती की ओर जब वह बार बार ताकने और करुणा करने लगा। तब उसने इशारा किया। उसी का इशारा पाकर भुइँ फोड़ अब प्रसन्न होकर मेजिस्ट्रेट की ओर हुआ जवाब मिलने का भरोसा करके मेजिस्ट्रेट ने फिर पूछा—"अच्छा तुम बतलाओ रात के इस घर मे क्या हुआ?"

मु०—अगलही।

मे०—कब आग लगी! किसने आग लगाया?

मु०—दूलम

मे०—दूलम कहाँ रहा?

मु०—सदर हवेली की दालान में। वहाँ पुआर का बोझा,

रहा। बहुत बोझा जलाने की लकड़ी रही। आधी रात के लकड़ी में से दूलम बाहर निकल कर दिया सलाई जला कर पुआल के बोझ में नीचे डाल कर कागज़ रख दिया और आप लकड़ी में लुका गया।

मे०—उस घड़ी तुम कहाँ रहा?

भु०—मैं बरण्डे में घूमता रहा। रात को मैं सोता नहीं कभी।

मे०—अच्छा आग लगा कर दूलम्ह सिंह लुका गया तब फिर क्या हुआ?

भु०—पुआल जल कर लकड़ी में आग लगी। हहा कर आग उठी। बढ़ते बढ़ते जंगले खिड़की जलने लगी। मालिक दौड़कर बाहर गये। सदर दरवाजा खोलकर चिल्लाने लगे। इतने में बन्दूक का फैर हुआ उसी दम मालिक गिर पड़े। फिर नौकर लोग मालिक को उठा कर बगीचे मे ले आये। मालिक की दोनो बेटी भीतर कमरे में सोयी रहीं। उसमें भी धाँय धाँय आग जल रही थी। हम घुस के दोनों को गोदी मे उठा कर यहाँ लाये।

मे०—दूलम जब लकड़ी में से निकला और खर मे जलता कागज डालकर फेंका तब तुम उनके हाथ मे बन्दूक देखा रहा?

भु०—हाँ देखा रहा।

मे०—वह कैसा कपड़ा पहने रहे।

भु०—रंगदार पायजामा रहा, उसी रंग का लम्बा अंगरखा रहा, माथे पर पीला रग का लट्टूदार पाग रहा। जूता कैसा सो अच्छी तरह देखा नहीं।

मे०—अच्छा अन्धेरे मे दूलमको तुम कैसे पहचाना।

भु०—पहले नही पहचान में आये जब दियासलाई से कागज जलने लगा तब पहचाना।

मे०— तुम और कभी दूलम सिंह को देखा रहा कि नहीं ?

भु०—बहुत बार देखा है। वह शिकार करने इधर बहुत आते हैं। साथ में कूकुर रखते हैं हम लोग उनका शिकार देखने जाते हैं। एक दिन हम—

इतना कहते कहते भुईं फोड़ को सारी देह मे ऐंठन हुई वह वहीं गिर कर बेहोश हो गया।

जितने आदमी वहाँ खड़े थे सब बड़े अकचकाये। मेजिस्ट्रेट को भी बहुत विस्मय हुआ। लोग उसे टेकाकर वहाँ से उठा ले गये।

अब डाक्टर लोरन की बन आयी। मुँह बिचकाकर, ताने की हँसी से बल खाकर कहने लगे—"हम तो पहले ही बोला रहा। एक तो वह पागल ऊपर से मिरगी का रोगी है। वही मसल है एक तो करैला दूसरे नीम चढ़ा। ऐसे संगीन मामले मे ऐसे पागल का इज़हार लेना अपनी हँसी कराने के सिवाय और क्या है ?

दूलमसिंह का नाम सुनकर सब लोगो को बड़ा अफसोस हुआ। वह नामी ज़मीदार हैं उनके ऊपर ऐसा गहरा दोष सुनकर सब दंग हो गये।

सरकारी वकील ने कहा—पागल का इजहार लेना कानूनन नाजायज़ है ।

मेजिस्ट्रेट साहब चुप रहे । देवदूत ने बहुत धीरे टूटती आवाज मे कहा—"मेरा भी विश्वास नहीं है ।"

डाक्टर ने कहा—"बिलकुल गप्प सब बनावटी बातें हैं ।"

मेजिस्ट्रेट ने किसी की बात नहीं सुनी । आप अकेले वहाँ से बाहर हुए और उस भीड़ से अधिक उम्र के आदमियो को अलग बुला ले जाकर कान मे धीरे धीरे उनसे कुछ पूछा । उन लोगों ने भी बहुत धीरे कुछ जवाब दिया ।

थोड़ी ही देर में मेजिस्ट्रेट फिर उस जगह पहुँचे जहाँ दयावती बैठी थी वहाँ पहुँच कर बड़े सन्मान से कहने लगे—आपको इस घटना का क्या हाल मालूम है ?"

दयावती बोली—जब रात के कोई ग्यारह बज चुके बारह का अमल रहा हवेली के बाहर गोलमाल सुनाई दिया । बन्दूक का फैर भी सुना । बात यो थी कि मुझे अपनी छोटी लड़की की तकलीफ के मारे नींद नहीं आयी । उसको मांता निकल आयी हैं । उसीको लेकर मैं दूसरे कमरे मे थी । बड़ी लड़की भी वहीं मेरे पास थी । मैं झट हवेली के सदर दरवाजे पर पहुँची कि यह गोलमाल और बन्दूक की आवाज़ कैसी हो रही है । वहाँ मैंने सदर दरवाजा खुला पाया । चारों ओर आग लगी देखकर मैं तो बदहवास की तरह चिल्ला उठी मेरे मालिक धरती पर बेहोश पड़े मिले । छाती के ऊपर से उनके खून बह रहा था ।

मेरे हुक्म से चार किसान मेरे पतिदेव को यहाँ बगीचे में उठा लाये। मुझे उस घड़ी याद नहीं रही कि जलते कमरे के भीतर मेरी दोनों लड़कियाँ पड़ी हैं। थोड़ी ही देर पर यह हमारा मुंह-फोड़ जलती आग में बेधड़क घुस गया। और मेरी दोनों लड़कियों की जान बचा कर यहाँ लाया। इतना ही तो मैं जानती हूँ साहब।

दयावती का बयान कलम बन्द करने के बाद मेजिस्ट्रेट साहब देवदूत का अन्तिम बयान लिखने चले थे कि एक नौकर ने हाँफते हुए वहाँ पहुँच कर कहा—"एक दीवार गिर गयी है सरकार भीतर की ओर आग के तेज से फट गयी थी बड़ी खैरियत हुई कि बाहर नहीं गिरी। कोई मरा तो नहीं है देखने के वास्ते पुलीस ने कुलियों से फौरन ईंट पत्थर हटाये तो चार आदमी उसमें दबे निकले हैं। दो तो मर गये हजूर लेकिन बाकी दो की साँस बड़ी मुश्किल से चल रही है। बचेंगे नहीं जान पड़ता है वह दोनों भी।

अब तो सब लोग दङ्ग हो गये। मेजिस्ट्रेट साहब को अपराधी निकालने की चिन्ता थी वह दो अब तब की हालत वालो के इलाज का प्रबन्ध करके अपने काम में लगे।

देवदूत से उन्होंने पूछा—"आपको क्या याद है सो कहिये।"

दे०—मेरी घरवाली ने जो कुछ कहा है उतना ही हमको भी मालूम है। किसने गोली मारी इसका तो मुझे कुछ पता नहीं लगा। बाहर का शोरगुल सुनकर ही मैं जागा दरवाजा खोल कर बाहर पहुँचा तभी बन्दूक की आवाज हुई। कई छर्रें मेरी कनपटी के पास से सन्न करके निकल गये। जिधर से फैर हुआ था उधर

देखा था कि फिर फैर हुआ इस वार मेरे कन्धे मे छर्रे लगे और मैं वेहोश हो गया ।

मे०—अच्छा किसने गोली मारी यह तो आप जानते नहीं हैं । लेकिन किसी पर शक करते हैं आप ?

दे०—नही साहव मेरा शक तो किसी पर नही है नाहक मैं क्यो किसी को वधूॅ । मैं तो बधा ही गया हूॅ । मैं वेगुनाह मारा गया लेकिन मैं किसी को वेगुनाह नहीं मारूँगा ।

मे०—अच्छा दूलमसिंह को आप जानते हैं ?

दे०—हॉ जानता हूॅ ।

मे०—भुईफोड़ ने जो कहा कि दूलम ने गोली मारी है ?

दे०—मेरा ऐसा विश्वास तो नहीं है साहव कि दूलमसिंह बेचारे यहॉ आकर मुझे गोली मारेंगे ।

मे०—मैं तो समझता हूॅ जिसने आग लगायी है । गोली भी उसी ने मारी है उसने सोचा था कि आग लगने पर आप बाहर निकलेंगे इसो घात से वह लकड़ियो मे वन्दूक ताने छिपा था । आप ज्यों ही निकले हैं त्यो ही उसने गोली मार दी है ।

दे०—हॉ अटकल तो ऐसा ही होता है । यह हम मानते हैं ।

मे०—अच्छा दूलमसिंह से आपका मेल है या विगाड़ ?

दे०—वात यह कि वह आदमी अच्छे हैं इतना मैं जानता हूॅ । उनके इलाके से मेरी जमीदारी का सीवाना लगा हुआ है जमीदारी के काम में खटपट होती ही रहती है । हमारे उनके

बात होती है और फिर सामना होने पर हम लोग निपटा लेते हैं। इतना ही है। इसमें ऐसा बिगाड़ तो कुछ नहीं है।

मे०—मैं समझता हूँ। आप सच्ची बात जाहिर नहीं करते मैंने सुना है उनसे आपकी दुश्मनी है। आपने एक दिन उनके कुत्ते को गोली मारेंगे कहकर धमकाया भी था। सुना दूलम ने भी आपको गोली मारने को बन्दूक उठा ली थी। आप इस बात को छिपाइये नहीं। सबका सुबूत मुझे मिल चुका है। सच्ची बात मत छिपाइये। कहिये हुई थी यह घटना कि नहीं?

दे०—नहीं बात ऐसी है कि दूलमसिंह शिकार करने इधर आते हैं तब साथ में कुत्ते रहते हैं। मैंने हंस और मोर पाल रखे हैं। उनके कुत्ते मेरे पाले हुए प्यारे पक्षियों को खदेड़ते हैं। एक दिन मैंने हँसी मे कहा था जरूर कि कुत्तों को गोली मार दूँगा।

मे०—हाँ यह बात आपने हँसी में कही होगी लेकिन दूलम ने आपके मुँह के पास बन्दूक तानकर जो कहा था वह भी हँसी थी। देखिये बाबू साहब आप लोग बड़े आदमी इलाकादार पड़ोसी हैं ऐसी सङ्गीन हँसी दिल्लगी कल्याण की नही होती। आप विचार कीजिये ऐसी हरकत से दूलमसिंह आपके दुश्मन हुए कि नहीं?

इसका जवाब देवदूत नहीं देने पाये थे कि बाहर फिर शोर गुल हुआ। दरवाजे के पास तीन आदमी पहुँच कर जोर से कहने लगे-अभी और सबूत है हजूर और गवाह हैं मुईफोड़ जा कह गया वह सब झूठ नहीं मालूम देता हजूर।

अब मेजिस्ट्रेट ने कहा—लाओ वह सब सुबूत और गवाह। हमारे सामने सबको हाजिर करो।

उसीदम मजिस्ट्रेट के हुक्म की तामील हुई और एक खूब तैयार जवान उनके सामने हाजिर किया गया।

नियम से हलफ़ हो जाने पर मेजिस्ट्रेट ने पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है।"

उसने कहा—"मोर नाव हुजूर देवदास है।"

मे०—इस मामले मे तुम क्या जानते हो आज रात के देवदूत बाबू के घर में आग लगाकर किसी ने उनको गोली मारी है। तुम उसका पता बतला सकते हो ?

देवदास—सरकार हमने आग लगाते तो आँख से देखा नहीं है न गोली मारते देखा है लेकिन आज रात को पहाड़ की ओर दूलमसिंह को बाँध पर बड़े जोश मे आते देखा रहा। काँधे पर उनके बन्दूक रहा। जङ्गल की ओर जा रहे थे। पानी बहुत बरसा है पानी में जूता। उनका फचर फचर कर रहा था। बाँध पर गिरह भर से ऊपर पानी था सरकार।

"दूलमसिंह कपड़ा कैसा पहने रहे ?", "पूछने पर कहा—चपकन पहने रहे और पाँव में पायजामा रहा। दोनों पीले रङ्ग के रहे। माथे पर पगड़ी भी पीली रही।"

इसी समय भीड़ में कई आदमी बोल उठे—"अरे बापरे ! तब तो भुइंफोड़ बात ठीक बोले रहा है भाई !"

अब मेजिस्ट्रेट ने देवदास को एक सिपाही के जिम्मे दूर

बिठाया । दूसरा आदमी हाजिर हुआ । उसको हलफ देने पर नाम पूछा गया तो पनारू अहीर था । उसने बयान किया ।

"आज बाहर खेत से लौटने में हमको देरी हो गयी । सदर रास्ते से और देरी होगी समझ कर जङ्गल की पगडंडी से लौट रहा था । बावन बिगहवा के इधर जङ्गल में आते आते नजर की कमी से थक कर एक बड़ के पेड़ के नीचे खड़ा हुआ रात के दस बजा रहा होगा हजूर । वहाँ किसी की आवाज़ कान में आयी । वह बहुत गरम होकर आप ही बकता आता रहा । हम डर के मारे पेड़ की आड़ में छिप रहे । पास आगया तब पहचाना कि वह दूलमसिंह बाबू रहे सरकार । पहचान लिया तब डर नहीं रहा । सामने पहुँच कर सलाम किया फिर पूछा कि एतनी रात के बत्त मे कहाँ जाहो मालिक ! वह मेरा सलाम लेकर बोले—"जरूरी काम से एक आदमी से भेट करने जा रहे हैं । इतनी रात के गये बिना बड़ा हरजा है इसीसे जाते हैं ।" कहके बड़ी तेजी से बढ़ गये और कुछ पूछने नहीं पाये हम हजूर ! काँधे पर बन्दूक रहा ।

जब मेजिस्ट्रेट ने पूछा कि पोशाक क्या रही तब उसने वही भुईंफोड़ की बात दोहरायी ।

अब तो मेजिस्ट्रेट साहब कलम पास ही रख कर कई मिनट तक सोचते रहे ।

अब तीसरा गवाह सामने आने पर मालूम हुआ वह स्त्री है नाम उसने अपना दरपी बतलाया । पापड़ बेल कर बेचना उसका रोजगार है । पापड़ में डालने को उड़द का आटा खरीदने जाया

करती है। वहाँ गयी तव तैयार माल नही था वहाँ ठहर कर उसने आटा पिसवाया। रात कुछ पहर भर गयी होगी आटा खच्चर पर लाद कर ले आती रही जङ्गल मे से आती रही। रास्ते मे खच्चर डर गया और भरा वोरा फेंक कर भागा लेकिन उसका पगहा पकड़ कर रोक तो लिया। वोझा उठानेवाला नहीं मिलने से वहीं रुकी रही। इतने मे कोई आदमी उधर से आता दिखलायी दिया। वड़ी तेजी मे रहा। पास आया तो पहचान गयी कि दूलमसिंह मालिक हैं। कन्धे पर वन्दूक है। हमको देख कर पूछने लगे। इतनी रात के जङ्गल में क्या करती है।

अपनी सव विपत मालिक से कह गयी। लेकिन वड़े आदमी को वोझा उठाने कैसे कहती। उनको आपही दया आयी और टेका कर वस्ता खच्चर पर लदवा दिया। मैं उसी रास्ते से आ रही थी जिस पर उनको आना रहा। लेकिन वह वड़ी तेजी से चले आये। मेरा साथ उनसे नहीं हुआ। वह देखते ही देखते आगे वढ़ कर गायव हो गये।

वयान देने पीछे दरपी और पनारू दोनों छोड़ दिये गये। केवल देवदास पहरे में रहा।

और कोई गवाह है या नहीं मेजिस्ट्रेट ने पूछा लेकिन किसी के कुछ जवाव देने के वदले वही घोड़े की टाप सुनाई दी। कोई सरपट घोड़ा कहीं दौड़ाये आ रहा था। उसने दौड़कर डाक्टर के हाथ में शीशियाँ दी। और हाँफते हुए वोला—"अरे वड़े लुटेरे हैं साहव! दवाई खाना खोला है दवा देने के वास्ते। आदमी को

जान जाती है और दरवाजा खोलेंगे नहीं। ऐसे चोट्टे दूकानदार तो नहीं देखे साहब ! बड़ी मुश्किल से जब पुलीस के सिपाही का ले गया तब तो दवा दिया है बहुत देरी के बाद।"

वह आदमी देवदूत के वास्ते डाक्टर लोरन के हुक्म से दवा लाने गया था। दवा हाथ में लेकर डाक्टर बोले—"यह तो हम भी चाहते हैं कि वह बदमाश हत्यारा पकड़ा जाय और उस खूनी चाण्डाल को फाँसी हो लेकिन खाली इधर उधर की गवाही में ही रात गुजार देना अकलमन्दी का काम नहीं है जिसकी जान पर आफत है उसका प्राण बचाना तो सब से पहला और प्रधान काम है। अब रात बहुत बाकी नहीं है। आप लोग अपनी ड्यूटी बजा चुके। अब मुझे अपने रोगी की जान बचाने में लगने दीजिये और मुआफ कीजिये।"

मेजिस्ट्रेट ने घूर कर डाक्टर की ओर देखा।—"अच्छा अब आप अपनी ड्यूटी कीजिये। हम लोग चलते हैं।" कहकर चले गये।

राजनारायण राय, मेजिस्ट्रेट, सरकारी वकील, दारोगा सब देवदूत को नमस्कार करके कुशल मनाते और प्राण रक्षा का आशीर्वाद करते हुए बिदा हुए।

तीसरा बयान

देवदूत और दूलमसिंह दोनो पड़ोसी जमीदार हैं। दोनो की जमीदारी के बीच में एक लम्बा चौड़ा बन पड़ता है। वही वन दोनों की जमीदारियों को अलग करता है। दोनो की जमीदारियाँ मिर्जापुर जिले में हैं। बीच में बाँध है।

देवदूत के घर से जङ्गल की राह जाने में दूलमसिंह की हवेली पास पड़ती है। मेजिस्ट्रेट ने उसी रात के दूलमसिंह के घर चलने का आग्रह किया। राजनारायण ने रात की बात कह कर रोका कि रात के वहाँ जाकर क्या करेंगे ? इसके सिवाय बन की झाड़ी और कुस काँटो से बड़ी तकलीफ़ होगी।

यही कहते हुए वह लोग जब बाहर रास्ते पर पहुँचे तब देखा तो सवेरा हो आया है आसमान में लाली दौड़ रही है। मेजिस्ट्रेट ने कहा—"रात नहीं। ठीक अवसर है। काम होना चाहिये। दूलमसिंह इज्जतदार आदमी हैं वह ऐसा नीच काम नहीं करेंगे यह हमको विश्वास है दोनों ही जमीदार मेरे मित्र हैं लेकिन यह मामला बड़ा सङ्गीन है मैत्री को ताक पर रख कर हमको कानून से काम करना ही होगा। सेज से उठने के पहले ही हम दूलमसिंह की दशा देखना बहुत जरूरी समझते हैं।"

यही कहते हुए सब लोग देवदूत की जली हुई हवेली के सामने पहुँचे। जो बड़ी मिहनत, बड़े खर्च से बड़ी कमायी लगा-

कर बड़ी सजावट से तैयार हुई थी वह रात ही के जलकर भस्म हो गयी। ठीक कहा है:—

भवन बनावत दिन लगे ढाहत लगै न बार।

राजनारायण राय की आँखों में करुणा उमड़ आयी। सब लोग शोक करने लगे। मेजिस्ट्रेट की आँखें भी भीगीं मनमें कहने लगे पुलीस और मदद आने मे देर होने से सब चौपट होगया। जो कुछ थोड़ा बचा है उसकी जले हुए के सामने कुछ बिसात नहीं है।

मेजिस्ट्रेट ने दारोगा की इस अवसर पर बड़ाई की और इनाम मिलने की भी उम्मेद देकर उनको बिदा किया। अभी पूरब में पौ फटता था। बड़ की लोही लगी थी। उसी समय दूलमसिंह के यहाँ जरूर जाने की बात मेजिस्ट्रेट से सुनकर राजनारायण ने अपनी गाड़ी उनको देदी और आप टमटम पर गये। मेजिस्ट्रेट के पेशकार भी उस समय आ गये थे। उनको साथ लेकर मजिस्ट्रेट साहब गाड़ी में बैठे और दूलमसिंह की ड्योढ़ी को गाड़ी उसी दम रवाना हो गयी।

जब गाड़ी दूलमसिंह के दरवाजे पहुँची। द्वारपाल मकरन्द-सिंह ने सामने आकर सलामी उतारी।

मेजिस्ट्रेट ने पूछा—"बाबू साहब जागे हैं?"

द्वा०—जी नहीं सरकार! आज बहुत रात गये मालिक सोये हैं इसीसे अभी नही जागे हैं।

मे०—कितनी रात के घर आये हैं?

द्वा०—आधी रात के बाद हजूर।

मे०—इतनी रात तक बाहर रहे! गये कब थे।

द्वा०—आठ भी नहीं बजा रहा तब के गये थे।

मे०—तो चार घंटे से भी अधिक कहाँ क्या करने गये रहे?

द्वा०—मालूम नहीं हजूर। कहके नहीं गये कि कहाँ जाते हैं। हमने भी पूछा नहीं रहा।

मे०—अच्छा जगा दो उनको।

द्वा०—मैं ऐसा कैसे करूँ सरकार मुझे तो हुक्म देकर सोये हैं कि दस बजे से पहले कोई जगाये नहीं।

मे०—अच्छा मेरा हुक्म है कि उनको फौरन इसी दम जगाओ।

द्वा०—हजूर मालिक बहुत रात गये आकर ही दरवाजा बन्द करके भीतर हो गये हैं। मुझे रात के जो काम करने का दस्तूर है वह भी ऐसे ही पड़ा है। क्योंकि वहाँ मैं जा ही नहीं सका। मालूम होता है कुछ तबियत मालिक की खराब हो गयी है सरकार।

मे०—कुछ परवाह नहीं तबीअत अभी अच्छी हो जायगी। तुम मेरा नाम लेकर फौरन उनको जगाओ।

इतना सुनने पर तो मकरन्दसिंह बगलें झाँकने लगा। उसको इधर उधर करते देखकर मेजिस्ट्रेट साहब बोले—"अजी तुमसे नहीं बनता तो हमको वहाँ ले चलो। हम खुद उनको जगावेंगे।"

निदान मकरन्द मेजिस्ट्रेट साहब को साथ लिये हुए दूलमसिंह के सोने वाले कमरे के दरवाजे पर पहुँचा।

मकरन्द ने मेजिस्ट्रेट के इशारे से दरवाजा ठेला और हाथ

थपथपाया। भीतर से आवाज़ आयी—"कौन है पाजी नमक-हराम मैं मना कर चुका हूँ तब भी तङ्ग करने आया बदमाश! दूर हो यहाँ से?"

मकरन्द तो अब चुपचाप अलग खड़ा हो गया लेकिन मेजिस्ट्रेट साहब अकड़ कर बोले—"मैं खुद आया हूँ। आपसे खास बात करना है।"

जवाब मिला—"आप! इतनी रात के?"

मे०—रात नहीं सवेरा हो चुका है। बहुत सवाल जवाब का मौका नहीं बहुत जरूरी काम आ पड़ा है।

रात को सब कपड़े उतारने पर भी दूलमसिंह पायजामा नहीं उतार सके थे। बदन पर एक अलवान डाल कर सो रहे थे। उसी को ओढ़े हुए दरवाज़ा खोल दिये। मेजिस्ट्रेट ने उनके बिखरे रूखे बाल देखे। आँखें लाल, हाथ में कुछ ददोरे और फ़ोड़े उठे हुए हैं। दूलम ने शेक हैण्ड के वास्ते हाथ बढ़ाया लेकिन मेजिस्ट्रेट थोड़ा पीछे हटकर बोले—"देखिये इस वक्त दोस्ती अदा हम नही करने आये हैं। आपके हाथ दोनो हमे देखने हैं।

अब मन में बड़े विस्मित होकर दूलमसिंह ने अपनी हथेलियाँ मेजिस्ट्रेट के सामने फैला दीं। मेजिस्ट्रेट साहब ने देखा कि हथेली खूब साफ है। कहीं कुछ मैला नहीं। तब पूछा—"आपने अपने हाथ कब धोये हैं?"

दू०—घर आकर ही धोये थे।

मे०—आप रात को गये कहाँ थे?

दू०—एक महाजन पर लकड़ी का दाम बहुत चढ़
नौकर लोग तकाज़ा करके थक गये। जब वसूली की
नजर आयी तब मैं खुद तकाजा करने गया था।

मे० - किस रास्ते से गये थे आप ?

दू०—बड़ी सड़क से जो दाहिनी ओर है।

अब मेजिस्ट्रेट साहब बिना कहे ही हुए पास की पड़
पर बैठ गये। साथ मे उनके पेशकार फकीरीराम आये थे
ठेबुल के पास वाली दूसरी कुर्सी पर बैठे। टेबुल पर दावा
और कागज़ की स्लीपें नत्थी होकर लटक रही थीं। दूलर
खड़े ही थे। पेशकार कलम उठाकर दोनों का सवाल
लिखने लगे।

मेजिस्ट्रेट ने कमरे को चारों ओर घूर कर देखा तो
के कपड़े बेसिलसिले पड़े हैं। अङ्गा एक कुर्सी पर पड़ा
रहा है। मन मे समझ लिया कि जल्दी में कपड़े फेंक फ
गये हैं। पायजामे का इजार बन्द बिना खोले हुए ही सो
उसे उतारा भी नहीं। मन में मेजिस्ट्रेट ने समझ लिया कि
ऐसी हड़बड़ी रही जिसके यह सब सुबूत हैं।

थोड़ी ही देर पर मजिस्टेट ने पूछा—"अच्छा आप
कहाँ धोया था बाहर से आकर ?"

दू०—गुसलखाने के टब में।

मेजिस्टेट ने उसी टब को मँगाकर देखा तो काला प
है और ऊपर जला हुआ कागज तैर रहा है।

मेजिस्ट्रेट ने पूछा—"यह सब छपे हुए कागज जले हुए कैसे यहाँ आये ?"

दू०—मैंने ही थोड़े से क़ागज जलाये थे।

मे०—कल जब आप रात के बाहर गये तब आपके हाथ में बन्दूक रहा ?

दू०—बन्दूक तो मेरे हाथमें हमेशा ही है। मैं शिकारी आदमी हूँ।

"अच्छा जरा बन्दूक तो हमको दिखलाइये।"

इतना मेजिस्ट्रेट से सुनकर दूलमसिंह खुद बगल वाले कमरे में गये और हाथ मे बन्दूक उठाये लौट आये।

मेजिस्ट्रेट ने देखा तो बन्दूक खूब साफ है दोनों नाले चाँदी सी चमक रही हैं। एक जगह मेकर का नाम लायन एण्ड लायन लन्दन लिखा है।

मेजिस्टेट जब देवदूत के घर पनारू का बयान ले रहे थे तब एक आदमी ने एक खाली चला हुआ कारतूस मेजिस्ट्रेट को लाकर दिया था। वह मैला बहुत था लेकिन पढ़ कर देखा था तो लायन एण्ड लायन लिखा था। उसे मेजिस्ट्रेट ने अपने जेब में रख लिया था। इस समय जेब से निकाल कर उन्होने, दिखलाया कहा—"इस मेकर का टोटा और बन्दूक तो इस इलाके मे आप ही के पास है न ?"

दू०—जी हाँ !

मे०—कल रात के देवदूत के मकान मे आग लगी थी। आप जानते हैं ?

सहम कर दूलमसिंह ने पूछा—"अरे देवदुत वावू के घर मे आग लगी थी?"

मे०—उनको उसी मौके पर किसी ने गोली मारी है आपने सुना है कि नहीं?

फिर दूलम सिंह सिहर उठे। "ओहो! गोली मारा है! जीते हैं न?"

उसका जवाब न देकर मेजिस्ट्रेट ने पूछा—यह खाली कार-तूस देवदूत के बगीचे में एक जगह पड़ा था। आप का यह टोटा वहाँ कैसे गया?

दू०—मैं तो इसको जहाँ फैर हुआ वहीं फेंक देता हूँ। लड़के उसको खेलने के वास्ते ले जाते हैं।

मे०—लेकिन आपके बरखिलाफ बड़ा सङ्गीन मुकद्दमा हो रहा है।

चौंक कर कापते हुए दूलमसिंह ने कहा—"मेरे खिलाफ़ मुकद्दमा कैसा?"

मे०—बड़ा सङ्गीन मुकदमा है कि आपने देवदूत के घर मे आग लगायी और उनको गोली मारा है।

नरमी से दूलम ने पूछा—"किसने आपको ऐसी बात कही है?"

मे०—भुईफोड़ ने।

दू०—अरे वह मिरगियाह पगला!

मे०—हाँ उसी लड़के ने।

दू०—तो पागल की बात पर आप विश्वास करते हैं? भला मैं देवदूत को क्यों गोली मारूंगा। उन्होंने मेरा क्या बिगाड़ा है! कभी कभी हमारे उनके जमींदारी की सीमा डॅड़ार के लिये सवाल जवाव होता है सही लेकिन हमसे उनसे कोई दुश्मनी तो है नहीं। वह वहुत भले आदमी हैं। सव लोगों मे उनको वड़ाई है। मैं उनका पड़ोसी हैसियत दार आदमी हूँ। चोर की तरह जाकर उनके घर मे मैं क्यों आग लगाऊँगा। ऐसा रजील का काम मैं करूँगा? वड़े शरम की वात है। मैं ऐसी वातों से सख्त नफरत करता हूँ।

मे०—हाँ जरूर शर्म और नफरत की वात है लेकिन एक मेजिस्ट्रेट के सामने वार वार झूठी वात करना कम शरम की वात नहीं है।

दू०—किसने मेजिस्ट्रेट के सामने झूठी बात कही है।

मे०—खुद आप दूलमसिंह वहादुर ने?

लाल होकर दूलमसिंह ने पूछा—"मैंने कौन वात झूठ कही है।"

मे०—सव सरासर झूठ कहा है आपने।

दू०—वतलाइये कौन मेरी वात झूठ है?

मे०—आप वड़ी सड़क से नहीं गये। आपका महाजन कहाँ रहता है सो आप ने ठीक नहीं वतलाया। जंगल के रास्ते आप देवदूत की हवेली को गये थे। जंगल में घुसने के पहले आप वाँध या पानी भरी जमीन मे छप छप करते पैदल गये थे।

टेढ़े पड़कर दूलमसिंह ने कहा—"किसी झूठे ने आप से यह सब बातें कही हैं।

मे०—कोई एक आदमी झूठ बोलेगा। लेकिन सब के सब लोग झूठ नहीं कह सकते। भुइँभोड़ ने जो कुछ कहा है और लोगों ने उस से कुछ अधिक ही कहा है।

दू०—मेरे खिलाफ़ और भी गवाह हैं ?

मे०—हाँ हैं। इसके सिवाय आपके पायजामे में जंगल झाड़ियो के दाग और काँटें हैं। जो अङ्गा आप रात को पहन गये थे देखिये वह कुर्सी पर फरफरा रहा है! उसमें काँटे लगकर जगह बजगह फट गया है। आपके पानी में चलने की वजह से कपड़ों पर छींटे पड़ी हैं।

"सड़क के पास रहे" कहकर दूलमसिंह कपड़े निहारने लगे।

मेजिस्ट्रेट ने बीच में रोककर कहा—"पहले आपने दूसरी बात कही। अब झाड़ी के पास जाने की बात कहते हैं। रास्ते मे आपको कोई मिला था ?"

दू०—ठीक याद नहीं है।

मे०—हाँ याद नहीं आवेगा। मैं खुद याद करा देता हूँ। पहले पानी भरे रास्ते पर आपको देवदास मिला था। उसके बाद किसी को गाली बकते हुए जा रहे थे तब आपको पनारू मिला रहा। उसके बाद एक पापड़ वाली मिली थी जिसका खच्चर बस्ता फेंके खड़ा था। आपने दया करके उसको लदवा दिया था। उसने

खुद यह बात कही है। उसका नाम दरपी है। आप इन बातों में से कौन सी इनकार करते हैं?

कुछ देर तक दूलमसिंह सन्न होकर खड़े मन में सोचते रह गये। उनके भीतर बहुतेरी बातें उठीं। फिर अन्त को टूटती आवाज़ से बोले—"साहब! मैं एक भले आदमी रईस का लड़का हूँ। मेरे मा बाप मौजूद हैं। मैं बत्तीस वर्ष का हो गया लेकिन शादी नहीं की थी। अब एक लड़की से मेरा ब्याह ठीक हो गया है। अगले महीने शादी होगी इन सब मामलों को विचार कर गौर फरमावें कि ऐसा सुख सामान छोड़कर मैं अपनी फाँसी का काम क्यों करूँगा।

मे०—मैं यह सब बातें नहीं जानता न सुन सकता हूँ। जो कुछ मैंने कहा उसमे आप क्या इनकार करते हैं बतलाइये। नहीं तो कसूर कबूल कीजिये। यह दोनों कसूर आपने किये हैं।

सिर नीचे करके दूलमसिंह ने कहा—"हाँ सब सामान ऐसा ही जुटा है। लेकिन मैं हलफिया कहता हूँ। मैंने यह सब हरगिज़ नहीं किया।

मे०—तो आप अदालत मजाज़ मे अपनी सफाई दे सकते हैं लेकिन आप विचार करें कि अगर ऐसा ही मुकदमा होता और आप उसमें जूरी होते तो जो मैंने बतलाये उन्हीं गवाहों के इजहार बयान सामने सुनकर आप मुजरिम को गुनहगार कहते या बे गुनाह?

उसी तरह सिर नीचे किये हुए ही दूलमसिंह ने कहा—"हाँ

अवस्था जैसी हो उसका और कानूनी मौकों का सब इजहार बयान लेने का विधान है । लेकिन कोई यह कह देता कि मैंने देवदूत को गोली मारी है खुद देखा है तो मुझे कुछ और कहना नहीं होता ।

मे०—हाँ देखा है भुईंफोड़ ने । लोग उसे पागल कह रहे हैं सही लेकिन मेरे सामने जब उसने इजहार दिया तब मैंने गौर से देखा उसने होश हवास मे ठीक बाते कही हैं । कहीं गोलमाल नहीं है ।

पेशकार फकीरीराम यह सब कलम बन्द कर रहे थे । मकरन्दसिंह द्वार पास खड़ा आँसू पोछ रहा था । दूलमसिंह खुद खड़े तेजी से साँस खीच रहे थे । इसी समय एक पहरेवाले ने सामने सलाम करके कहा—"पुलीस हाजिर है सरकार ।"

सुनते ही मेजिस्ट्रेट साहब उठ कर बाहर गये । वहाँ देखा तो एक सब इन्सपेक्टर अपने पाँच कांस्टेबलों सहित लैस खड़े हैं । फिर मौके पर लौट कर बड़े तपाक से मकरन्द सिंह को बोले—अच्छा देखो जी ! अब मैं तुम्हारे मालिक को गिरफ्तार करके ले जाऊँगा । यहाँ का सब सामान तुम्हारे जिम्मे रहेगा । मैं तुमको पहचानता हूँ । तुम इनके बहुत पुराने विश्वासी आदमी हो । खबरदारी से रहो यह कोठी तुम्हारे जिम्मे रहती है । कोई चीज खोवेगी तो उसके जिम्मेदार तुम होगे ।"

इतनी देर पर दूलमसिंहकी सूखी आँखों मे आँसू छलछलाने लगा । इतने दिनों तक जिनसे मिताई रही उन्हीं मेजिस्ट्रेट के

सामने असामी बन कर खड़ा होना और आँसू बहाना पड़ेगा। सकपकाये हुए मनमें कुछ सोच रहे थे। बोले—"परवानगी हो तो एक बार माता पिता का दरशन कर आऊँ। बगल वाली हवेली में अलग वह रहते हैं। मैं तुरंत उनसे मिल कर लौट आऊँगा।"

मे०—ऐसा हरगिज नहीं हो सकता। जो साफ न सही किसी तरह अपना कसूर कबूल कर लेता है उसको पुलीस की हिरासत में ही रखने का कानून है। तुम अब मेरे सामने से कहीं नहीं जा सकते। लेकिन इतना हो सकता है कि जो कुछ माँ बाप से कहना है वह एक कागज पर लिख कर किसी नौकर से भेज सकते हो।

दू०—ऐसी बेइज्जती से मैं कुछ लिखना भी नहीं पसन्द करता। मैं कुछ नहीं लिखूँगा। मेरे नसीब में जो होना हो सो होवे भगवान दुनिया के मालिक हैं। आपके सामने मैं कहता हूँ। मैं बेगुनाह हूँ। जब मैं उनका दर्शन नहीं कर सकता तब काग़ज पर लिख कर देना और उन्हे रुलाना मैं नहीं चाहता न ऐसी मिहरबानी का ही मैं अभिलाषी हूँ। जो कुछ लिखना कहना होगा वह हमारा यही मकरन्द कर लेगा।

पाँच सिपाही नये पहुँचे और एक कोचबक्स पर बैठा देवदास के साथ आया था। जो उस पर निगरानी रखे था। देवदास नहीं जानता था कि किस कसूर में वह निगरानी में है। अब शहर में मेजिस्ट्रेट को जाने के लिये बग्घी कहाँ मिले। उसी गाड़ी पर जिस पर आये थे जाना और देवदास को कोचवान बनना

हुआ देवदास को इससे मन में नाराजी हुई लेकिन उसने चुपचाप भीतर सह लिया। मुँह से कुछ बे अदबी नहीं दिखलायी।

सब लोग सवार होकर शहर मे पहुँचे। मेजिस्ट्रेट के हुक्म से दरोगा साहब दूलमसिंह को हवालात ले गये। दरोगा के हुक्म से वहाँ का काँजोहौस खोलकर ही हवालात बनाया गया।

विश्वासी मकरन्द सिंह ने एक कागज पर कुछ लिखकर मालिक की माताजी के पास भिजवा दिया। माता जी उसे पढ़ कर रो उठीं। कागज आँचल मे लिये हुए रोती हुई स्वामी के पास गयीं। उनके मालिक काच का बरतन बहुत पसंद करते थे। उस समय वह काँच का एक फिंगरबाल साफ कर रहे थे। पीठ की ओर से स्त्री रोकर बोली—"हम लोगों का तो आज सब चौपट होगया।"

मालिक ने कहा—"क्या हुआ! दूलम मर गया क्या ?"

"वैसा होता तब तो अच्छा था। यह देखो क्या लिखा है!"

यही कह कर घर वाली ने मकरन्द का लिखा कागज दे दिया। पढ़ कर मालिक काँप उठे। बरतन छोड़ कर माथे पर हाथ रखा। फिर उठ कर बाहर निकल गये।

चौथा बयान।

दूलमसिंह को असामी होकर हवालात मे पड़े महीना पूरा हो गया। मुकद्दमा बड़ा संगीन है मकान में आग लगाने और खून करने के इरादे से बन्दूक चलाने का अभियोग है। आग लगने से दीवार फट पड़ने के कारण दो खून और दो सख्त घायल हुए हैं। आग नही लगती तो यह चार जान मारी घटना नहीं होती इस कारण यह सब अपराध दूलम पर लगे हैं। दूलम धनी मानी आदमी हैं। ऐसे धनवान असामी का प्लीड करने से जो धन मिलेगा उसकी आशा में उतावले हुए वकील मुख्तार भी खूब जुट गये। बड़े बड़े वकील दूलमसिंह का जुल्म अपने वाक्जाल से ढाक कर उन्हें इजलास पर से छुडा लाने को कमर कस कर तैयार हुए। सरकारी वकील भी अपने तीन सहायको के साथ इजलास पर खड़े हुए। पाँच सप्ताह के बाद जो पेशी हुई तो मुकद्दमा सुनने के वास्ते लोगो की ऐसी बाढ़ उमड़ी कि इज-लास पर खड़े होने को जगह नही। पुलीस को बड़ी ही कठिनता से जनता मे शान्ति रखने का उद्योग करना पड़ा।

देवदूत के बगीचे मे जिन लोगो ने तहकीकाती मेजिस्ट्रेट के सामने बयान दिया था वह सब खास गवाह होकर हाजिर हुए। इस लम्बी मुहलत मे पुलीस के पॉच और गवाह तैयार हो गये जो कुछ लोगों से उन्होने असलियत मामले की सुनी है वही सब उनके बयान मे आवेगा। अदालत से उनको हाजिर रहने

का हुक्म मिल चुका है। देवदास, पनारू, भुइंफोड़ और दरपी इन चारों ने तहकीकात के समय जो बयान किया था वही इस इजलास पर भी दोहराया। असामी के वकील और सरकारी वकील जिरह करने उठे लेकिन हाकिम ने खुद ही प्रधान गवाह भुंइफोड़ से जिरह कीः—"जब तुमने देखा कि बन्दूक के फैर पर तुम्हारे मालिक बेहोश हो गये हैं तब तुमने अपनी मालकिन से यह बात काहे नहीं कही ?"

भुइंफोड़ ने जवाब दिया—"सरकार उस घड़ी आफत पर आफत आ गयी। एक तो अगलही, ऊपर से बन्दूक का फैर और सबसे आफत यह कि मालिक मुर्दा से धरती पर पड़े देख कर मेरे तो हवास नहीं रहे। मैं करता क्या ?"

हाकिम ने हँस कर कहा—"तो इस तरह बात बात पर जिसका हवास हवा हो जाता है उसकी गवाही पर कानून से चलने वाले कैसे चलने को मजबूर हो सकते हैं।"

सरकारी वकील ने खड़े होकर नरमी से कहा 'बात यों है कि कुदरतन बेचारे भुइंफोड़ की अकल कम हुई है। इसी से लोगों में वह पागल मशहूर भी है। लेकिन डाक्टरी जाँच से मालूम हुआ है कि वह उन्मादी प्रलाप बकने वाला पागल नहीं है। और यही भुइंफोड़ हमलोगों का प्रधान गवाह है। और ऐसे सङ्गीन मामले में चश्मदीद गवाह की सब से पहले जरूरत होती है। कागज़ जलाकर पयाल में आग लगाना और देवदूत को गोली मारना यह दोनो कसूर करते भुइंफोड़ ने अपनी आँखों

देखा है। वह छोटी बुद्धि का लड़का बदहवास हो रहा था इस वास्ते हुजूर उसकी बात पर यकीन नहीं लाते इससे मुकद्मा खफीफ हो जायगा।

हा०—तो आपही जो मुकद्मा हलका हो जाय तो इसके वास्ते हम क्या करेंगे। जबतक पूरी गवाही शनाख्त की न हो तबतक हम असामी को गुनहगार कैसे मान सकते हैं?

इस तर्क पर वकील साहब को चुप रह जाना पड़ा। उसके बाद और तीन आदमियों की गवाही हुई। उनके बयान सुनकर भी हाकिम हँस पड़े। इससे असामी की ओर वालों को कुछ भरोसा हुआ?

हाकिम ने कहा—"एक भला आदमी किसी से भेंट करने जाता है। चाहे वह जिस रास्ते से जाय। दो तीन आदमियों से रास्ते में मुलाकात हुई। एक स्त्री का बस्ता लदवा दिया। इसी बयान पर एक भलेमानस रईस को अगर फौजदारी असामी करार दे दिया जाय तो लोगों का रास्ता चलना कठिन हो जायगा। मैं देखता हूँ असामी की ओर अच्छे वकील नहीं हैं। अगर इस ओर अच्छा वैरिस्टर हो तो असामी का दोष खारिज हो सकता है।

इसके बाद ही मुकद्मा तीन हफ्ते के लिये मुलतवी करके तारीख पड़ी। असामी हवालात गया। गवाह भी अलग अलग हाजत में रखे गये। हाकिम ने कहा कि झूठी गवाही देने के बारे में उनकी बाद को जरूरत पड़ेगी।

दोनो ओर के वकीलों की हाकिम के इस हुक्म से त्योरियाँ चढ़ गयीं। सुनने देखनेवाली जनता मे मामला मुकदमे का भार पेंच समझने वाले जो लोग थे उनको भी बड़ा आश्चर्य्य हुआ। जो लोग अदालत मे बराबर आवाजाही करते रहते हैं। जिनको संसार में इसी कचहरी का ही धन्दा है वह लोग शान्ति सुख अनुभव करने लगे। उन्होने हाकिम के हुक्म को कानून के बाहर नहीं बतलाया। जमानतपर असामी को छोड़नेके वास्तै दरख्वास्त पड़ी वह नामंजूर हो गयी।

असामी और गवाह हवालात मे जा चुके। वकील मुख्तारों ने अपना रास्ता लिया। हाकिम साहब और छोटे मोटे मुकदमे सुनकर सन्ध्या के करीब इजलास बरख्वास्त करके उठ गये। अमला साहबान भी बतकूचन करते हुए नथी पत्र उलटते उलटते उस दिन का काम खतम करके विदा हो गये।

सूरज डूबने के बाद दूलमसिंह की हवेली मे एक और नया नाटक हुआ। पाँच आदमी अपना मुँह दाढ़ी तक कपड़े से ढाँक बाँध कर छिपाये हुए हवेली के सदर द्वार के सामने खड़े हुए देखे गये। एक स्त्री पालकी से उतर कर भीतर जाने लगी। वह लाल रूमाल से मुँह पोंछ रही थी। उन मुँह वन्दो को सामने देखकर सहम गयी। उनमें से एक ने दूसरे साथी से कान मे कहा—यही हैं यही। इन्हीं की कोख में दूलमसिंह जन्मे हैं।" दूसरे ने कहा—"तब तो बड़ी आफत हुई। जान पड़ता है रोती रही हैं। बेटे का कसूर समझे बिना माता का चेहरा इतना नहीं बिगड़ता। मजबूत

गवाही न हो तब भी अगर माता अपने बेटे के कसूर पर पूरा यकीन करे तो सफाई जुटाना बड़ा कठिन हो जाता है।"

उन अटकलबाजों की पिछली बात सच्ची न भी उतरे लेकिन वह दूलमसिंह की माँ हैं यह बिलकुल सच्च है। वह लोग रास्ता छोड़कर हट गये। स्त्री हवेली के भीतर चली गयीं। उन अटकल बाजो की बातें सुनकर स्त्री को बड़ा विचलित भाव आ गया। उन्होंने मनमें यह मजबूत कर लिया कि अब बेटे के मोह मे रोवेंगी नहीं। ऐसा भाव उनका नहीं रहेगा कि लोग चेहरा देख कर उनकी करुणा समझ जायँ। वह लाल रूमाल उनका सहारा हो गया। आँसू मुँह पोंछ कर उन्होंने मन को सम्हालना चाहा लेकिन बाह्य भाव में सफलता कुछ जरूर हुई भीतर के करुणा समुद्र की लहरें नहीं घटीं। चेहरे पर की लाल आभा भी दूर नहीं हुई। भीतर जाकर किसी की राह देखने को खड़ी हुईं।

इसी समय एक लौंडी सामने आयी। स्त्री ने हाथ का इशारा करके उससे कुछ पूछा उसने भी सिर हिलाकर हाँ करके जबाव दिया। लौंडी के साथ ही भीतर को बढ़ीं। मन में सन्देह दबाये रहीं। घर में भी चारो ओर अन्धेरा रहा। एक ओर चिरागदानी पर चिराग़ टिमटिमा रहा था। उसकी रोशनी से नही मालूम हुआ कि घर में कोई है या नहीं।

चारों ओर अच्छी तरह देखने के बाद जब चकाचौंध मिटी स्त्री को मालूम हुआ कि भीतर चौको पर एक सज्जन बैठे हैं। उनकी ओर आगे बढ़ीं तो मालूम हुआ कि जिनको ढूंढ़ती रही

वही देवता हैं। हम भी वतला देते हैं दूलमसिंह के पिता सम्मान सिंह वही थे।

पतिदेव ने मुँह से कुछ न कह कर इशारे से गृहिणीको चौकी पर बैठने के लिये कहा। पत्नी प्यारी देवी वहाँ बैठी लेकिन थोडी ही देर पहले मनमें जो सङ्कल्प उन्होंने किया था उसपर रह नहीं सकीं। बैठते ही दोनों हाथों से मुँह ढाँककर रो उठीं। सन्मान सिंह ने अच्छी तरह उन्हें जमाने का फेर और नीच ऊँच समझा कर शान्त किया। लौंडी वहाँ पहुँचा कर ही विदा हो चुकी थी।

पतिदेव ने कहा—"तुम्हीं तो सब चौपट कर रही हो देवी। जिस पर आफत आती है पहले उसी को धीरज धरना होता है। यह हम तुम दोनों को मालूम है कि हमारा दूलम ऐसा पातक नहीं कर सकता। फिर वकील मुख्तार खड़े कर दिये हैं। वह कह रहे हैं कि अगर यह हाकिम मामले को न समझ कर कुछ अनर्थ भी कर देंगे तो अपील मे दूलम को छुड़ा ही लावेंगे। तव तुम—"

वीच ही में प्यारी बोल उठीं—"तुम्हारी वात से मुझे वड़ा डर लगता है। पहले तो तुम बेटे की बात में पड़ते ही नही थे। उसके नसीव मे जो है भोगे। जैसा करनी करेगा वैसा फल पावेगा यही कहते रहे। अव वकील मुख्तारो की चिकनी चुपड़ी पर भरोसा करके वैठे हो। लेकिन हम तो मतारी हैं। हमारा हिया तो नहीं मानता। न हम से वेफिकर होते वनता है। तुम पहले हमको यही वतलाओ कि लड़के की ओर से एतना लापरवा

काहे हो ? जब मकरन्द का पुर्जा तुमको दिया तब मेरा करेजा फटा जाता था उस घड़ी तुमने जो बात कही वह तीर की तरह हमको लगी रही वह तीर अभी निकला नहीं है। भला ई तो कहो दूलम तुम्हारा बैरी है ? उहे तो एकठो घर का चिराग है उसका मुँह देख कर तुमको तनिक दया भी नहीं आती।

स० सिं०—तुम तो नासमझी की बात करती हो। बेटे पर दया किसको नहीं होगी। जैसे तुमको है वैसे ही हमको भी उस पर ममता है लेकिन दूलम कैसा बेकहा है तुमसे छिपा नहीं है तिस पर भी हम उसको प्यार करते रहे हैं दया मेरी उस पर रही है। स्नेह है हमारा। सब तरह से हमने पाला है। अब वह कितना बेकहा होगया है। हमारे देश मे लड़के की शादी माँ बाप की पसन्द से होती है। बरस दिन से हम कितना ढूँढ़ रहे हैं। इतने में उसने अपने मन से—

बीच में प्यारी बोल उठी—"अरे वह सब इस घड़ी रहने दो इन बातो को यहाँ छेड़ने का मौका नहीं है। बेचारा लड़का हवालात में सड़ रहा है और तुम इस घड़ी उसके पुराने दोष और कसूर लेकर उलहना देने लगे। तुम्हारे ऐसे समझदार को यह मौका बेटे के साथ दुश्मनी बतलाने का है ? बाप होकर ऐसी नासमझी की बात करते हो तुम्हे बैर भॅजाने का यही अवसर है ?

स० सिं०—आखिर हो तो वही स्त्री जाति न ! अरे बेटे से इस मौके पर हम बैर भॅजाते हैं ? हम आम कहते हैं तुम इमली समझती हो। अरे जब हम पात्री खोज रहे हैं तब अपने मन से

एकठो सुन्दरी देखके उसी पर रीझ गये। हम भी देख आये हैं सुन्दरी है वह लेकिन गुण अवगुण जाने विना खाली सुन्दरता मे ही जिन्दगी भर की गृहस्थी का सुख सुहाग नहीं न धरा है। उसका बाप तो हमारा जानी दुश्मन है।

"कैसी बावलों की बात करते हो ? शादी करने का मन है कुछ शादी कर तो नहीं लिया अगर उस कन्या का बाप तुम्हारा बैरी है तो इस वास्ते बेटा का बलिदान कर दोगे। यही अकिल है तुम्हारी ! यही तुम्हारा बेटे के साथ धर्म्म है ?"

स० सिंह—नहीं ! यहाँ धर्म्म की बात नहीं है। वैसा होता तब तो इसमें मैं हाथ ही नहीं डालता। और इसमें नहीं पड़ने की ठान चुका था लेकिन तुम्हारा रोना धोना तो गजब करता है। इसमें आना ही पड़ा। मुकदमा बनाया हुआ है। इसमें बड़े बड़े चक्र हैं यह हम समझ गये हैं। लेकिन अदालत में झूठका सच और सच का झूठ मशहूर है। वकील लोग बाल की खाल निकाल कर जिसका चाहें हाकिम से स्याह सफेद करा सकते हैं। ऐसे ही चक्र में पड़कर हमारा लड़का भी सजा पा जाय तो वंश का कलंक ही नहीं होगा। नाम तक डूब जायगा। तुम ही मरने लगोगी यही सब सोच विचार कर मैं पैरवी करने आया हूं। कुछ डर की बात नहीं है। सफाई जितनी चाहिये सब मैं जुटा दूँगा कचहरी में मैं गया नहीं लेकिन वकील के मुँह से सुना है कि हाकिम का रुख अच्छा है। बढ़िया बेरिस्टर होने से मुकदमा खारिज हो जायगा।

"अरे! ऐसा हाकिम बोले हैं तब तो बेचारे देवता हैं। अच्छत चन्दन उनके मुँह पड़े। हमारा बेटा ऐसा नहीं। छुटपन में भी कोई के साथ मारामारी नहीं किया कभी।" "अरे यह सब क्या हमको बतलाना होगा, हम क्या पराये हैं बात तो ठीक ही है लेकिन हमारा कहना नहीं मान कर हमारे जिन्दगी भर के वैरी की बेटी से ब्याह करने चलना और हमारे मना करने पर उलटे गुर्राना इससे हमारे मन में चोट नहीं लगती दुःख हमको नहीं होता?"

प्या०—ई के कहता है कि दुःख नहीं होता? ऐसा करने से बड़ी चोट आती है लेकिन इस घड़ी जो आफत आयी है उसके ऐसा दुःख और चोट दुनिया में दूसरी नहीं हो सकती।

स० सिं०—तुम तो वही अनारी नारी जाति न हो? तुम्हें अच्छा भी समझा बुझा नहीं सकते। हम भला किस खेत की मूली हैं। अरे कह तो दिया भाई कि चुप मार कर हम बैठे नहीं हैं न बैठे रहेंगे। वकील मुख्तार कर दिया है बेरिस्टर ला देते हैं तदबीर करते हैं इस पर भी तकदीर के हाथ सब है।

प्या०—और कुछ सुना है तुमने?

स० सिं०—अब और सुनना क्या?

प्या०—अरे जिसको बेटवा ब्याह करे पर उतारू है उसके बाप को भी इसकी कुछ खबर नहीं है बिटिया तार खबर भेजती है अपनी ओर से उसका कोई नाते गोते का चाचा यहाँ का नामी वकील है उसीके पास तार आया है।

स० सिं०—उस तार में लिखा क्या है?

प्या०—तार मोको देखे को मिला है थोड़े। जो आदमी तार देख आया यही कहता है कि बलिस्टर के वास्ते जो खर्च पड़ेगा बिटिया बाप से छिपा कर अपने जेब से देगी।

अब तो सन्मान सिंह के मिज़ाज का पारा बहुत ऊँचे चढ़ गया। बोले—"वाहरे! खर्च देने और लेने वाले! किस भड़वे के पास हम खर्च माँगने जाते हैं दूलम का बाप कोई राह चलता मंगन तो नहीं है। सात लाख की जिसको आमदनी है उसके वैरी की बेटी बेरिस्टर का खर्च देगी और दूलम का बाप अपनी इज्ज़त हुर्मत सब खोकर यह भी ले लेगा यही कहना चाहती हो न तुम!

प्या०—नहीं यह बात कहने मैं नहीं आयी हूँ। भगवान करे तुम करोड़पती हो। तुम्हारी धन दौलत से लाखों गरीब पलें। उससे तो हमको भी प्रसन्न होगी। मैं ऐसी हलकी बात नहीं चाहती कि तुम्हारे बेटे के मुकदमे में तुम्हारे दुश्मन की दुलारी खर्च बरच दे। हमारे कहेका मतलब इतना ही कि स्त्री जाति का प्रेम कहाँ तक उमड़ता है उस पर विचार करो।

स० सिं०—वह सब प्रेम हम बहुत देख चुके हैं दूलम की माँ! स्त्री जाति का प्रेम हमारे वास्ते अब कोई नयी चीज़ नहीं रही। बापरे बाप! जो लड़की उन्नीस बरस की हो चुकी उसके बाप की करनी से कोई उससे शादी करना नहीं चाहता यह बात हमारे मन में हरगिज़ नहीं बैठती। स्त्री रत्नं दुष्कुलादपि। कोढ़ी की बेटी भी लोग लेते हैं तब यहाँ बाप के दोष से बेटी का ब्याह

नहीं होता यह बात सन्मानसिंह मानलें ऐसा भरोसा मत करना। जरूर लड़की मे भी कुछ काला है। देखो यह मौका हमारे तुम्हारे बहस का नहीं है। पहला काम है हमारा अपने दूलम को छुड़ा लाना। पीछे उस लड़की की बात तुमसे कहेंगे।"

इतना सुनकर प्यारी तो चुप हो रही। लेकिन मन नहीं माना। न उनको प्रबोध ही आया। दूलम के मुकदमें में बैरिस्टर खड़े होंगे। खरच की परवा नहीं है। सब तरह से तैयार हैं। किसी तरह कुछ उठा नहीं रखेंगे यह सब सुन कर प्यारी के आँसू उस घड़ी तो सूख गये लेकिन जब तक मामले का निबटेरा नहीं होवे तब तक स्त्री पुरुष दोनों यहीं सहर में रह कर दौरा की अदालत में पैरवी करते रहेगे यही ठीक हुआ।

इधर दूलम सिंह हवालात में पड़े हैं। कोई उनसे भेट नहीं कर सकता। इतना कड़ा पहरा है कि आज तक कोई उनके यहाँ किसी तरह भी मिलने के लिये नहीं पहुँच सका।

यह सब होने पर भी दूलम के मन मे दुःख नहीं वह समझते हैं कि उनका इसमे कोई कसूर नहीं है और बेकसूर उनको भगवान दण्ड नहीं देगा। जो लोग भ्रम में पड़कर उन्हे कसूरवार हत्यारा समझ रहे हैं उनका भ्रम दूर हो जायगा। अङ्गरेजी राज मे ऐसा प्रबन्ध नहीं है कि कोई बेगुनाह नाहक मारा जाय।

वस्तुतः बात चाहे जो हो यह बात बहुत सही है कि अपने सुख दुःख का विधाता खुद मनुष्य ही है। किसी कवि ने ठीक कहा है.—

झो सुख को दुख देत है देत करम झकझोर।
उरझै सुरझै आप ही ध्वजा पवन के जोर॥

यह खूब पक्का और सच्चा सिद्धान्त है कि मनुष्य अपनी ही भावना से दुःख और सुख की सृष्टि करता रहता है। किसी बेगुनाह को दण्ड नहीं हो सकता या गुनहगार ही जरूर दण्ड पावेगा यह गुण भारत सरकार के वर्त्तमान शासन में है या नहीं इसकी विवेचना हम यहाँ करना नही चाहते लेकिन दूलम सिंह बेचारे के मन में जो भावना थी उसीसे उनको सङ्कट के समय सुख मिला।

हवालात के असामी को चिट्ठी लिखने के लिये कागज कलम दावात या समय की सुविधा देना हवालात के अधिकारी की इच्छा पर निर्भर है वह पात्र विवेचना करके सुभीता दे या न दे यह उसके अधिकार में है। दूलम को वह सुविधा हो गयी। उन्होंने चिट्ठी लिखी भी लेकिन वह ठीक समय पाने वाले के हाथ में नहीं पहुँचायी गयी।

जिसके नाम उन्होंने चिट्ठी लिखी थी उसको यहाँ प्रकट कर दिया जाता है। पश्चिमी देश के युवक युवती जैसे परस्पर चिट्ठी लिखते पढ़ते हैं। व्याह के पहले जैसे दोनो में मिलाप तथा परस्पर प्रेम की जॉंच का मौका रहता है। हमारे देश मे वैसी सुविधा वर कन्या को नहीं होती। यहाँ मा बाप वर कन्या का अपने मन के अनुसार निर्वाचन करते हैं। यह रीति चाहे विलायत वालो को ठीक न जान पड़े लेकिन रूप और सुन्दरता के आवेश

में आकर वर को कन्या के गुण दोष विचारने का समय नहीं रहता। जो सम्बन्ध जिन्दगी भर के लिये है जिस पर गृहस्थ जीवन का सुख दुःख निर्भर है उसमें कितने विचार और गम्भीरता से भविष्य विचार की जरूरत है यह नवयुवक और नवयुवती जो क्षणिक आवेग और वाह्य सुख सौन्दर्य की चाह में हिप्नोटाइज्ड होकर अर्थ का अनर्थ करके अपना भविष्य बिगाड़ सकते हैं उनको इसका विवेक हुए बिना गृहस्थी सुख की नहीं हो सकती। फिर भी जो विलायती ढङ्ग की शिक्षा दीक्षा से भरे पूरे हैं उनको इस देश की यह रीति और वरकन्या पर माता पिता का शासन दाल भात में मूसलचन्द सा जँचता है। लेकिन इसका परिणाम कितना सुखदायी है:यह बहुत पीछे अनुभव होता है।

दूलम अङ्गरेजी ढङ्ग के इतने तरफ़दार कि पिता से छिपा कर अपने मन की पात्री मन में चुन चुके थे। पात्री भी पढ़ी लिखी थी। व्याह से पहले ही दोनों में सद्भाव हो चुका था। उसीके प्रसाद का फल है कि उन्होंने हवालात से उस भावी भार्य्या के नाम एक चिट्ठी लिखी थी। लेकिन बिना बन्द किये हवालात के रक्षक के हाथ उन्होंने दी।

कारारक्षक ने नियमानुसार मेजिस्ट्रेट के सामने पेश कर दिया। दूलम की उस भावी पत्नी का नाम स्वयम्बरा था। पिता की राय न होने पर भी दूलम की माता को वह पतोहू नापसन्द नहीं थी।

जब स्वयम्बरा देवी को पता लगा कि भावी पतिदेव की माता शहर में हैं,तब वह स्वयम् बग्घी पर सवार होकर उनके

यहाँ पहुँची। भावी सास पतोहू दोनों ने मिलकर दूलमसिंह को देखने की ठहरायी। स्वयम्बरा के आग्रह से ही प्यारी देवी उनके साथ गयी थीं। जब दोनों हवालात के द्वार पर पहुँची। पहरेवाले संत्री ने उन लोगों को अभिवादन करके आगमन का कारण पूछा—प्यारी बोली—"इस जगह जो बन्दी होकर पड़ा है वह हमारा लड़का है उसको मैं एक बार देखने के लिये आयी हूँ। यह मेरी भावी पतोहू है।

संत्री ने अदब से प्रणाम करके कहा—"माताजी! ऐसा हुकुम नहीं है। हवालात के बन्दी से कोई भेंट नहीं कर सकता। सरकार का बड़ा कड़ा हुकुम है।"

आँसू पोंछ कर प्यारीदेवी बोलीं—"माता को अपने बेटे से भेंट नहीं करने देने का हुकुम कौन दिया है संत्री?"

"यह मजिस्ट्रेट साहब का हुक्म है माजी!"

प्या०—तो मजिट्रेट साहब से हुक्म ले लो। हम जरा अपने बेटे को देख लें फिर चली जाऊँ।

"ना माजी! ऐसा हुकुम मजिस्ट्रेट साहब नहीं दे सकते। हम पन्द्रह बरस से काम करते हैं ऐसा कभी नहीं हुआ।"

अब आँसू पोंछती हुई दोनों वहाँ से लौटती हुईं। प्यारी ने कहा—"चलो हमारा दूलम जब बेगुनाह होकर घर आवेगा तभी हमलोगों की लालसा पूजेगी।"

आँसू पोंछ कर दोनों फिर पालकी में बैठीं और अपने स्थान को चली गयीं।

पाँचवाँ बयान

देवदूत घायल होकर अपने बगीचे में पड़े हैं सिविलसर्जन लोरन साहब रोज उनको देखने जाते हैं उचित रूप से जखम धोया जाता और ड्रेस होता है लेकिन सूखता नहीं। बाद को एक दिन अन्तर देकर आने लगे। देवदूत की छोटी लड़की को माता निकली थी वह भी आराम नहीं हुई। उसके लिये भी डाक्टर की आवश्यकता पड़ी।

एक दिन जब डाक्टर पहुँचे रोगी के पलङ्ग के पास उनकी स्त्री दयावती बैठी थी। रोगी की छाती के पास स्टेलिथ कोप लगाकर देखते हुए डाक्टर नजर नीचे करके कान से स्वास की आवाज सुन समझ रहे थे। परिणाम विचार कर उनका चेहरा गम्भीर हो आया। आपही आप बकने लगे—"यह छर्रे बड़ी बलाके होते हैं। मैं कई तो निकाल चुका लेकिन अभी कई भीतर हैं। कहीं मालूम नहीं होता। जहाँ तकलीफ़ मालूम हो वहाँ बतलाने से फिर मैं अपरेशन करके निकालूँगा।"

डाक्टर की बात सुनकर दयावती सिहर उठी। देवदूत के भी रोयें खड़े हो गये। डाक्टर ने अपना चश्मा उतार कर सफेद रूमाल से अच्छी तरह पोंछा। उस समय बार बार द्वार की ओर डाक्टर देख रहे थे। किसको देखते थे यह किसी की समझ मे नहीं आया। रोगी देखने और बात करने में भी डाक्टर इस तरह ताकते थे जैसे चोर चोरी करने से पहले घरकी ओर

चौकन्ना होकर देखता है। बात यों थी कि डाक्टर पहले ही भुइं-फोड़ को पकड़ लाने वाले को पचास रुपया इनाम देने की मुनादी कर चुके थे। वह जानते थे कि भुईफोड़ ही के बयान से दूलम-सिंह हवालात में बन्द हुए हैं। इस कारण उसे पागल साबित करके देवदूत के मुक़दमें को बिगाड़ देना ही डाक्टर का असली मतलब था।

इसी समय बाहर बड़ा शोरगुल सुनाई दिया। देवदूत भी तकिये से उचक कर द्वार की ओर देखने लगे। दयावती का ध्यान भी उसी ओर गया एक आदमी दौड़ता हुआ डाक्टर के पास पहुँचकर बोला—"भुइंफोड़ तो पकड़ गया है साहब! बड़ा भुइं फोड़ है अदालत में गवाही देकर ही ऐसा गायब हुआ कि कहीं पता नहीं चलता था उसका।

साहब खुशी के मारे फूल गये बोले—"कहाँ मिला है बद-माश! कैसे पकड़ पाये हो उस पाजी को लाओ यहाँ। अभी सब उसका पागलपना हम घुसेड़ देते हैं।"

यही कहते हुए उन्होंने बड़ी तेजी से अपना टोप उठाकर कपार पर रखा और दरवाजा पार करके बाहर दौड़ पड़े। वहाँ कई किसान उनके पीछे लगे—"कहाँ चले साहब इस तरह?"

साहब बोले—"उस पागल के वास्ते! किधर है शैतान कहाँ है?"

एक ने तुरत जवाब दिया। "वह तो अस्पताल में गया

साहब ! यहाँ किसी तरह वह नहीं लाया जा सका लाचार। अस्पताल ही लोग ले गये हैं।"

अब डाक्टर को तसल्ली हुई कि जब अस्पताल में पहुँच गया तब भाग नहीं सकेगा। उन्होंने पूछा—"कहाँ मिला है वह ! कैसे पकड़ा गया पाजी ?"

जिन लोगों ने पकड़ा था उनमें से एक ने आकर कहा— "वह बड़ा पाजी है साहब जङ्गल में छिपा था। आपका हुक्म पाने पर ही हम लोग उसकी तलाश में जी जान से लगे थे। बहुत खोज ढूँढ़ पर भी पता नहीं लगा। तब पहले तो समझा कि पचास रुपया हाथ नही लगेगा क्या लेकिन हम लोग निराश नहीं हुए। सुना था कि छुटपन से ही जङ्गल पहाड़ में सियार की तरह माँद में रहने का उसको अभ्यास है। देखते देखते पहाड़ के नीचे एक माँद मिली। उसके दरवाजे पर पाँव का निशान देखकर हम लोगों ने ताड़ लिया कि उसी माँद में हैं। हम लोगों में जो सब से दुबला पतला था वही माँद मे घुस गया। उसी से मालूम हुआ कि भुइंफोड़ उसके भीतर है। उस आदमी ने पकड़कर बाहर खींचा। लेकिन वह तो अड़ गया। और जब बस नहीं चला तब उस आदमी का हाथ पकड़ कर ऐसा काटा कि माँस निकाल लिया। खून बहने लगा। देखिये इसके हाथ में पट्टी बँधी है। इसको तकलीफ़ तो बहुत हुई लेकिन भुइंफोड़ को इसने छोड़ा नहीं। किसी तरह खींचकर माँद के मुँह पर लाया। तब हम पाँच आदमियों ने मिलकर उसे जबरदस्ती खींचा तब बाहर निकला।

लेकिन फिर भी बदमाशी करने लगा। जिसको पाया उसी को काटा। तब पुलीस से हम लोगों ने मदद लिया। पुलीस ने उसको पकड़कर अस्पताल पहुँचाया। हम लोग आपके घर पर गये। जब सुना कि आप यहाँ है तब यहाँ खबर देने आये हैं।

डाक्टर उनकी बातें सुनते समय बार बार चश्मा उतार कर रूमाल से पोंछते थे। जब कुछ सोचते या बात करते तब इस तरह चश्मा उतार कर पोंछना उनका स्वभाव था।

अब बड़ी तेजी से डाक्टर अस्पताल की ओर चले। किसानो मे से एक ने कहा—"अब आप कहाँ जा रहे हैं?"

"मैं अस्पताल जाता हूँ।" सुन कर किसान ने कहा —"वहाँ तो किसी को जाने का हुक्म नहीं है। आप भी भीतर नहीं जाने पावेंगे बड़ा कड़ा पहरा है।"

डाक्टर साहब बिगड़ कर बोले "वाह पागल अस्पताल मे है। मैं हूँ डाक्टर कौन मुझे रोकेगा।"

"आपको संतरी रोकेगा साहब! आप भीतर जाने ही नहीं पावेंगे। हम सबको निकाल बाहर कर दिया बड़ा सख्त पहरा है। कोई नहीं जाने पाया।"

अब डाक्टर उधर न जाकर सरकारी वकील के घर की ओर लौटे। जो वकील उस रात के राजनारायण आदि के साथ गये थे उन्हीं डकारू लाल लीडर के घर जल्दी गये। जब डाक्टर वकील डकारूलाल के घर पहुँचे तब वह कपड़े बदल रहे थे। डाक्टर के सामने आकर बोले—"मैं समझ गया। डाक्टर! जिस मतलब

से आप आये हैं। आज सवेरे भुईफोड़ अस्पताल में रखा गया है। मेजिस्ट्रेट ने उससे किसी की भेट नहीं हो यह सख्त हुक्म दिया है। आप भेट नहीं कर सके इसी बात को कहने आये हैं।

डा०—हाँ साहब आपका समझना ठीक है ऐसा हुक्म देकर तो साहब ने मेरी बड़ी हतक की है। आप खुद यहाँ के वकीलों के सिरताज हैं। आपको खुद इसमें बहस करना चाहिये।

व०—नहीं डाक्टर इसमें आप भूलते हैं वह मेजिस्ट्रेट हैं उनको जिले का सब कुछ अधिकार है। आप नाहक भ्रम मे पड़े हैं।

डा०—आप कैसी बात करते हैं। उनको अधिकार सब कुछ है लेकिन रोगी को इलाज से वञ्चित उडवर्ड साहब कैसे कर सकते हैं।

अब वकील साहब ने कहा—"उनको जो अधिकार है उसका उपयोग वह जो काम आईन के अनुसार समझें उसको कर सकते हैं। कब रोगी को इलाज दरकार है यह वह अच्छी तरह समझते हैं। यह सब समझ बूझ कर अनुचित समय में डाक्टर का प्रवेश रोक देने का अधिकार उनको जरूर है बात यह कि आज रविवार है तौ भी उसका इजहार लेते समय आपको हाजिर रहने का हुक्म साहब ने आपके नाम जारी कर दिया है। मुझे यही आश्चर्य है कि समन आपको क्यों नहीं मिला। शायद अस्पताल मे ही मिले।

"तब मैं अस्पताल जाता हूँ।" कह कर तोरन साहब वहाँ से

भी बड़ी तेजी से लौट पड़े। अस्पताल के द्वार पर ही मेजिस्ट्रेट से भेट हुई। वहीं वरण्डे में मेजिस्ट्रेट चहल कदमी कर रहे थे।

डाक्टर को देखते ही मेजिस्ट्रेट ने कहा—ठीक मौके से आये हो डाक्टर!"

डा०—मैंने सुना कि फिर उसी पागल का इजहार होगा इसलिये आया हूँ। चलिये आप!

अब दोनों भुइंफोड़ के कमरे में गये। साथ में मेजिस्ट्रेट के पेशकार फकीरी राम थे। एक सिपाही भी था। भीतर देखा तो कमरा साफ है। दीवारों पर सफेदी चमक रही है। एक लोहे की खाट है उस पर तकिया, गद्दी, बिछौने की खूब सफेद चादर है लेकिन पागल ने चादर फाड़ फेंकी है। गद्दी भी नीचे डाल दी है। आप निखहरी खाट पर पड़ा है। आदमी की आहट पाकर उठा। और पहरे वाले को देखते ही जोर से चिल्ला कर खाट के नीचे छिपने चला।

मजिस्ट्रेट ने सिपाही को बाहर कर दिया। और भुईफोड़ से दुलार कर बोले—"अरे डरो मत बेटा! हम लोग तुमको मारने पकड़ने नहीं आये हैं। तुमको देवदूत के घर उस रात को जो हुआ था वह याद है या नहीं यही पूछने आये हैं।

भुईंफोड़ मेजिस्ट्रेट की ओर ताक कर हँसने लगा। और कुछ जवाब नहीं दिया मेजिस्ट्रेट ने बड़ी कोशिश की। बहुतेरा चाहा। घन्टा भर तक मगज मारा लेकिन भुईफोड़ के मुँह से बात नहीं निकाल सके।

मेजिस्ट्रेट ने दुलारा, धमकाया, नीच ऊँच सब करके देखा। दयावती का भी नाम लिया। जब किसी तरह कुछ काम नहीं बना तब बोले—"चलिये साहब सचमुच यह आदमी नहीं। जानवर है।" डाक्टर ने मुँह बना कर कहा—"जानवर तो हई है जब यह दुलम सिंह को खूनी कहता है तब यह पूरा जानवर तो हई है।"

मेजिस्ट्रेट साहब डाक्टर की बात उस मौके पर अनसुनी कर गये लेकिन साथ ही सब बाहर हुए और चलते समय बोले—"देखो डाक्टर! मैं आपकी रिपोर्ट देखना चाहता हूँ।"

"कुछ परवा नहीं अड़तालीस घन्टे के भीतर ही मैं अपनी रिपोर्ट तैयार करके आपके पास भेज दूँगा।" इतना कह कर डाक्टर उनसे विदा हो गये लेकिन चलते समय आप ही कहते गये—"मेरी रिपोर्ट से आपकी बत्तीसी तो खिल नहीं उठेगी यह मैं जानता हूँ।"

रिपोर्ट तो डाक्टर की तैयार थी और चाहते तो वहीं दाखिल कर देते। लेकिन जान बूझ कर देर कर रहे थे। वह समझते थे कि जितनी देर होगी उतना ही अच्छा होगा। देर होने से ही मुकदमा हलका हो जायगा। यह भी उन्होने सोचा कि असामी की ओर से बेरिस्टर मुकर्रर हो ही गया है उसको रिपोर्ट दिखा कर तो दाखिल करेंगे। एडवर्ड साहब बिलकुल बुद्धू हैं। जल्द-बाजी के ही अवतार हैं। मैं जहाँ तक बने देर करके रिपोर्ट दाखिल करूँगा।

छठा बयान।

सबेरे की छोटी हाजिरी के बाद डाक्टर साहब ने रिपोर्ट पतलून के जेब में रखी और एकान्त शान्त पगडंडी से चल कर चुपचाप सन्मानसिंह के दरवाजे पहुँच गये। उनके घर के वह फेमिली डाक्टर थे। भीतर घुस करके बैठक में गये और सन्मानसिंह ने सुनते ही अपने कमरे में बुला लिया वहीं प्यारीबाई भी उस समय मौजूद थीं।

सन्मान सिंह के अभिवादन और कुशल मङ्गल के पहले ही डाक्टर ने कहा—"देखिये साहब दूलमसिंह बिलकुल बेकसूर हैं। इस पर मेरा पूरा विश्वास है और सच पूछिये सो यही अपने मन की बात मैं आप से जाहिर करने यहाँ आया हूँ आज।"

दूलम की माता को इस बात से जो खुशी हुई वह कहने के लिये शब्द नहीं मिलते। पहली बात तो यह कि इस खुशी का अनुभव उस माता को ही हो सकता है सूपुत या कुपुत किसी सन्तान की माता है, है वह माता जगत जननी उसीका नाम है वह पुत्र के गुण अवगुण को देखने की सामर्थ्य नहीं रखती यह तो बेटे के मङ्गल की भूखी है। बेटे का कल्याण चाहती है बेटा मातृभक्त हो या माता की गर्दन मारे इसकी उसको कुछ परवा नहीं। धन्य हो भारत की मातायें। तुम्हारा मस्तक ससार में इसी मातृत्व गुण से ऊंचा है मा! हम नहीं जानते कि और देशों में भी ऐसी ही मातायें होती है या नहीं। लेकिन जिस देश

में सयाने होते ही, होश सम्हालते ही अन्ततोगत्वा कोर्ट सिप मे पड़ते ही माता पिता विसर जाते हैं जहाँ उन पर अनधिकार प्रवेश की दफ़ायें लगायी जा सकती हैं, वहाँ माता की ममता, माता का स्नेह कैसा होगा हम तो अनुमान ही कर सकते हैं। कभी पराये देश में जाने का या ऐसे गृहस्थों की सङ्गत का अनुभव हुआ होता तो हम अनुमान ही नहीं और पूँजी से कुछ कह सकते थे।

दूलमसिंह की माता ने झट आकर अपने ही हाथ से कुर्सी ला दी और डाक्टर को हाथ धरकर उस पर विठाती हुई कृतज्ञता की दृष्टि से गद्गद होकर देखने लगे।

सन्मानसिंह ने देर तक डाक्टर का मुँह ताक कर कहा—"सुना था आज भी एडवर्ड साहब उस पागल का इजहार लेने के वास्ते अस्पताल जाने वाले हैं आपके भी वहाँ रहने की बात रही। गये नहीं थे?"

इसका जवाब सुनने के लिये प्यारी भी कान खोले खड़ी थी डाक्टर ने मुसकरा कर कहा—"वह तो सिंह जी लड़क खेल था। पागल की बात और इजहार पर कोई भलामानस भरोसा थोड़े करता है। गया था जरूर लेकिन वही ढाख के तीन पात हाथ रहे। वह हँसता रह गया। एक बात भी उसने मुँह से नहीं निकली। उस पर तो अब एडवर्ड साहब भी चिढ़ गये हैं। मैं तो जब कहने—"

बात पूरी होने से पहले एक नौकर ने पहुँच कर खबर दी कि

बेरिस्टर साहब आये हैं। सम्मान सिंह जल्दी से उनकी खातिर करने उठे। प्यारी भी पर्दा हटाकर दूसरे कमरे में चली गयी।

जब बेरिस्टर सन्मानसिंह के साथ भीतर आये। उनसे डाक्टर साहब का परिचय करा दिया। दोनों मे हथमिलौअल हुई। फिर मुकदमे की बात छिड़ी। दूलम को छुड़ाने के लिये कौन कौन सी मजबूत वजहें हैं यह बेरिस्टर साहब सुनने के वास्ते उत्सुक थे। जब दूलम के पिता ने सब बातें बयान कीं। वैरिस्टर साहब ने भी अपना अनुभव कहा।

डाक्टर साहब के मनमें उनकी रिपोर्ट ही नाच रही थी। मौका पाकर उन्होंने जेब से रिपोर्ट का पुलिन्दा निकाल कर वैरिस्टर के सामने रखा। कहा—"देखिये साहब! मैंने देवदूत की देह से छर्रे निकाले हैं। उनके जख़म सब देखे हैं। बिना बुलाये गवाह लेकर जो आये और कह गये वह सब बयान भी हमने सुने हैं। आपको इसलिये यह रिपोर्ट दिखा रहा हूँ कि सफाई मे इससे कुछ सहायता हो तो लीजियेगा। अगर इसमें कुछ बढ़ाना घटाना हो तो वह भी फरमा दीजियेगा।"

बहुत खुश होकर वैरिस्टर ने कहा—"मैं आपको इसके लिये थैंक्स देता हूँ। यह मेरे लिये बहुत काम देगी।" डाक्टर और गम्भीर होकर बोले—"रिपोर्ट में घटाने बढ़ाने का जो मैंने इशारा किया इसका यह हरगिज मतलब नहीं है कि मैं सच्ची बात कुछ छिपाना या कुछ झूठा जोड़ने का मतलब रखता हूँ। मैं सत्य को बहुत पसन्द करता हूँ और झूठ से बहुत डरता हूँ। मुकदमे

में बहुधा झूठ की जय हुआ करता है लेकिन यह विडम्बना मात्र है। मेरा ही बेटा अगर कोई सङ्गीन क़सूर करके सेशन सुपुर्द हो जाय और उसमें उसको फाँसी होने वाली हो तौ भी मैं उसको बचाने के वास्ते झूठ नहीं बोलूँगा। आप इस रिपोर्ट को रखिये इतमीनान से देखियेगा। मैं कल्ह सवेरे आकर ले जाऊँगा।

वैरिस्टर ने कहा—"मैं दो घंटे मे ही इसे देख लूँगा। कल्ह सवेरे मैं जरूर इसे वापस कर दूँगा। जान पड़ता है दो आदमियों ने गोली चलायी है।"

मनमें न जाने क्या सोचकर डाक्टर बोले—"अटकल तो ऐसा ही है क्योंकि देवदूत की देह से मैंने जो छर्रे निकाले हैं वह दो तरह के हैं। कुछ तो छोटे छोटे नं० ८ के हैं और कुछ बड़े बड़े हैं।

सन्मान सिंह वैरिस्टर के मुँह की ओर देख रहे थे। जब वह चुप हुए तब डाक्टर ने फिर कहा—"एक काम अभी बाकी ही रह गया है। भुईंफोड़ का मन कैसा है किधर जा रहा है एक बार जाँचना है। मगर आज या कल्ह मे वह काम मैं खतम कर लूँगा। दूलमसिंह बेगुनाह हैं यह सब लोग जानते हैं। खैर मैं अब जाता हूँ। दो तीन दिन बाद मिलूँगा आपसे" यही कहकर डाक्टर चले गये और वैरिस्टर से सन्मान सिंह की ओर बातें होने लगीं।

सातवाँ बयान

स्वयम्वरा अपनी प्यारी देवी के साथ हवालात मे भेंट करने की अभिलाषा से जाकर जब निराश लौटी तब घर नहीं गयी। सन्मान सिंह के घर के पास ही गुजारे का स्थान भाड़े पर लेकर रहने लगी थी।

स्वयम्वरा की माँ को मरे बहुत दिन हो चुके थे। उसके आजा दामोदर शाह अपनी पोती को बड़ा प्यार करते थे उनके दुलार से स्वयम्बरा की माँ के न होने का दुःख बिलकुल भूल गया था। वह पोती भी पितामह को देवता समान श्रद्धा से देखती मानती थी। दामोदर जी ने पोती को खूब पढ़ाया लिखाया था।

स्वयम्वरा दादा से पूछे विना इस उन्नीस वर्ष की अवस्था में भी किसी काम मे आगे पाँव नहीं उठाती थी। दादा भी उसे नहीं देखें उससे बात नहीं करें कुछ सिखापन नही दें तो उन्हे बड़ी बेचैनी होती थी।

जिस समय डाक्टर बेरिस्टर से बातें करने लगे और प्यारी देवी परदे मे चली गयीं उस समय वहाँ से विना कुछ कहे सुने दूसरे द्वार से दामोदर शाह के डेरे पर पहुँची। वहाँ स्वयम्वरा अपने दादा से रो रो कर कुछ कह रही थी। प्यारी को देखते ही उनका गला धरकर रोने लगी।

प्यारी की करुणा बहुत उमड़ी। एक तो पुत्र शोक दूसरे

भावी पतोहू की बेकली देखकर उनकी आँखो से आँसू टपकने लगे। लेकिन आँचल से पोछ कर धीर धराने के लिये बोली—"घबराओ मत बेटी! चुप हो। इतना विलाप मत करो। संयोग आ रहा है। आज डाक्टर और बेरिस्टर की बातें मैं आड़ से सुनकर आयी हूँ। मुझे विश्वास है मेरा बेटा बहुत जल्दी इस आफत से छूट आवेगा।

सामने पराये पुरुष को देखकर प्यारी बाई सहम गयीं। वह ामोदर जी को पहचानती नहीं थीं। तौ भी जो बात कहने ायी हैं उसे इनके सामने कहना उचित है या नहीं इसीके ्चार में रुक गयीं।

चतुरा स्वयम्वरा ताड़कर बोली—"माता जी आप जो कहती सब कहिये चिन्ता मत कीजिये बाबा से मैं कोई बात छिपाती हीं हूँ।"

प्यारी बा०—नहीं मैं भी नहीं छिपाऊँगी मैं चाहती हूँ कि ैसा तुमने कहा था। आज ही इनको साथ लेकर उसे कर डालो प्रब देर नहीं करो।

बात जब समझ मे नहीं आयी तब दामोदर शाह जी ने हा—"क्या कहती हैं। मुझे साथ लेकर कहाँ जाना चाहती हैं? ेरी राय मे कुल कन्या को इस सङ्कट के समय इधर उधर जाना प्राना अच्छा नहीं इसमे आफ्त आ सकती है।

प्यारी बाई इस अवसर पर चुप रही लेकिन स्वयम्वरा ने वुद कहा—"ना बाबा! अगर यह नहीं आती तो मैं तुमसे वही

बात कहने वाली थी तुम्हारी राय लिये बिना मैं कोई काम कर नहीं सकती। लेकिन मैं आज तुम्हारे साथ ही फकीरी राम से मिलने चलूँगी। फकीरी की बहन से मेरा सखी भाव है। वह मोती रानी बड़ी दयावती है। उसके बहाने मैं फकीरी से कह-लाऊँगी कि एडवर्ड साहब बरखिलाफ कोई बात न करे। फकीरी एडवर्ड साहब का पेशकार ही नहीं दहना हाथ है। साहब उसको बहुत मानता है। एक और काम है जब वह पूरा हो जायगा तब तुमसे कहूँगी बाबा। इस घड़ी माफ़ करना होगा माता जी यही कहती हैं कि तुम हमको साथ लेकर फकीरी के यहाँ आज चलो।

सुनते ही दामोदर मूँड़ हिला हिलाकर कहने लगे—"अरे ऐसा काम हरगिज़ नहीं करना बिटिया उससे कोई काम नहीं होने का। वह नौकर की है साहब मालिक है। फिर हिन्दुस्तानी नौकर की बात हाकिम साहब कहाँ सुनता है। तुम इस फेर मे मत पड़ो।"

प्यारी बाई बोली—"यह बात अब हमारे मन में भी आती है। सचमुच एडवर्ड साहब ही इसमे मुद्दई है। देवदूत या उनकी स्त्री ने भी नालिश नही किया वह साहब खुद मुद्दई हो गया है। लेकिन वह एडवर्डवा हमारे दूलम का बड़ा दोस्त रहा है कई बार घर पर आकर खाना खा गया है। इस घड़ी न जाने क्यों सब दोस्ती मिताई भूल कर दुश्मन बना हुआ है। उसीसे मालिक बहुत डर रहे हैं। लेकिन यह कहती हैं एक और काम है। वह काम हमको भी नहीं बतलातीं। एक काम है कहती हैं इसीसे मैं

जाने की राय देती हूँ। अकेले जाना उचित नही इसीसे आपको साथ जाने के लिये मैंने कहा है।

आश्चर्यित भाव से दामोदर बोले—"फकीरी तो सरकारी अमला है। फिर दूलम सिंह से इस लड़की के साथ भावी व्याह की बात फकीरी जानता है यह उससे मिलने जायगी तो नतीजा उलटा होने का खतरा है।

स्वयम्वरा अपने भाव में मग्न थी। दादा की बात अच्छी तरह से न सुनकर गद्गद कंठ से बोली—"बाबा! हमारे पास कुछ खरचा नहीं है जिनको मैं जान से अधिक मानती हूँ। उनपर प्राण सङ्कट है उनको बचाने के लिये जान जाय तब भी मैं पीछे नहीं हटनेवाली हूँ। इसमें खर्च करने के वास्ते हमको रुपया दो बाबा।

दा०—कितना रुपया।

स्व०—सवा लाख रुपया दो तो ठीक होगा।

दा०—अरे पागल सवा लाख रुपया लेकर क्या करेगी?

स्व०—फकीरी को दूँगी दादा।

दा०—अरे तू करती क्या है? घूस का बड़ा टेढ़ा मामला है। घूस लेने वाले से देने वाले को बड़ी सजा होती है।

स्व०—ना! ऊँ' मैं नही पकड़ी जाऊँगी। तुम दो रुपया।

प्या०—घूस का किसी को कुछ पता नहीं लगेगा। आप डरते काहे को हैं?

स्व०—देखो दादा रुपये का लोभ मत करो। उनको अगर

कुछ हुआ। या फाँसी हुई तो मै नही जीती रह सकती यह अच्छी तरह जान रखो। चाहे डूब मरूँ। चाहे जहर खाऊँ। चाहे गला काट के मर जाऊँ, मेरा जीना फिर नही होगा। किसी न किसी तरह जान निकाल दूँगी। फिर तुम्हारी बात नही सूनूँगी। अगर मेरी जिन्दगी चाहते हो तो सवा लाख दे दो। और सन्ध्या के मेरे साथ फकीरी के यहाँ चलो।

अब दामोदर जी पर वड़ा सङ्कट आया। दोनो ओर से आफत में पड़े। यही एक प्यारी पोती है। माँ इसकी नही है इसको अभिलाषा पूरी करना ही चाहिये। दूसरा कौन पूरा करेगा मेरे सिवाय।

"इतना करके भी स्वयम्वरा आज प्राण की वाजी लगाये वैठी है। इसको सवा लाख दिये विना इसके प्राण नहीं वचते।"

यही सव आगा पीछा सोच विचार कर दामोदर ने उसका मुँह माँगा देना कवूल किया। अव भावी पतोहू के नसीव पर खुश होकर प्यारी वाई मन में वहुत सन्तुष्ट हुई।

आठवाँ बयान

सूरज डूबती वेरा फकीरीराम पेशकार के द्वार पर एक वग्घी खड़ी हुई। उसमें वैठे हुए एक बूढे को वहीं रहने को कहकर स्वयन्वरा अपना नीला हैण्ड वैग लिये हुए उतरी और धड़ाधड़ भीतर घर में चली गयी।

भीतर जाते ही सब से पहले मोती रानी का दर्शन मिला। स्वयम्बरा की प्यारी सखी मोती रानी अपनी सखी को देखते ही रोने लगी। दूलम से व्याह होने की बात फिर खून और अगलही मे पकड़े जाकर हवालात में दूलम के बन्द होने का समाचार भाई से पहले ही मोती रानी सुन चुकी थी।

दोनो का विषाद विलाप कुछ शान्त हुआ। दोनों एक कौच पर शान्त बैठी बातें करनी लगी फिर बात ही बात मे स्वयम्बरा ने पूछा—

"भैया कहाँ गये हैं सखी ?"

'गये कहीं नहीं'। अपने कमरे मे कागज़ पत्र देख रहे हैं।" सुनकर बोली—"अच्छा बहन मैं तुम्हारे भैया से कुछ बात करूँगी। उनके द्वार तक मुझे पहुँचाओ।"

कुछ मामले मुकदमे की बात है समझकर मोती रानी झट उठी और आगे आगे चलने लगी। पीछे पीछे स्वयम्बरा हाथ में नीले रङ्ग का सुन्दर हैण्डबैग लिये हुए चली।

वहाँ देखा तो दरवाजा बन्द है। मोती ने पुकारा—'भैया!"

फकीरी ने सिर उठाकर देखा। पूछा—क्या काम है ?"

मो०—जरा दरवाजा खोलो।

इस घड़ी फुरसत बिलकुल नहीं है। क्या काम है बोलो वहीं से।"

मो०—हमारी सखी स्वयम्बरा आयी हैं ?

कुछ सोचकर—"अच्छा बिठाओ मैं आता हूँ।"

मो०—मेरे साथही यहाँ खड़ी हैं। भेंट करना चाहती हैं।

विस्मित होकर फकीरी राम उठे और दरवाजा खोलते ही एक श्वेत वसना सुन्दरी को घूँघट मे देखा। दो कदम पीछे होकर उन्होने रास्ता छोड़ दिया। धीमी चाल से स्वयम्वरा भीतर गयी।

फकीरी ने लम्प की रोशनी मे घूँघट वाली युवती को देखा लेकिन पहचान नहीं सके। एक कुर्सी उन्होने आगे कर दी। बगल मे हैण्ड बेग रखकर स्वयम्वरा उसी पर बैठी। उसकी चलन, उसके भाव और कपड़े के भीतर से फूटता हुआ आब देखकर फकीरी ने उसको बहुत कुछ समझा लेकिन अपरिचित होने से अभिप्राय क्या है समझ नहीं सके। तौ भी अटकल लगाया। लेकिन ठीक असल बात समझ में नहीं आयी। इतनी रात के अकेले युवती कमरे मे किस मतलब से आयी है। मोती रानी भी उसे पहुँचाकर जा चुकी है। मन मे यही सोचते हुए फकीरी राम खड़े रहे।

स्वयम्वरा मन मे सोचने लगी—क्या कह के बात शुरू करे। एक कुल नारी को जो स्वाभाविक लज्जा होती है उससे उसके मुँह से जल्दी बात नहीं निकली। लेकिन बाबा गाड़ी मे बैठे अकुलाते होंगे सोचकर उसने ही मुँह खोला। बड़ी नरमी से बोली—"आप तकलीफ क्यों करते हैं बैठ जाइये।"

सुनते ही फकीरीराम अपनी कुर्सी पर बैठ गये। तब स्वयम्वरा बोली—"आपने मुझे और अभी नहीं देखा था। यही पहले

पहल यहाँ मेरा आना हुआ है आप विस्मित हुए होंगे लेकिन मेरे यहाँ आने का कारण आप सुन लीजिये। मैं एक नामी जमींदार की लड़की हूँ। लेकिन वह सब परिचय न देकर मैं अपनी आफत आपसे कहती हूँ। मोती रानी मेरी बाल सखी हैं। इस नाते मुझे भी आप अपनी छोटी बहन समझिये। अब मैं अपनी आफत कहती हूँ दूलमसिंह जो इस घड़ी हवालात में बन्द हैं। उनसे मेरा व्याह पक्का हो चुका है।"

इतना सुनते ही फकीरी बाबू काँप उठे। मन ही मन बोले—"हा! ऐसी सुन्दरी ऐसे महान सङ्कट में पड़े। विधाता का विधान भी बड़ा ही विचित्र है। दूलम जरूर बेगुनाह है। ऐसी सुन्दरी से जिसका व्याह होने वाला है वह आदमी ऐसा अनर्थ अगलही और खून का अपराध करेगा ऐसा हो नही सकता। लेकिन उनकी भावी अधिकारिणी यहाँ किस मतलब से आयी है यही जानने का उन्हे बड़ा उद्वेग हुआ बोले—"अच्छा बहन यह सब तो मैं समझ गया लेकिन यहाँ आने का कारण जानना चाहता हूँ।"

इतना सुनने पर स्वयम्वरा ने अपना घूँघट थोड़ा हटा कर सुनील नेत्रों से फकीरीराम की ओर एक बार देखा।

फकीरी ने देखा—मानो उज्जवल चन्द्र सघन मेघों से मुक्त हो कर अरुण बिम्ब लिये हुए निकल आया है। अब उनसे सुन्दरी की ओर देखते नहीं बनता। भयलज्जा और सम्भ्रम के दाव से उनकी दीठ नीची पड़ गयी। अब स्वयम्वरा बोली—"मेरी प्यारी बालसखी के आप ज्येष्ठ सहोदर हैं इस कारण मेरे भी हैं। मुझे

अपनी छोटी बहन समझ कर दया कीजिये। अनुग्रह करके मेरी लज्जा रखिये। मेरी डूबती हुई नैया के पतवार होकर मेरा मान-सम्भ्रम बचाइये।"

अभी तक असल बात क्या है। क्या करना है न समझ कर भी फकीरी को इतना कहना ही पड़ा—"फरमाइये।"

दरवाजे की ओर देख कर स्वयम्वरा कुछ रुकती है। पहचान कर फकीरी राम ने उठ कर द्वार बन्द कर लिया। कहा—"आप जो कुछ कहना चाहती हैं कहिये। अब यहाँ कोई नहीं आवेगा न कोई आपकी बात सुन सकेगा।

स्व०—आप से मैं एक काम कराना चाहती हूँ। इस उपकार का बदला मुझसे इस जिन्दगी मे नहीं बन सकेगा लेकिन मैं जीवन भर आपकी नेकी मानूँगी।

यही कह कर उसने अपना हैन्डबैग खोला और नोटो का बड़ा पुलिन्दा निकाल कर उनको देने लगी।

रुक कर उन्होने कहा —यह क्या है ! किस लिये आप इतना तकलीफ करती हैं।

स्व०—नहीं आप इसको तकलीफ मत समझिये मैं अपनी खुशीसे चाहती हूँ कि आप इसको गिनलें तब मैं अपनी बात कहूँ।

फकीरी ने काँपते हाथो गिन कर कहा "यह तो कुल नगद इक्कीस हजार है।"

स्व०—यह आपके वास्ते है। मेरा यही काम कर दीजिये कि मैं एक कागज लिख देती हूँ। आप श्री दूलमजी को पहुँचा देवें।

फ०—यह काम मुझ से तो अनहोनी बात है। जहाँ किसी ने सुना कि फिर मैं कहीं का नहीं रहूँगा।

स्व०—इसकी तो फिक्र आप रत्ती भर भी मत कीजिये। बात केवल आप से और मुझ से हो रही है। किसी को कुछ खबर नहीं होगी। और कुछ खतरा हो भी जाय तो नौकरी छोड़ दें। इसी धन से आप सुख से जीवन बिता डालेंगे।

फ०—ना! ना बहन! यह काम मुझ से नहीं हो सकता।

स्व०—सो मुझे मालूम है। मैं अपनी भावी सास के साथ गयी थी। संत्री ने मुझे जाने ही नहीं दिया।

फ० आप एक सप्ताह ठहरिये फिर कचहरी की हवालात होने से आपका काम हो जायगा।

स्व०—ना! ना! एक हफ्ता मे मैं जीती नही बचूँगी।

फ०—अच्छा मैं उपाय बतलाता हूँ। हवालात के फाटक पर सुखराम रहता है। वह पहले दूलम सिंह के यहाँ ही नौकरी करता था। वह आप का काम कर देगा। आप कल उसके पास एक बजे दिन को जाइये।

स्व०—कल की बात कल्ह होगी। आज हमारा यह काम कर दीजिये। कागज कलम दीजिये मैं यही पुरजा लिख देती हूँ। आप इसका जबाब मुझे मँगा दीजिये। इतना ही मैं आपको कष्ट देती हूँ।

फ०—आप सुखराम के पास जाना उसकी स्त्री से कहना कुछ उसको दे देना। सब काम हो जायगा।

स्व०—आज का काम आप करें। कल मैं उन दोनों के वास्ते पत्र लिख दूँगी। आप चिन्ता न करें कोई चिरई का पूत भी इसका भेद नहीं जानने पावेगा।

अब फकीरी राम ने देखा कि उपाय नहीं है तब कागज़ कलम दावात ला दिया। स्वयम्वरा ने वहीं लिख कर फकीरी को दिया। कहा—"आप पढ़ लीजिये।"

फ़कीरी ने पढ़ा तो नहीं एक लिफ़ाफ़ा ला दिया। ला ही नहीं दिया। वह चिट्ठी उसी मे रख कर बन्द किया और सील मुहर करके पता लिखने के वास्ते स्वयम्वरा के सामने रखा।

सिरनामा लिखकर स्वयम्वरा ने उन्हे दे दिया कहा—"बस आप ही से मेरा काम सिद्ध हो जायगा कल्ह मैं इसी समय आऊँगी।"

अब फकीरी राम ने उकता कर कहा—"आइये देवी जी! आप कल्ह आने की तकलीफ न करें। मैं चिट्ठी का जवाब जब पाऊँगा तब आपके पास किसी उपाय से भिजवा दूँगा। और हमारी बात मानिये कि इस सीढ़ी से आप नीचे उतर कर सीधे मकान चले जाइये। इस घड़ी आप मेरी बहन से भेंट मत कीजिये आप मुखराम की स्त्री देवल देवी से कल जरूर मिलियेगा। एक बात और है सन्ध्या को आप मिलकर घर मत जाइये वहीं टिक रहियेगा। क्योकि रात के बन्दीखाने के पहरेदार के घर से बाहर निकलने पर जो देखेगा वह सन्देह करेगा असामी को आत्महत्या करने या भागने मे मदद देने का खटका रहता है इसीसे उस

गारद में किसी दूसरे का जाना रोक दिया जाता है । हाकिम के मनमें दूलमसिंह पर बड़ा सन्देह हो गया है । अच्छे अच्छे विश्वासी सन्त्रियों का कड़ा पहरा रखने पर भी उनका इरादा गारद के द्वार पर खुद सोने का हो रहा है । सुना है एडवर्ड साहब को इतना सन्देह हो गया है कि पहले तीन चार दिनों तक उनको नींद नहीं आयी । बराबर विरत रात के गारद पर जाकर संत्री को देखते थे । दरवाजे की जाँच करते थे । बड़ी खबरदारी से आप वहाँ जाइयेगा ।

सिर नवाकर स्वयम्वरा खाली हैण्डबेग लिये हुए वहाँ से चली । नोटो का बण्डल लिये हुए फकीरी भी वहाँ से उठा जब स्वयम्वरा घर से बाहर होने लगी नोटों का बण्डल उसे लौटा कर बोले—"यह आप अपनी चीज अपने पास रखिये । मैं इसको नहीं लूगा । लेकिन मुखराम को जो कुछ देना होगा वह मैं जाँच कर कल ही आपको कह दूँगा । कहकर लौटाने लगे ।"

स्वयम्बरा इनकार करके बोली-"नहीं आप इसको रखिये । जो मैं दे चुकी उसको अब नहीं लूँगी—"नही देवी ! आप चिन्ता न करें इसको ले लेवें । जब आपका काम हो जायगा तब खुद मैं आकर इनाम माँग लूँगा । काम पूरा होने से पहले मैं कुछ नहीं लूँगा ।"

निदान नोटों का बण्डल लेकर फकीरी को सन्मान सहित प्रणाम करके स्वयम्बरा वहाँ से चल पड़ी लेकिन उधर दामोदर बहुत देर तक राह देख चुकने पर बड़े अधीर हो गये थे । जब

नहीं रहा गया तब गाडी से उतर कर भीतर हुए और सीढ़ी पर चढ़ने लगे कि ऊपर से उतरने की आहट मिली। जीने पर बात चीत अनुचित समझ दोनों चुपचाप उतर कर साथ ही गाड़ी में सवार हुए। और गाड़ी बड़ी तेजी से रवाना हो गयी।

रास्ते मे बाबा की ओर देख कर पोती बोली—"बाबा तुम्हारे सब नोट लौट आये हैं। फकीरी बड़े भलामानस सज्जन हैं। उन्होंने एक पैसा भी नहीं लिया लेकिन मेरा काम कर देने का पक्का वचन दे दिया है। इतने रुपये का लोभ नहीं किया। यह भलेमानस का पूरा प्रमाण है।

रुपया सब फिर आया सुनकर दामोदर बड़े ही प्रसन्न हुए। फकीरी की प्रशंसा से उनको उतना सन्तोष नहीं हुआ। उनको हँसी आयी लेकिन रोक लिया अपनी पोती के सिर पर हाथ फेर कर गम्भीरता से बोले—"अदालत के अमले तो इतने भलेमानस नहीं होते बिटिया! यह फकीरी अच्छा आदमी है। सन्देह नहीं।

नवाँ बयान।

सबेरा हो गया। पच्ची चहकते हुए बसेरे छोड़कर चराउर को जाने लगे। चरवाहे भी अपने पशुओं को लिये हुए मैदान को चले। धीरे धीरे पहर दिन चढ़ आया। लेकिन स्वयम्बरा देवी को उधर कुछ भी आज ध्यान नहीं गया। उसको यही चिन्ता होने लगी कि चिट्ठी हमारी पहुँची होगी। फकीर ने काम सिद्ध करवाया

होगा या नहीं। चिट्ठी का जवाब मिला कि नहीं मिला यही खिड़की पर खड़ी सोच रही थी यही सोचती हुई रास्ता देख रही थी कि एक स्त्री उसके शयनागार के चौकट पर आ खड़ी हुई।

स्वयम्वरा बड़ी तेजी से हाथ धर कर उसको भीतर ले गयी और दरवाजा बन्द करके पास बिठाया। फिर पूछने लगी—"बोलो बहन तुम कौन हो। किसने तुमको यहाँ भेजा है। तुम यहाँ कैसे पता लगाकर पहुँची हो।"

कई सवाल एक साथ सुनकर वह स्त्री अकचका गयी। किसका जवाब पहले देवे। इसका कुछ निश्चय नहीं कर सकी। कुछ मिनट पर स्थिर होकर बोली—"फकीरी बाबू ने हमको भेजा है। यह मकान मेरा जाना हुआ था इस वास्ते किसी से पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ी सीधे चली आयी हूँ।"

स्व०—धीरे बात करो कोई सुने नहीं। तुमको उन्होने क्या कहा चिट्ठी भेजने की बात थी लायी हो?

कपड़े मे से सील मुहर की हुई एक चिट्ठी देकर वह स्त्री चुपचाप रही। काँपते हाथों चिट्ठी खोलकर स्वयम्बरा पढ़ने लगी उसमे लिखा था—

ईह हयर भढ़ी इबथ ये चूँ। वोघो पे भाव लछखल युजे भिह चावथ मे ढावा चै शत्त थुय हुप छुखी चो। थुय खो सलोहा चै खि यैं भवधी ह्खठ हे पभलूँघा। वेखिप यैं पिलास चो घरा चूँ येला खोऊ घशात्त पर्वा चैं। भिप वोघों पे येले गिवाव घशाची धो चै एपखी भाथ यापखत चाखिय पे युजे घुपत्तघाल हयभा चै।

यैं ओहा फाथख त्तलघिम्फ पत्तीं खल हखथा। उहखा हुभूय पत्तीं धेपे फल रत्त खहूल थुन्न फल फढ़ेघा। आभ खेशव मघशाप खा त्तो मलोहा त्तै भ्रभ खुज ऊफार पत्तीं त्तै थभ घुपात्त खभूव खलपा त्ती त्तोघा।

चिट्ठी इशारे के अक्षरों में लिखी होने पर भी स्वयम्वरा उसे पढ़ कर समझ गयी। चेहरा लाल हो आया। यह बड़ी आफत की बात है कि गुनाह न करके भी अपराध कबूल करना होगा।

यही मन मे सोच कर स्वयम्वरा सूख रही थी कि उस पत्र वाहिका ने कहा—"एक चिट्ठी और है।" "कहाँ है दो" कह कर हाथ में लिया और बड़ी तेजी से खोल कर पढ़ने लगी। उसमे फकीरी ने लिखा है—

"सब काम खतम हो चुका। आज शाम को जो करने को मैं कह चुका हूँ उसमें भूल मत कीजियेगा बीस हजार अशरफी वह माँगता है आप की चिट्ठी का जवाब इसके साथ भेजता हूँ।"

पहली चिट्ठी पढ़ कर जो उदासी और निराशा हुई थी वह इसके पढ़ने से दूर हो गयी मन में कुछ धीरज आया। स्त्री को दस रुपया इनाम देकर विदा कर दिया। मन मे बोली—"अब भेट जरूर हो जायगी। और मेरे सामने वह कुछ भी नहीं छिपावेंगे। सब असल हाल जान कर मैं इसका उपाय करूँगी जरूर अब कोई चिन्ता की बात नहीं है। यही विचार वह अपने दादा के कमरे में गयी। और उनका गला धर कर बोली—"बाबा! आज तो मैं बन्दी खाने जाऊँगी।"

विस्मित चकित होकर दामोदर ने गोद में लेकर कहा—"यह कैसा पागलपन बकने लगी बिटिया। कल्ह मेरे साथ गयी थी वह दूसरी बात रही। अब कैदखाने में! कोई कुल कन्या ऐसा करती है! तुम्हारी तो बेटी देखता हूँ मति मारी गयी है। ऐसा मैं तो जीते जी नहीं होने दूँगा।"

स्वयम्वरा गोद से उठी और बिजली की तरह कड़क कर बोली—"जरूर ऐसा ही करूँगी मै। तुमको भी मेरे साथ बन्दी-खाने के फाटक तक चलना होगा। मैं आज लौटूँगी नहीं तुम सन्ध्या को वहीं मुझे पहुँचा कर चले आना।"

कपार पीटकर दामोदर कहने लगे—"बाप रे बाप! यह सत्यानाशी काम तुम्हे किसने बतालाया बेटी! तुम्हारी मा नहीं बाप नहीं। इतने दिन तक पाल पोस कर मैंने तुमको इतना बड़ा किया अब हमसे तुम इतना बेकही हो रही हो देखो तो मैंने तुम्हारे वास्ते क्या क्या नहीं किया। जरा सिर दर्द होने से हमने उपवास पर उपवास किये हैं। तुम्हारे वास्ते मैंने अपना सब त्याग दिया और आज तुम ऐसी बात करती हो। कुलकन्या होकर जेलखाने जाओगी। उस भयङ्कर स्थल में रात भर सोवोगी। तुम्हारे वास्ते मैंने सब कुछ किया पढ़ाया लिखाया। तुम्हें लक्ष्मी बना कर तैयार किया अब तुम ऐसा सत्यानाशी काम करने चली हो मैं तुम्हें हरगिज जाने नहीं दूँगा।

स्व०—नहीं जाने दोगे तो लो यहीं मर जाती हूँ। जिसके

वास्ते जीती हूँ । जो मेरा प्राणाधार है उसीको नहीं बचा सकी तब जीने का कौन काम है दुनियाँ मे !

इतना सुनते ही बूढ़े दामोदर को आँखो के आगे अधेरा हो आया । मन ही मन व्याकुल होकर कहने लगे –“बाप रे बाप ! अभी व्याह भी नहीं हुआ है तब इतना बेकही है जब शादी हो जायगी तब तो हम कोई भी नहीं होगे। राम ! राम ! इसको हमने नाहक पढ़ाया लिखाया। अङ्गरेजी मे पण्डित बनाया। साहबो की लड़कियाँ ऐसी ही बेकही होती हैं न ? यह तो बिलकुल बेकही होती जाती है । उद्दण्ड मिसों की तरह हो रही है और इसको आगे बढ़ने देने से तो इसका अनर्थ बढ़ता ही जायगा। हरगिज जाने देना ठीक नहीं है ।

अब आजा नातिन में बड़ी कहा सुनी, बड़ी बहस और बहुत बतकटौअल हुई। अन्त को आजा पराजित हुए। स्वयम्वरा की जीत हुई। और पोती को साथ लेकर सन्ध्या के हवालात के द्वार पर जाना कबूल करके ही दमोदर ने अपना पिण्ड छुड़ाया।

दिन बीत गया । सन्ध्या के निर्मल आकाश काली घटा से घिर आया । रह रहकर बिजली चमकने लगी । बादलों की घरघराहट से अजीब समा बँधा । मन मे दामोदर खुश हुए कि ऐसे दुर्दिन मे यह घर से ही नहीं निकलेगी ।

लेकिन यह अभिलाषा उनकी सफल नहीं हुई। स्वयम्वरा ने अपना सङ्कल्प नहीं छोड़ा। गाड़ी दरवाजे पर आयी। बूढ़े दादा को लेकर स्वयम्वरा गाड़ी में सवार हुई हाथ मे वही नीला हैन्ड

वैग रहा। वीस हजार फकीरी ने लिखा था स्वयम्वरा ने पच्चीस हजार ले लिया।

घर से चलते समय जो घोर घटा घिर आयी थी पानी नहीं वरसा कर खाली गर्ज्जन तर्जन करके भाग गयी। हवालात के द्वार पर पहुँचते पहुँचते आकाश निर्मल होगया। तारे छिटक गये। तारों के सरताज चन्द्रदेव भी चाँदनी छिटका कर माथे पर आगये। उसी रोशनी मे एक स्त्री को सामने देकर स्वयम्वरा हैण्ड वैग हाथ मे लिये उत्साह से उतर पड़ी और वावा से वोली "अव जाव दादा! कल्ह सवेरे मैं आऊँगी।"

बूढ़े दामोदर को अव उपाय नहीं रहा। चुपचाप लौट गये। इधर देवल वाई जो आयी थी झट स्वयम्वरा को गोद मे करके अपने घर में हो रही।

मुखराम का घर स्वयम्वरा ने देखा। खूव साफ है तीन छोटे छोटे कमरे हैं एक में रसोई घर है। उसीमे स्वयम्वरा को देवल ने आदर से विठाया। वैठते ही चारो ओर चञ्चल दृष्टि से देख कर स्वयम्वरा ने पूछा—"तुम्हारे स्वामी कहाँ हैं?"

दे०—अभी आते होंगे। रौंद फिर गयी है। पहरा वदला है। अव देर नहीं है। आप कुछ भोजन कीजिये।

स्व०—भोजन तो मैं कर के आयी हूँ। इस घड़ी जो विपत है उसके मारे तो खाना पीना सव भूल गया है अव तुम्हारे स्वामी आ जायँ तव मुझे भी वेफिकरी हो।

दे०—कुछ परवाह नहीं भगवान का नाम लो फकीर कहता

है यह भी नहीं रहेगी। जो आता है वह जाता है। जो सङ्कट आया है वह भी बीत जायगा। आपकी अवाई के कारण ही मैंने पूड़ी बनाकर रखी है। थोडी खीर तैयार है कुछ तो खा लेवें।

बात टालना ठीक नहीं एक पूड़ी और थोड़ी खीर स्वयम्बरा ने पा ली। फिर स्वस्थिर बैठ कर देवल देवी से बातें होने लगीं। बातो ही में जब दस बज गया इसी समय मुखराम घर में आया और बड़े सन्मान से स्वयम्बरा को नमस्कार करके बैठा।

अब स्वयम्बरा के मन मे संशय हुआ। यही केवल तीन आदमी हैं। यह स्वयम्, देवल और मुखराम। दरवाजा भीतर से बन्द करके चाभी दे दी गयी है। पास ही मुखराम बैठा है देखकर स्वयम्बरा ने अपने हैण्ड बैग का ताला खोला और बीस हजार अशरफी निकाल कर दिखलायी। मुखराम के लार टपकने लगा उसने जल्दी से तुतलाकर कहा—"तो—तो—तो""यह सब ह—हमारे वास्ते है ?"

स्वयम्बरा ने कहा—"हाँ सब तुम्हारा है।"

मुख०—ओफ सब मोहरे मोहर है इतना दौलत तो जिन्दगी में कभी देखने को नहीं नसीब हुआ था। अपनी देवल को पुकारा कहा—"अरे देख भाई कैसा चमक रहा है माल।"

पति पत्नी दोनो मुहरो को देखकर आपेसे बाहर होने लगे। स्त्री को हवास सम्हालना कठिन हुआ। बैठने के बदले वही गिर पड़ी लेकिन होश मे रही। पति से बोली—"अरे जल्दी लुकवा दो। कोई आकर देख लेगा तो बड़ी आफत होगी।"

छाती दूनी करके मुखराम बोला—"आफत क्या होगी। नौकरी की ? अरे ऐसी नौकरी को धता भेजेंगे हम। इतनी सम्पत्ति पाकर भी गुलामी करेंगे! अब कौन गम है नौकरी की ?"

इसी समय देवल सम्हाल कर उठी और एक थैली लाकर उसीमें मुहरें भरने लगी। स्वयम्बरा सिर झुकाये मनमें हँस रही थी। फिर पाँच हजार और अशरफियाँ निकाल कर उनके सामने रखा। मुखराम और उतान हो गया। बोला—"अरे यह भी हमको है ?"

स्व०—हाँ यह सब तुम्हारे वास्ते है। तुमको खुश करने के वास्ते तुम्हें गुलामी से हटाने के वास्ते मैं और बीस हजार तुमको दूँगी।

कपार खुजला कर मुखराम बोला—"खाली एक ही चिन्ता रही थी कि अगर पकड़ जाऊँ तो नौकरी चली जायगी। अब हमको वह चिन्ता नहीं रही आपकी दया से अब मैं बड़ा आदमी हो गया। अब आप वहाँ चलिये।

स्वयम्बरा उठ कर चली। देवल ने सब सम्हाल कर दूसरे कमरे में छिपा डाला। मुखराम एक लालटैन और चाभियो का गुच्छा लेकर आगे आगे चला।

आगे आगे मुखराम पीछे स्वयम्बरा थी। मुखराम के घर ही में से हवालात जाने का रास्ता था। बड़े फाटक पर पहुँचकर मुखराम ने कहा—"यही घर है।

स्वयम्बरा ने देखा चार ताले लगे हैं। उसके मन में आज

बड़ा आनन्द है लेकिन साथही कलेजा काँप रहा है। चारों ताले और सिकड़ खोलकर मुन्नराम ने रास्ता छोड़ दिया। स्वयम्वरा फाटक के भीतर गयी। लालटेन दरवाजे पर रखकर मुन्नराम चला गया। उसी की रोशनी मे स्वयम्वरा ने भीतर देखा तो दूलमसिंह फटी हालत मे पड़े हैं। दूर से उन्होंने स्वयम्वरा को नहीं पहचाना लेकिन पास पहुँचने पर पहचान कर ही दूलमसिंह काँप उठे। बोले—'अरे इस बन्दी खाने मे तुम अकेले कैसे आयी। या भगवान मैं जागता हूँ या सपना है ?"

चुपचाप स्वयम्वरा पास जाकर बैठी और बहुत धीरे धीरे बोली —"सपना नहीं सच है। जो देखते हो वह सब नकल नहीं असल है। मैं वही हूँ। तुमको देखने आयी हूँ कि कैसे कष्ट मे हो।'

विस्मय से सम्हलकर दूलम ने कहा—"मैं अभी तक जीता हूँ। सङ्गीन मुकदमा सजाकर बदमाशों ने मुझे इस दशा मे डाला है। हमारे दोस्त एडवर्ड इस घडी दुशमन हैं। उनकी बराबर यही इच्छा है कि मैं सजा पाऊँ। मेरी दशा रात को कई बार और दिन को बार बार खुद देखने आते और देखकर खुश होते हैं। तुम अब यहाँ से चुप चाप चली जाव देर मत करो। नहीं तो देख लेने पर मेरा बचाव होही नहीं सकता जल्दी करो।

दूलम को नहीं मालूम है कि पच्चीस हजार अशरफी देकर स्वयम्वरा ने सब खतरा जीत लिया है और उसने उनसे कुछ कहा भी नहीं जो कहने आयी है वही कहने लगी। बोली—

"आप डरो मत इस रात के कोई मुझे देख नहीं सकता। सुनती हूँ कि हाकिम पूछता है तो तुम कुछ जवाब नहीं देते। यह तुम किसकी कुमति मे पड़े हो। बेगुनाह होकर भी चुप रहकर गुनहगार क्यों बनते हो। अपना निरपराध होना बतलाकर अपनी सफाई देने के बदले सब छिपाते क्यों हैं?

लम्बी साँस लेकर दूलम ने कहा—सफाई देने का उपाय नहीं रहा। सब घटना मेरे बरखिलाफ तैयार है देवदूत के घर में एक ने आग लगायी है। एक ने गोली मारी है। यह बात सब सच्ची है लेकिन असल असामी बड़ा खबरदार बड़ा मुस्तैद और खूब धूर्त है। सच्ची बात निकालना अनहोनी बात हो रही है।

स्व०—तो असली अपराधी को जानते हो।

"हाँ अच्छी तरह जानता हूँ लेकिन कोई विश्वास नहीं करेगा।"

स्व०—तो ऐसी अघटित घटना हुई कैसे? तुम्हारे ऐसे बेलाग, निर्दोषी पर वह अपराध आया कैसे?

"इसका कारण है और बड़ा ही सङ्गीन कारण है मैं उसको बतला नहीं सकता। कह ही नहीं सकता।

स्व०—हमसे नहीं कहोगे?

"तुमको भी नहीं बतला सकता। जब घटा हट जायगी तब कहूँगा अभी नहीं। एक और मित्र ने लिखकर मुझसे कहा है लेकिन अफसोस मैं नहीं कह सका। वह गुप्त बात लिखकर भी बतलाने की नहीं है तुम जाव! जल्दी जाव यहाँ से।"

इस घड़ी स्वयम्बरा अभिमान से भर उठी । जिसको अपना सब सौंप चुकी, जिसे व्याह से पहले ही उसने अपना तन मन धन पूर्ण यौवन सब समर्पित कर दिया जिसको इतना विश्वास किया वह एक गुप्त बात उससे नहीं कहना चाहता उसके मन मे बड़ी वेदना हुई ।

बड़े दुःख ही बात है बिना अपराध बे कसूर दूलम फाँसी जाने को तैयार हैं लेकिन भावी हृदयेश्वरी को बचाने के लिये असल कारण नही कहते इस कारण स्वयम्बरा को बड़ा मान हुआ । मानही में आकर बोली—"कुछ परवा नहीं मुझे फाँसी हो किन्तु यहीं मैं चढ़ जाऊँगी । लेकिन तुमको जो कहने आयी हूँ उसे कहे बिना मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी ।"

दू०—और तुमको क्या कहना है कहो ?

स्व०—अपराध कबूल करते हो । झूठी बात पसन्द करते हो । लेकिन जान बचाने के वास्ते सच्ची बात नहीं कहते ? यही तुम्हारी प्रतिज्ञा है । अच्छी प्रतिज्ञा की है । अच्छा साथही एक बात और कहो—"मैंने जब देवदूत के घर मे आग लगाया तब स्वयम्बरा मेरे साथ मे थी ।" यह बात कहना । इससे यह फल होगा कि हम तुम दोनों एक साथ सूली पर चढ़ चलेंगे या दोनो एक साथ जिन्दगी भर जेल काटेंगे ।

दू०—ऐसा पातक मैं नहीं कर सकता । तुम सती साध्वी लक्ष्मी हो तुम्हें मैं इस सङ्कट मे नहीं फँसा सकता । अगर सत्य जाहिर नहीं हुआ तो मैं खुद मरूँगा । मेरे हिये की रानी, मेरे

शरीर की अधिकारिणी! तुम्हीं मेरा सब कुछ हो तुमको मैं नहीं मरने दूँगा।

स्व०—ओफ़! कैसी दयालुता है मरने नहीं दोगे। इतना तुम्हारे वास्ते असाध्य है। लेकिन तुम्हारे मरने पर मैं आप ही आप घर में मरूँगी। उस मौत से मुझे इस संसार में कोई नहीं रोक सकता। तुम इस लोक से चले जाओगे तब मैं इस संसार मे नहीं रहूँगी यह निश्चय है। यह वैसा ही निश्चय है जैसे तीन घंटे बाद इस लोक मे सूर्य्य देव का उदय होना।

दू०—देखो मेरे हिये की देवी! मरने की किसी को साध नहीं होती। मैं भी अपनी श्रद्धा से नहीं मरता। जबतक मुकदमा सेशन में नहीं जाता तबतक मैं किसी की बात का जवाब नही दूँगा। सेशन में सवाल जवाब करने के वास्ते दो बेरिस्टर मुकर्रर हो चुके हैं। एक का नाम रेनियस है दूसरे का नाम है यूनिक। यूनिक मेरा लड़के पन का मित्र है। उसीको विश्वास करके मैं अपने दिल की बात कहूँगा वही मुझे बचाने का उपाय जरूर करेगा।

स्वयम्बरा ने देखा कि लालटेन से मुखराम इशारा कर रहा है। समझकर दूलम की अन्तिम बात से कुछ धीरज पाकर बन्दी खाने से चल पड़ी। फाटक पर पहले की तरह चारो ताले बन्द हो गये।

—

दसवाँ बयान

सवेरा हो गया। सारा संसार अपने काम काज मे लगा। लेकिन दामोदर की बैठक मे एक अलग मजलिस बैठी। बैरिस्टर रेनियस और यूनिक, डाक्टर लोरन और दामोदर बैठे हैं देवल के घर मे रात बिता कर स्वयम्बरा भी लौट आयी है। उसका चेहरा फीका पड़ा है, आँखो की पलकें भारी हैं, माथे के बाल रूखे सूखे हैं, शरीर मे कुछ तकलीफ समझ ऊपर चली गयी। कहाँ क्या करने गयी थी यह दामोदर के सिवाय और किसी को मालूम नही है।

मजलिस मे बातें हुई। दूलम के मित्रो मे मुकदमे की दो एक बातो पर चर्चा चली। बात बहस भी हुई। बेरिस्टरो ने भी दो एक बातें कही फिर चुप हो रहे। सन्मान सिंह इलाहाबाद से रेनियस को लाये हैं और दूलम ने खुद यूनिक को मुकर्रर किया है। दोनो बेरिस्टरो के बुद्धिबल की सर्वत्र प्रशंसा है। दोनो दूलम सिंह को छुड़ा लेंगे इसमे कुछ सन्देह किसी को नही है।

कुछ देर चुप रह कर चश्मा पोंछते हुए डाक्टर साहब बोले— "यहाँ की भूमिका खतम हो चुकी यहाँ की हवालात से दूलम निकाले गये हैं आज वह दूसरी हवालात मे रखे जायँगे। अब मेजिस्ट्रेट ने हुक्म दिया है कि उनके हित मित्र उनसे भेंट कर सकेंगे। मुलाकात के वास्ते एक कमरा दिया गया है वकील बेरिस्टर हवालात में ही भेंट कर सकेंगे। दूलम को आज हाकिम

का हुक्म मिला है कि अपने बेरिस्टर को वह चिट्ठी लिख सकते हैं।

दामोदर ने पूछा—"अच्छा भुईंभोड़ की क्या दशा है। उसकी जाँच करने पर क्या निकला ?"

डा०—यही रिपोर्ट हुई कि वह पागल नही है। वह इसी मतलब से बात नही करता कि लोग उसे पागल समझें। देवदूत की स्त्री दयावती जब पूछती है तभी भुईंभोड़ का कंठ खुलता है दूसरे से बात करती बेर वह पागल बन जाता है। मैं जल्दी उसकी चालबाजी तोड़ दूँगा। हाँ आज मैं अधिक देर तक नही ठहर सकता। दूसरे दिन आकर विशेष विवरण बतलाऊँगा। दयावती ने मुझे लिखा है कि देवदूत की तकलीफ रोज बढ़ रही है अक्सर उन्हे बेहोशी हो रही है। अब मैं वहीं जा रहा हूँ। आप लोग खूब विचार से काम कीजिये। मेरा सलाम लीजिये।"

डाक्टर वहाँ से बिदा हो गये। उनके जाने पर कोई पाव घंटा पीछे एक हरकारे ने पहुँच कर दामोदर जी के हाथ मे एक चिट्ठी दी। वह दूलम का ही लिखा देख कर पढ़ने लगे। उसमें लिखा था—"आज मैं सवेरे ही अपने बेरिस्टर यूनिक साहब की राह देख रहा हूँ।"

दामोदर ने वह चिट्ठी यूनिक साहब के हाथ में दी पढ़ कर सब लोग प्रसन्न हुए। यूनिक अपने मवक्कल से भेट करने को उसी दम रवाना हुए।

जब हवालात के द्वार पर यूनिक साहब पहुँचे कायदे से जेलर

ने दरवाजा खोल दिया। आप भीतर गये। उनको देखते ही दूलम सन्मान से उठ खड़े हुए दोनों मे कर मर्दन हुआ। फिर दोनों बैठ गये।

पहले ही वेरिस्टर ने पूछा—"आप हाकिम से इजलास पर वात क्यो नहीं करते।"

दू०—मेरा नसीब विगड़ा है। मैं कौन वात कहूँ। कसूर किये बिना मैं गुनहगार बना हूँ इस वात पर कौन विश्वास करेगा। भगवान की मरजी मा बाप मित्र सब मौजूद हैं लेकिन किसी का मुझे दर्शन कभी नहीं मिला। किसी का मुझे प्रवोध नहीं मिला। अब इस संसार में मेरा दूसरा कोई नहीं हैं। तुम अगर मुझे वचा सको तो उबारो नही तो जरूर मुझे वेगुनाह फाँसी पर लटकना ही होगा।

यू०—मैंने सुना है प्यारी बाई और स्वयम्बरा तुमसे मिलने के लिये हवालात के द्वार तक पहुँची थी लेकिन संत्रियों ने नहीं जाने दिया तब लौट गयीं। इसके वास्ते आपको चिन्ता करना नहीं चाहिये। वात यों है कि तहकीकात मे अफसर जो पूछे उसका ठीक ठीक जवाव देना असामी का कर्तव्य है। आपने जवाब नहीं दिया इस वजह से सब लोग आप पर सन्देह करते हैं।

दू०—अच्छा तुमको क्या मालूम होता है तुम भी मुझ पर सन्देह करते हो मिस्टर यूनिक!

यू०—जो कुछ मैंने सुना है उससे तो सन्देह जरूर कुछ होता ही है लेकिन ऐसा सङ्गीन पातक तुम करोगे मुझे विश्वास नहीं

होता। तुमको धन इज्जत सब है। इतने बड़े बड़े आदमी तुम्हें आदर मान देते हैं। लड़केपन से तुम्हारी चालचलन अच्छी है मैं जानता सब हूँ। एक महीने बाद एक परम रूपवती कन्या से तुम्हारा व्याह होने वाला है। उस सुख की आशा तुम्हारे भीतर लहलहा रही है। ऐसी दशा में किसी भलेमानस के घर में आग लगाओगे या उसे गोली मारोगे अपनी इज्जत हुर्मत और धन दौलत का या अपनी प्यारी का मोह नहीं करोगे। ऐसा तुम्हारे मित्रों को विश्वास कभी नहीं हो सकता। लेकिन मुशकिल यह कि तुम मुकदमे के शुरू से ही मौन हो रहे हो। फौजदारी का असामी सफाई देता है। अपने बचने की सूरत देखता है लेकिन तुम उधर से बिलकुल बेखबर, बिलकुल बेफिक्र हो इसका मतलब क्या है?

दू०—मेरा मतलब मेरा भाव बड़ा बेढब है। मैं जो कुछ कहूँगा उस सत्य पर कोई विश्वास तो करेगा नहीं। लेकिन मैं कहूँगा सब सत्य ही। जिन लोगों ने मुझे गिरफ्तार किया है। वह लोग मेरी उस सच्ची बातको मानेंगे नहीं तब इस दशा मे मैं मौन नहीं रहूँ तो करूँ क्या?

यूट०—तुम तो पागलपना करते हो। फौजदारी मुकदमा तुम्हारे ही ऊपर तो आया नहीं है। साल में लाखों आदमियों पर फौजदारी मुकदमें होते हैं लेकिन सबके सब कसूर वार होते हैं ऐसा कोई आदमी हलफ लेकर नहीं कह सकता। सफाई और गवाही से उनमे बहुतेरे बेगुनाह छोड़ दिये जाते हैं। केवल मौन

रहने से कोई बेगुनाह होवे या कसूरवार साबित होकर सजा पावे ऐसी तो नजीर हमने नहीं देखी ।

दू०—भाई नजीर ढूंढ़ना ही तुम्हारी भूल है । जो काम मैंने किया नहीं । जिसे मैं कर नहीं सकता उसीका दोष मेरे ऊपर लगा है । मेजिस्ट्रेट एडवर्ड साहब मेरे मित्र हैं यह तुम जानते ही हो । मेरी चाल-चलन, मेरी रहन-सहन इज्जत सब जान समझ कर भी वह मुझे इसमें गुनहगार समझते हैं ऐसे मौके पर मैं क्या करूँ । सफाई मेरे वास्ते बहुत थोड़ी केवल एक बात है । मैंने वह बात किसी से नहीं कही कह नहीं सकता । यह भी भरोसा नहीं होता कि मैं कह सकूँगा । तुम हमारी स्वयम्वरा को जानते हो ?

यू०—उनके दादा के ही पास से मैं आ रहा हूँ । तुमने मुझे इस मामले मे वेरिस्टर बनाने का निश्चय किया है इसी कारण मैं दामोदर जी के यहाँ गया था । मैंने वही सुना कि उनकी पोती से तुम्हारा व्याह होने वाला है ।

दू०—हाँ ठीक है अब सुनो । वही स्वयम्वरा कल्ह रात के मुझसे मिलने हवालात में आयी रही । वह भी चाहती थी कि मैं अपनी सफाई उनसे बतलाऊँ । मैं उनको बतला नहीं सका ।

यू०—किसी को भी नही बतला सकते ।

दू०—तुम मेरे प्राण प्रिय मित्र हो तुमसे मैं कहूँगा ।

यू०—अच्छा कहो ।

दू०—मैं कहूँगा तो लेकिन तुम किसी को जाहिर मत करना।

जब मुकद्दमा सेशन मे जावेगा तभी इजलास पर कहना। बहुत ही गुप्त बात है वह।

यू०—नहीं जी! बतलाने की जरूरत जबतक नही आवेगी तबतक मैं हरगिज नही जाहिर करूँगा। मुझे यह मंजूर है। तुम वह अपनी अति गुप्त बात मुझे जाहिर करो। बे खटके रहो।

बहुत धीरे कान के पास जाकर दूलम ने कहा—"देवदूत की स्त्री दयावती मेरी उपपत्नी है।"

कपार पर हाथ पीट कर यूनिक साहब ने कहा—"ओफ सर्वनाश किया तुमने दूलम! सचमुच तुम पागल हो गये हो। कौन मूर्ख इस बात पर विश्वास करेगा।"

लम्बी साँस छोड़कर दूलम ने कहा—'मूर्खों को विश्वास नहीं होगा इसीसे तो मैं चुप हो रहा हूँ। तुम सत्यवादी हो विद्वान हो पण्डित हो। मेरे प्राण प्रिय मित्र हो मैं हलफ से कहता हूँ। जो कुछ मैंने कहा सो सच है।

यू०—यह बिलकुल अनहोनी बात है। इस पर विश्वास ही नहीं होता। फिर साल मे बारह आना तुम लखनऊ रहते हो देवदूत फेमिली सहित अपने इलाके पर रहते हैं तब उनकी घर वाली से तुम्हारा यह मिलान कैसे हो गया?

सामने हाथ बढ़ाकर दूलम ने कहा—"कैसे हुआ सो सुनो—

मैं एक बार इलाके पर आया था पाँच छ वर्ष की बात है। मेरा भी मकान इसी इलाके में है तुम जानते ही तो हमारे घर से देवदूत का मकान कोई तीन साढ़े तीन मील होगा। जब मैं यहाँ आया।

पिताजी काशी गये हुए थे। हमारे चाचा जगबन्धन ही मकान पर थे। मेरे पिता से देवदूत का इलाके के सीमाने के कारण मुक-दमा चल रहा था। दोनों मे बड़ा मनमुटाव था। पड़ोसी दीनबन्धु ने दीनों का दोष दूर करके गले मिला देने को अपने यहाँ नेवता देकर बुलाया। बूढ़ी उम्र में देवदूत ने शादी की है। उसको बहुत मानते और उसी की सलाह से सब काम करते हैं। मैं चाचा जी के साथ ही वहाँ गया। देवदूत भी अपनी पत्नी सहित वहाँ आये जिस कमरे में हम लोग ठहरे थे उसमें तो देवदूत की स्त्री नहीं आयी लेकिन द्वार पर पर्दा पड़ा था उसी की आड़ से उन्होंने सब सुना। उनकी सब देह ढकी थी लेकिन मुँह बाहर था मेरी नजर पड़ गयी। यार वैसा सुन्दर मुखमण्डल मैंने तो जिन्दगी में कभी देखा नहीं था। मैं समझता हूं। वैसी मेनकापरी इस पृथ्वी पर दूसरी है ही नहीं। मेरी नजर पड़ने पर वह वहाँ से हटी भी नहीं मुँह पर घूँघट भी नहीं डाला। मेरे ऊपर उनका क्या भाव रहा मैं नहीं कह सकता। जब तक मैं वहाँ—"

बात काटकर बेरिस्टर ने कहा—"क्या पाप कथा कहने लगे दूलम। मैं इसी को सुनने के वास्ते यहाँ आया हूँ थोड़े। अच्छा कह जाव फिर क्या हुआ?"

दू०—जबतक मैं वहाँ था उसी को देखता रहा। वह भी खड़ी परदे के पास मुझे टक लगाये देखती ही रही। वह परी कौन है। यह मैं पहले नहीं जानता था। देवदूत ने जब सुलह की बात उठी तब क्या कहा—"मुझे तो सुलह से इनकार नहीं

लेकिन मेरी नव विवाहिता स्त्री सुलह नहीं चाहती वह इसको रोकने के वास्ते ही मेरे साथ यहाँ आयी है।" तब मैंने समझा कि पहिली चितवन मे जिसने मेरा मन ले लिया वही स्त्री नव विवाहिता है।

आँखें फाड़कर बेरिस्टर ने कहा—"लेकिन पहली ही चितवन में तुम्हारा माल उसने चुरा लिया। वह उनकी नव विवाहिता है बस इतने से ही वह तुम्हारी उपपत्नी हो गयी। तुम भी कमाल करते हो दूलम!

घबरा कर दूलम ने कहा—"अरे यार पूरी बात तो सुनते नही। पहले सब सुन तो लो।

अनिच्छा से बेरिस्टर ने कहा—"अच्छा कह जाव!"

दे०—वह पहली मुलाकात हमारी थी। उसी दिन से मैं उससे मिलने के लिये व्याकुल हुआ। उसको प्रसन्न करने के लिये मैं दिन रात चिन्ता करने लगा। एक महीने तक यहाँ रह कर मैं लखनऊ चला गया। सयोग की बात देवदूत की उस स्त्री का मायका लखनऊ में ही था। वह पूरे यौवन पर पहुँच कर बूढ़े खूसट की घरनी थी। स्वामी पर उसका प्रेम होता ही कहाँ। मैं भी जवानी पर था। वहाँ मेरे मकान से उनकी खिड़की दिखाई देती थी। वही से वह इशारे बाजी करती थी। मैं भी इशारे मे हाँ करता रहा। फिर उनके घर की लौंड़ी ने आकर मुझे एक चिठ्ठी दी। मैंने उससे उसके मन की समझ कर अनुकूल जवाब दिया उसके पिता मेरे परिचित मित्र थे। कभी कभी मैं नेवते में जाने

लगा। पहले की बात है दयावती की माँ मुझे बड़े प्यार से बुलाती थी मेरा आदर मान करती थी। मैं उसी आवा जाही से इस बार भी भीतर गया। अकेले में उससे भेट हुई तब मालूम हुआ कि उसके बाप पहले बड़े आदमी थे। पीछे दिवालिया हो गये। और एक लाख रुपये पर अपनी बेटी देवदूत को दे दी। और...........

बात काटकर बेरिस्टर ने कहा—"यार तुमने तो अपने पातक का अच्छा उपन्यास सुनाया। तब तो वह लखनऊ नहीं अपने पति के साथ यहाँ रहती है।"

दू॰—तभी से मैं भी यहाँ बहुत आया करता था। गुप्त स्थान में मेरा उसका मिलान हुआ करता था। जङ्गल मे बहुत दिनों तक मिला न होने पर उसने कहा कि कहीं देहात मे मकान लो। मित्र के घर जाने के बहाने वहीं मिला करेंगे। मैंने एक छोटा गाँव ले लिया लेकिन देवदूत की स्त्री के कहे मुताबिक उसके नाम से नहीं एक मित्र के नाम से लिया। जिनके नाम से लिया वह तो वहाँ जाते नहीं थे। मैं ही वहाँ रहता था मुझे ही लोग उस नाम से पहचानने पुकारने लगे। मैंने अपने मित्र देवनाथ के नाम से खरीदा था मेरा ही नाम देवनाथ पड़ गया। वहीं मैं महीनो उसके साथ रहने लगा। वहीं उसे गर्भ भी रह गया। यह दूसरा गर्भ था। पहली बार कन्या हुई वह देवदूत की है दूसरी बार की छोटी कन्या मेरी है।

बेरिस्टर साहब अकुलाकर बोले—बस करो यार! तुम्हारी

यह पाप कथा लेकर मैं इजलास पर जवाब देही करूँगा यही सिखलाते हो ?

दू०—अन्त की बात सुन तो लो भाई ? तीन बरस के बाद स्वयम्बरा से मेरा सम्बन्ध ठीक हुआ। अब देखा कि उस स्त्री को छोड़े बिना मेरा व्याह नहीं हो सकता। लेकिन उसको छोड़ँ तो किस बहाने छोड़ूँ। आखिर जेठ सु० १५ मङ्गल वार को हमारी उसकी अन्तिम भेट थी। उसी रात के हमारे ऊपर यह फौजदारी मुकदमा कायम हुआ।

अकचकाकर वेरिस्टर ने कहा—"सो कैसे ?"

दूलम ने फिर कहना शुरू किया।

दू०—उसी दिन तीसरे पहर दयावती से भेट करके मैंने कहा—"इस तरह से जिन्दगी विताना ठीक नहीं मैं अब शादी करूँगा।

दामोदर जी की पोती से मेरा व्याह पक्का हुआ है। मेरी बात सुनते ही फन उठाये नागिन की तरह वह फुफुआने लगी। बोली संसार बंधन करोगे तो मैं तुम्हारी कौन हूँ। पाँच छ वर्ष तक तुमने हमारी जवानी भोगी है। छोटी लड़की तुम्हारी है। उसकी आँखें तुम्हारी ऐसी ही हैं। हमारे स्वामी उसको गोद में लेकर जब खेलाते हैं तब मैं क्या मन में कहती हूँ तुम नहीं समझ सकते। उसको जब मैं देखूँगी तभी तुम्हारी याद आवेगी। तुमको मैं कैसे भूलूँगी यही सोचती हूँ। अच्छी बात है तुम स्वयम्बरा को वरो। मेरे मन में भी जो आवेगा सो करूँगी मैंने

पूछा क्या करोगी। उसने कहा तुमको मैंने बारह चिट्ठियाँ लिखी हैं तुमने भी मुझे बारह लिखी हैं वही बारहो चिट्ठी मैं अपने पति को दिखाऊँगी। मैंने डरकर कहा—ना, ना! ऐसा मत करना। कभी चिट्ठी मत दिखाना। वह कहने लगी—अच्छा एक बार और तुमसे भेट होगी। जङ्गल मे उसी मौके पर मेरी सब चिट्ठियाँ लेकर आना मैं भी आठ बजे रात के सब लेकर आऊँगी। हाय! मैं उसी की बात मे आकर वहाँ गया। जङ्गल में तीन आदमी मुझे रास्ते में मिले। मैंने तीनो से झूठ कहा था। नव बजे रात के मुझसे उसी मौके पर वह मिली। उसने सब मेरी चिट्ठी दे दी। कहा अब हमारा तुम्हारा नाता समाप्त होता है चौबीसो चिट्ठी यहीं मेरे सामने जलाकर मुझे भूल जाव। मैंने वहीं सब जला दी। कागज की राख मेरी देह और कपड़े मे लगी थी। वह जाती बेर कह गयी कि स्वयम्बरा के साथ शादी करके तुम सुख भोगो। मेरे नसीब मे जो है सो मैं भोगूँगी। मैंने घर लौट जर कपड़े धोये। कागज की राख मेरे टब मे तैर रही थी। एडवर्ड साहब ने सबेरे वह सब देखकर दूसरा ही सन्देह किया। देवदूत के घर मे एक ने आग लगायी गोली भी मारी बात सही है लेकिन वह सब काम मैंने हरगिज नहीं किये थे।

बेरिस्टर ने पूछा—"तो तुम क्या कहना चाहते हो कि उसी दयावती ने अपने घर मे आग लगायी और पति को मारने के वास्ते बन्दूक छोड़ा था?

सिर नीचे करके दूलम ने कहा— 'खुद अपने हाथ न सही

किसी दूसरे से उसी ने यह काम कराया है और मुझे विश्वास हो गया है।"

मन मे कॉपकर बेरिस्टर वहाँ से उठे। और व्यङ्ग करके, बोले—"दुर् अभागे दूलम! एक कुल नारी पर तुम इतना बड़ा सङ्गीन अपराध लगाना चाहते हो। मैं अब चलता हूँ इस मुकद्मे मे बेरिस्टरी नहीं कर सकता। तुम तो मित्र! कोई दूसरा बेरिस्टर खोज लो। मुझे माफ करो।"

असामी से जवाब सुने बिना ही वेरिस्टर वहाँ से बड़ी तेजी से निकल गये। दूलम बड़ो गम्भीर चिन्ता मे वहीं बैठे रहे।

ग्यारहवाँ बयान।

स्वयम्बरा की दशा कई दिन से बहुत खराव हो गयी। उसकी हालत देखकर दामोदर बहुत घबराये। सबेरे ही राजनारायण को खबर देकर उन्होंने सरकारी वकील को अपने यहाँ बुलवाया। थोड़ा दिन चढ़ते ही दोनों पहुँच गये। घंटे भर बाद डाक्टर लोनर साहब भी पधारे। सब के चेहरे पर विषाद था। डाक्टर को इन लोगो के इतना उद्वेग का नया कारण नहीं मालूम हुआ। अपनी आँखों से चश्मा उतारकर पोंछने लगे।

फिर पोछ पाँछकर आँखो पर चढ़ाया और बड़े जोश में बोले-"भुईफोड़ पागल नहीं है। पागलके जो कुछ लक्षण होते हैं वह भुइँफोड़ में नहीं हैं। खास बात यह कि पागल किसी से

प्रेम नहीं कर सकता। लेकिन भुईंफोड़ प्रीति करता है। पागल यह भी नहीं समझ सकता कि कब हँसना होता है कब रोना होता है लेकिन भुईंफोड़ समझता है। खाली काम करने के डर से देह चुराकर वह पागल बना हुआ है। कुछ लोग कहा करते हैं कि जङ्गली बन्दर सब काम आदमी ही की तरह करते हैं लेकिन टैक्स देने के डर से मूक होने का बहाना किये रहते हैं यही हाल भुईंफोड़ का है। और कोई उससे कुछ बात नहीं निकाल सकता केवल दयावती ऐसा कर सकती है। पहले दिन की तहकीकात मे भुईंफोड़ ने जब दूलमसिंह पर भयङ्कर अभियोग लगाया तब सुनते ही सब अकचका गये। सबकी आँखें चढ़ गयीं लेकिन दयावती को कुछ भी विस्मय या अकचकाहट नहीं हुई। आप लोग खूब समझ लें दयावती का वह पाला हुआ चालाक बन्दर है बन्दर!

राजनारायण ने पूछा—"आपने यह बात पहले क्यों नहीं कही!"

डा०—उस घड़ी मैं कायदे से उसका पागलपन जाँच नहीं सका था। अब मैं जाँच पड़ताल करके समझ गया कि वह खुद पागलपने से आराम होना नहीं चाहता। देवदूत के घर में मजेदार खाना पाता है। बढ़िया पलङ्ग हाथ भर ऊँची मोलायम सेज भोगता है। मलकिन का आदर मान लिया है कामकाज कुछ करना नहीं चाहता। इन बातों को वह बहुत पसन्द करता है। उसको जङ्गल में घूमना, इधर उधर भटकना, देह में धूल मिट्टी

लगाना यह सब उसका काम देखकर ही लोग उसको पागल समझते हैं। कोई कोई लड़के आवारा हो जाते हैं। भुईफोड़ भी वैसाही है।

राज०—यह बातें आपने अपनी रिपोर्ट में लिखी हैं?

फिर कई बार रोष में चश्मा पोंछकर डाक्टर बोले—"मैं लिखता कैसे? खाली एक आदमी को राय से तो कोई मानता नहीं है। डाक्टरो की कमेटी बैठी थी। लखनऊ से दो बड़े बड़े डाक्टर आये थे। लेकिन वही मशल है कि काबुल में भी गदहे होते हैं। हमारे एडवर्ड साहब जो कह गये। डाक्टरो ने भी हाँ में हाँ मिला दी। एडवर्ड ने कहा भुईफोड़ पागल है डाक्टरों ने कहा हाँ पागल है। एडवर्ड साहब बोले—"कभी कभी कुछ होश मे आ जाता है। डाक्टरों ने कहा—"हाँ यह तो आना जरूर ही है। जहाँ ऐसी दशा है। अपनी बुद्धि और अपना तजरुबा किसी की खुशामद की तह मे दबा दिया जाता है। वहाँ मैं अपनी रिपोर्ट मे किस विरते पर सच्ची बात लिखने का साहस करूँ।

यही बातें हो रही थीं कि ऊपर से नोकरानी ने आकर मालिक से पूछा—"बेरिस्टर साहब जेल खाने गये थे लौट आये हैं? बहुई बहुत व्याकुल हो रही हैं कितनी अल्लम गल्लम बात करती हैं समझ में नहीं आता। हमको भेजकर पूछती हैं कि बेरिस्टर साहब आये हैं?"

अन्दर की ओर ताक कर उदास मन से दामोदर ने कहा—"हाँ हम लोग भी उद्वेग में हैं कि यूनिक साहब अब तक क्यो नहीं

लौटे हैं। जान पड़ता है उनका काम हुआ नहीं है। तुम जाकर बघुई से कहो अभी बैरिस्टर साहब आते ही होंगे।"

नौकरानी चुपचाप लौट गयी थोड़ी देर पीछे यूनिक साहब का दर्शन मिला उनका भाव देख कर सबने समझा कि ढङ्ग अच्छा नही है। यूनिक साहब अफसोस करके बोले—।

"सब किया कराया चौपट हो गया। दुलमसिंह हवालात में रह कर होश हवास खो बैठे हैं उनकी मति मारी गयी है। उन्होंने एक बात जो कही उससे मैं भी हवास मे नहीं रह सका।"

यही कह कर बेरिस्टर ने वहाँ के बैठे हुए सब आदमियों की ओर सन्देह की दीठ से देखा। लोगो ने यही समझा कि सबके सामने वह बात कहना नहीं चाहते।

दामोदर ने बड़ा आग्रह करके पूछा कि कौन बात है कहिये। सब लोग सुनना चाहते हैं। बेरिस्टर ने कहा अकेले मे कह सकता हूँ। सब लोग मुझे इसके वास्ते मुआफ करें। समय आने पर सब लोगों को बात मालूम हो जायगी।

दामोदरजी यूनिक बेरिस्टर के साथ दूसरे कमरे मे चले गये। राजनारायण सरकारी वकील और डाक्टर आपस में काना-फूसी करने लगे।

दामोदर को अकेले पाकर बेरिस्टर ने कहा—"बड़ी आफत की बात है दूलमसिंह कहते हैं कि देवदूत की स्त्री से उनकी गहरी दोस्ती ही नहीं वह उनकी उपपत्नी है। उनकी छोटी लड़की को वह अपने औरस से पैदा हुई बतलाते हैं। आप चिन्ता न करें।

अगर उनका मगज ठिकाने होता तो ऐसी असम्भव बात वह मुंह से हरगिज नही निकालते। मुझे इस पर विश्वास नही हुआ। किसी को विश्वास नही हो सकता। मैं समझता हूँ उनके सिर से जल्दी यह सनक उतर जायगी। मैं उपाय कर आया हूँ। मैं नकली क्रोध दिखाकर कह आया हूँ कि तुम्हारी बेरिस्टरी मैं नही करूँगा। तुम अपना दूसरा बेरिस्टर ढूँढ़लो।

सब सुनने पर दामोदरजी को भी याद नहीं रहा कि क्या करेंगे। उनकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। फिर सँभल कर बोले—ऐसी अनहोनी बात इस भाँति क्यो कहते हैं।

बेरिस्टर ने कहा—"इसकी वजह यही कि दूलम समझते हैं कि ऐसी बात करने से ही लोग असल अपराधी को पहचान लेंगे। वह देवदूत की स्त्री को गुनहगार बनाकर मुकदमे का विचार कराना चाहते हैं।

दामोदरजी के ऊपर मानो वज्र गिर पड़ा। मर्म्म वेदना से व्यथित होकर बोले—'ओफ! इस समय सच मुचहवास मे नहीं हैं। ऐसी कुललक्ष्मी सती पर ऐसा भयङ्कर अपराध लगाते समय उनको जरा भी लेहाज नहीं आया। ऐसी देवी अपने घर में आग लगावेगी और अपने पति का खून करने के वास्ते गोली चलावेगी। उन्हों यह भी नही सोचा कि उनके माँ बाप सुनेंगे तो क्या कहेंगे? स्वयम्वरा सुनकर मन में क्या समझेगी? राम! राम! आदमी इतना पागल होता है। कौन निर्लज्ज होगा जो किसी सती

साध्वी पर ऐसा भयङ्कर कलङ्क लगावेगा। कुछ भी लाज डर नहीं हुआ।

"सब होगा सब होगा। आप घबराइये नही दो चार दिन में वह हवास में आ जायँगे अब चलिये वहाँ लोग चिन्ता में हो रहे होंगे। यह बातें कहीं किसी से जाहिर मत कोजियेगा। दूसरी बात छेड़कर इस पर एक दम परदा डाल दीजियेगा। चलिये।"

चलते चलते बेरिस्टर ने कहा—"जरा ठहरिये। एक और बात से मैं बहुत डर गया हूँ। मुझे दूलम से मालूम हुआ कि एक दिन उन्होने दयावती से कहा कि स्वयम्बरा से व्याह करके अब अपना घर द्वार सम्हालेंगे। इतना सुनकर वह आग हो गयी। वह दूलमको छोड़ना या किसी दूसरी स्त्री के हाथ सौंपना नहीं चाहती थी। इसी ईर्षा की आग से उसने यह सब चक्र रचा है और अपने हाथों पति की हत्या करके दूलम को दुनिया से दूर कर देने का उसका मतलब है। यही दूलम का कहना है। खैर इस पाप कथा को अभी आप बिलकुल गुप्त रखियेगा। अब चलिये वहाँ हम लोगो की बाट देखो जा रही है। चलिये।

जब दामोदर बेरिस्टर के साथ अकेले में बातें कर रहे थे उसी समय दूसरे बेरिस्टर रेनियस भी वहाँ आ पहुँचे थे। वहाँ पहुँचने पर दोनो बेरिस्टरों में शेकहैण्ड हुआ। फिर उचित आसन पर सब लोग बैठ गये।

दोही चार बात करके यूनिक ने वहाँ से यह कह कर विदाई ली कि कचहरी में जरूरी काम है यह भी कहा कि दूलम के मुकदमे में भी शायद मैं हाजिर नहीं हो सकूँगा। इलाहाबाद हाईकोर्ट में हमारे एक बहूत पुराने मवक्कल का बड़ा सङ्गीन मुकदमा है। अगर उसकी पेशी पहले हो जायगी तो आने की कोशिश करूँगा।

अब दामोदर ने रेनियस का हाथ धर कर कहा—"अब तो इस विपत्ति में आप ही मेरे सहाय हो साहब। यह तो एक तरह से जवाब ही दे गये हैं दूलम के मित्र होने से मुझे इनका बड़ा भरोसा था। अब तो सब खो गया। इज्जत हुर्मत सब आपके हाथ है। आपही अब उबारिये।"

रे०—सुना है यह हवालात में दूलमसिंह से भेट करने गये थे। उनसे क्या क्या बातें हुईं आप जानते हैं?

दा०—हाँ सुना है (कपार पीटकर) सब उधर से तो चौपट हो गया है आइये आप से मैं सब कहता हूँ।

रेनियस और दामोदर जी दोनों अलग कोठरी में गये। वहाँ आँसू भर कर दामोदर ने बड़ी विनती की भोकार पारकर रोने लगे फिर धीरज धरकर वह सब बातें उन्ही से कही जो यूनिक बेरिस्टर से सुनी थीं।

सब सुनकर रेनियस को वहाँ करुणा आयी कि नही मालूम नहीं लेकिन उन्होने इतना कहा—"अच्छा मैं मित्रों से सलाह करके तब आप को बतलाऊँगा।"

जब दोनो फिर बैठक मे लौटे तब सब ने दशा देख कर यही समझा कि कोई भयङ्कर घटना हुई है। लेकिन क्या हुआ सो किसी को मालूम नहीं हुआ। सबका भाव ताड़कर रेनियस ने कहा—"बड़ी आफत है। देखता हूँ कि एक सुधारता हूँ तो दूसरा बिगाड़ता है। इस तरह जो बनाना चाहता हूँ वही आगे चल कर टूट पड़ता है। मामला दिनो दिन जटिल होता जाता है। कोई ऊँचे दरजे का जासूस पाये बिना असल मामला पकड़ना बड़ा कठिन हो रहा है। आज ही हमको एक्सपर्ट डिटेक्टिव तैनात करना होगा।"

और लोगों ने भी यही राय दी। सबकी सलाह से बेरिस्टर रेनियस एक्सपर्ट डिटेक्टिव की खोज मे चले। डाक्टर ने चश्मा पोछ कर कहा—"मेरे इस त्रिकालदर्शी आइने में सब कुछ दिखलाई देता है लेकिन आज कल के गदहे डाक्टरो की दुनिया इस समय विश्वास कहाँ कर सकती है। मुझे भी गदहों के साथ गदहा होना पड़ता है अच्छा देखें आगे क्या होता है।

चश्मा फिर नाक पर लगा कर डाक्टर वहाँ से बिदा हुए। राजनारायण अपनी कोठी को गये। वकील साहब अदालत को गये। दामोदर जी बगल वाले कमरे मे आँसू बहाने लगे।

बारहवाँ बयान

बेरिस्टर साहब ने घर पहुँच कर पोशाक बदल डाली। धोती, मिरजई और माथे पर पगड़ी रख कर खासे मारवाड़ी बन गये। उनको जासूस गेरुआ बाबा का नाम याद था घर भी उन्होंने देखा था। डेरे पर पहुँचने पर मालूम हुआ कि अब उन्होने सरकारी नौकरी छोड़ दी है। भाड़े का मकान छोड़कर अपना मकान बनाया है। उसी मे रहने लगे हैं। वहाँ पहुचे तो देखा कि आप चौपाये बनकर बकैया चल रहे हैं। एक तीन बरस का बच्चा गर्दन पर चढ़ा हाथ मे चाबुक लिये खिलखिला रहा है। लड़के के साथ घोड़े का नाट्य करते हुए गेरुआ बाबा अब नकली सन्यास छोड़ कर गृहस्थी मे आ गये है। स्त्री किवाड़ की आड़ मे खड़ी कह रही है—"तो लड़का है। घोड़ा बनने को कहता है तो क्या हरज है थोड़ी देर घोड़े सही। असामी पकड़ने के वास्ते जैसे रंग बिरंग के रूप धरा करते हो वैसे ही बालक को खुशी लाने के लिये यह भी एक स्वाङ्ग ही सही।

बेरिस्टर साहब ने समझ लिया कि बच्चे की इच्छा पूरी करने मे कुछ हिचकते थे। तभी देवी ने उपदेश देकर देवता को घोड़ा बनने पर मजबूर किया है।

बेरिस्टर रेनियस को देखते ही गेरुआ बाबा उर्फ मस्तराम *

* गेरुआ बाबा उर्फ मस्तराम का मामला १॥) पर तीन तहकीकात में पढ़िये।
मैनेजर—जासूस, बनारस सिटी।

धीरे से उठे और बच्चे को गोद मे लेकर बोले—"आइये! आइये मिस्टर रेनियस आज किधर से पधारे! प्रसन्न तो हैं।"

रेनियस मन में बहुत अकचकाये लेकिन आपही आप गेरुआ बाबा की यादगार का बखान करते हुए बोले—"आपको तो नाम भी याद है। दो तीन बार आप से भेट हुई थी। इतने वर्षों बाद वेष बदलने पर भी आपने पहचान ही लिया।

"जाव बच्चा मा के पास जाव" कहकर लड़के को भीतर करके आप बेरिस्टर के साथ बैठक में गये। वहाँ बातें होने लगीं। बेरिस्टर ने कहा—"मैं एक जरूरी मतलब से आया हूँ। दूधी वाले देवदूत की याद तो होगी।" "हाँ! हाँ! याद क्यों नही कहिये! वह तो बहुत बड़े नामी गरामी जमोदार हैं उस इलाके में उनकी बड़ी मान है।

बे०—हाँ उन्हीं के घर में आग लगाकर किसी ने उन्हें गोली मारी है। लेकिन असल अपराधी का पता नहीं लगता। सन्देह मे दूलमसिंह गिरफ्तार होकर हवालात मे बन्द हैं। वह बेचारा अपराधी नहीं है उसके जबानी एक बड़े विकट भेद की बात सुनी गयी है। एक और मेरे सहयोगी बेरिस्टर से उन्होंने हवालात मे जो बात जाहिर की है उसपर किसी को विश्वास नहीं हो रहा है। लेकिन मैं भी उनसे हवालात मे मिला तब वही बात मुझसे भी कह गये। मैं एकदम इन बातों पर अविश्वास भी नहीं कर सकता। इस मामले मे आप की मदद दरकार है।

"जो बात उन्होंने कही है जिस पर किसी का विश्वास नही हो रहा है वह तो कहिये।"

अब रेनियस ने सब असले हाल उनसे कह दिया। सब सुन-कर गेरुआ बाबा ने कहा "यह बात तो ऐसी नहीं कि जिस पर विश्वास ही न किया जाय। लेकिन बात यह कि अब मेरी नौकरी नहीं है मैं काफी दाम लिये बिना काम नहीं कर सकता।"

वे०—अच्छा इस मुकदमे मे आप क्या लेना चाहते हैं।

गे०—मैं जो चाहता हूँ वह तो आपके मवक्कल देने से रहे। अरे बहुत देंगे तो दो ढाई हजार बस ?

वे०—अच्छा मैं दश हजार देता हूँ। आप तैयार हैं खुशीसे ?

गे०—मुझे पन्द्रह हजार चाहिये एक साल की आमदनी।

वे०—अच्छा हम दिलायेंगे।

गे०—पन्द्रह हजार मिल जाय तो काम मे हाथ लगा सकता हूँ। यह भी मेरा पूरा मिहनताना नहीं है।

वे०—अच्छा यह काम आप कर दो मैं तीस हजार रुपया दिला दूँगा। बेगुनाह एक इज्जतदार की जान जा रही है। आपको मिहनताने में कोताही नहीं होगी। मुँहमाँगा पायेंगे आप।

बेरिस्टर दामोदरजी के यहाँ से करीब एक लाख के नोट लेकर चले थे। उसी मे से पन्द्रह हजार गेरुआ बाबा के सामने रखकर बोले—"आप खुशी से काम मे हाथ लगाइये।"

"थोड़ी देर ठहरिये।" कह कर गेरुआ नोटों का बण्डल हाथ में लिये भीतर गये। स्त्री से सलाह बात किया।

इधर बेरिस्टर से एक नये आदमी मिले। जिसको पहचानते नही थे। यह आदमी भीतर से आये लेकिन गेरुआ बाबा से मिलते नहीं थे। जो गेरुआ विना मूँछ दाढ़ी के लम्बे कदमे सिर के कटे हुए बाल लेकर भीतर गये थे उनकी जगह कुछ नाटे कद का साँवला बदन, महाजनो के दरवान की तरह का आदमी आया। दोनो ओर गुच्छेदार गल गोंछा, ललाट पर त्रिपुण्ड, माथे पर के लम्बे बाल पीठ तक विखरे हुए कुछ कनपटी की ओर से छाती तक लटकते हुए हँसते चेहरे के आदमी आ धमके।

बेरिस्टर से आते ही बोले—"अच्छा चलिये उस गाँव में पहले उस मकान की देखें जिसको दूलम ने देवनाथ के नाम से खरीदा था और जहाँ बरसों केलि करते रहे।"

अब बेरिस्टर का भ्रम दूर हो गया जासूस को पहचान कर प्रसन्न हुए। दोनो सुभीते के अनुसार सवारी पर जब उस गाँव मे कोठीपर पहुँचे देखा तो तीन ओर फूलवाड़ी है। फूलो के सिवाय नीवू,अनार, अमरूद सरीफा के पेड़ भी लगे हैं। मकान के दरवाजे पर ताला भरा है। अपने गुच्छे से जासूस ने ताला खोला भीतर गये तो अन्दर भी दरवाजो पर ताले लगे हुए देखे।

सब खोलकर एक एक करके घर देखे। देख चुकने पर जासूस मस्त राम ने कहा—दूलम का कहना इस मकान के विषय में सब सच है। नया पलङ्ग, नयी सेज, नयी मसहरी सब नये असबाब विलासिता का यहाँ सब सोलहो आने सरञ्जाम तैयार है। देवनाथ के नाम से इस मकान का खरीदना और दयावती को

यहाँ लाना सब सच है। लेकिन इसमे कोई आदमी नही है तब गाँव के किसो भेदिये से पता लगाना होगा।

अब दोनों मकान ज्यों का त्यो बन्द करके गाँव मे चले। गाँव बहुत बड़ा नहीं एक घर माली, एक धुनिया, दो अहीर, एक लोहार, सात आठ घर भर उस गांव मे रहते थे। दो घर पासियों के थे। गांव इतना ही बड़ा था। एक पण्डित ने अपने दरवाजे पर पाठशाला खोल रखी थी। ताड़ी की भी एक दूकान थी वही आदमी शराब भी बेचा करता था।

जासूस ने पहले एक अहीर के घर जाकर पूछा—"यह मकान किसका है जिसमें बहुत दिनो से ताला बन्द देखते हैं।"

अहीर ने कहा—"मकान तो देवनाथ बाबू का है। कुछ दिन यहाँ रहे थे। रात को गाड़ी मे एक मेहरिया आती रही। लेकिन उसका मुँह किसी को देखने को नहीं मिलता रहा।

जा०—तो देवनाथ बाबू ही उस मेहरिया के साथ रहते थे नौकर चाकर कोई नही रहा।

अ०—एक लौंड़ी दुखनो नाम की रही थी वह हमारे घर भी बैठने आती रही सरकार। हमारी बड़की फूआ वहाँ दूध देती रही फूआ कहती रही कि वह मेहरारू बहुत बड़े घर की है कोई उसका चेहरा नहीं देख पाता। कभी सात आठ दिन इहाँ रह जाती रही।

जा०—अच्छा वह दुखनी कहाँ है आजकल?

अ०—अब तो किसी के यहां काम करती होगी। बाबू जाने

लगे तब उनके साथ बहुत लगी रही लेकिन नहीं लिवा ले गये। तब लालजी माली के यहाँ माला गूथने का काम करती रही अब नहीं मालूम है कि नहीं।

जा०—लेकिन यह मकान है तो बड़े मौके का हमारे हाथ में आवेगा तो इसको खूब सजा देंगे। तुम लोग हमारे पड़ोसी होगे। इसके फल मे भी तुम लोगो का हिस्सा होगा। आप भी खाना हमको भी खिलाना। अच्छा एक बात तो बताओ ग्वाला! देव-नाथ बाबू का सकल सूरत कैसा रहा।

अ०—उनकी बात कौन सरकार दिन मे तीन बेर उनकी पोशाक बदलती रही लेकिन हमारी नजर मे जो आया सो हम कहते हैं।

अहीर ने जो हुलिया बयान की सब सुनकर बेरिस्टर रेनियस साहब सिर झुकाये हँसते रहे। ग्वाला से सब हुलिया नोट करके जासूस दुखनी लौंडी की खोज मे चले।

लालजी माली का घर पाने मे देर नहीं हुई। बेरिस्टर और जासूस दोनो नकली वेपमे थे एक अङ्गरेज और दूसरा हिन्दुस्तानी होने पर भी दोनो मारवाड़ी बने थे।

माली ने कहीं के सेठ समझ कर बड़े आदर से बिठाया और उनके खाने पीने का बन्दोबस्त करने के लिये इधर उधर कर रहा था कि जासूस ने कहा—"तुम और कुछ चिन्ता मत करो। खातिर इतनी ही कि लालाजी! तुम्हारे यहाँ दुखनी रहती है उसी से हम लोगों को दो चार बात पूछना है उसको बुलवा दो।

ला०—वह हमारे घर मे नहीं रहती सरकार। गाँवसे दक्खिन ओर सड़क पर एक मड़ई है उसी में रहती है। हमको काम लगता है तब बुला लेते हैं।

अब दोनों गाँव के दक्खिन ओर मँड़ई का पता लगाकर पहुँचे। दुखनी अकेले अपनी कुटिया मे रहती थी। देखा तो पचास बरस की होगी। चितवन से बुद्धिमती जान पड़ी पुकारते ही वह बाहर आयी थी और दो अनजाने मर्दों को देखकर उसने जो घूँघट डाला था उससे जासूस ने समझ लिया कि सङ्कोच वाली है। उसका स्थान सन्नाटे मे होने पर भी गाँव से लगा हुआ था। जासूस उसको इशारे से सामने वाले आम के बगीचे मे ले गये। उसके हाथ मे बेरिस्टर ने पाँच रुपये का एक नोट दिया। जासूस ने कहा—सच्ची बात बतलाना। सब भेद बतला देने पर इस समय और तुमको इनाम मिलेगा।

जासूस ने पूछा—"यहाँ देवनाथ बाबू जो बँगला खरीद कर रहते थे उनके यहाँ तुम नोकरी करती रही न?"

दु०—हाँ रही तो जरूर।

जा०—वहाँ कभी कभी कोई औरत गाड़ी पर आती रही।

"हाँ आवत रही।"

जा०—उसका चेहरा देखा था तुमने ?

"चेहरा तो बाबू बहुत दिन तक हम देखे नहीं पावत रही। घूँघट में सदा मुँह छिपाये आवत रही।

जा०—तो स्त्री के सामने भी ?

दु०—हाँ सरकार यही तो बड़े अचरज की बात रही। बात तो करती रही लेकिन मुँह बराबर ढाके रही। मोको बड़ा अचरज रहा मोरे मन में उनका चेहरा देखने की बड़ी साध रही लेकिन हमने कभी मुँह खोल के कहा नहीं कि देखाओ।

जा०—अच्छा तुमने चेहरा कभी देखा कि नहीं इतना ही बतलाओ। यह सब पँवारा जाने दो।

दु०—वह दिन मे तो कभी आयी नहीं सरकार। रात को आती रही। सब लोग सो जाते रहे तब उसका आना होता रहा मैं भी सो जाती रही। लेकिन एक दिन बड़ी घटा रही। बड़ा पानी बरसा बादल बिजली के मारे बड़ा दुर दिन रहा। मोको नींद नहीं आवत रही। एतने मे बड़ी हड़ हड़ गड़ गड़ हुई। मो जानों विजली फट पड़ी लेकिन देखा तो मालिक नीचे उतर आये। काशी प्रयाग वृन्दावन मो हो आयी। कोई गाड़ी बग्घी रात के बेला लालटेन के विना नही चलता लेकिन देखा तो अन्धियारे में ऊ मैहारू गाड़ी में दरवाजे पर आयी।

जा०—अन्धेरे में विलकुल।

दु०—हाँ सरकार विलकुल अन्धेरा जब मालिक ऊपर से उतरे तब लालटेन हाथ में लेके उतरे मो चुपचाप सोये सोये ताकती रही। उनकी लालटेन की रोशनी में ओही दिन मो चेहरा ओ लुगाई को देखन पाये रहो सरकार। मो उठ के सदर दरवाजे के पास गलियारे में छिप गयो।

जा०—ओही दिन देखे रही।

दु०—सुनो तो मालिक। ओह् दिन भी घूँघट काढ़े रही। लेकिन जब भीतर आइ गयी। दरवाजा पर चाभी बन्द करके मालिक भीतर आँगन मे पहुँचे तब ओने सब घूँघट उघार दिये। ओही दिन दर्शन पायो लेकिन ऐस चाँद सा मुखड़ा कबहूँ कौनो देश में नाहीं देखि पायो मालिक!

जा०—और कभी नहीं?

दु०—और भी तीन चार बार देखे रही।

जा०—बात नहीं करती रही तुमसे?

दु०—बात बराबर होती रही लेकिन मुँह घूँघट में रहता रहा। मालिक भी हमसे छिपाते रहे वह भी छिपती ही रहि आयी।

जा०—अच्छा कब कब खुला हुआ उसका मुँह खुलासा करके देखा है सो बतलाओ।

दु०—एक बार और जब मैं सोयी रही। तब अचक्के में आ गयी। मालिक खुद ओको लेके ओही घर मे आ गये। मो एक ठो खुले जंगले से चुपचाप देखत रही। ओ दिन अच्छी तरह देखे रही। मुँह, खुला, सिर, देह का गहना सब देखे रही। ओही रात के देखे रही कि नाक के पास गाल पर एक तिल रहा।

जा०—बस! बस! यह हमारे काम की चीज़ मिली अच्छा और कुछ चेहरे पर कोई खाश निशान देखे रही तो कहो।

दु०—चेहरा तो खूब देखे रही। ऐसा सुन्दर मुँह मोको जिन्दगी में दूसरा नाहीं देखि पड़ा बाबू लेकिन बायें कनपटी

के पास एक ठो लम्बा चतुश्रर रहा। और भो की दोनो भवें ऊपर से तनी हुई आकर नाक के ऊपर मिल गयी रहीं। यह कसी कमान बड़ी सुन्दर रही। आँख तो मिरगी की रही। ऐसी आँख कहाँ कोई पावे है बाबू !

दस दस रुपये के दो और नोट देकर बेरिस्टर जासूस के साथ वहाँ से बिदा हो गये।

तेरहवाँ बयान।

इस घटना के तीसरे दिन रेनियस साहब डाक्टर लोरन से भेट करने उनके बँगले पर पहुँचे वहाँ देखा तो यूनिक साहब बेरिस्टर भी गप्प ढील रहे हैं। रेनियस दोनों को चाहते थे साथही पाकर बोले—"बड़ी साइत से चले थे दोनो यही मिल गये।"

रेनियस ने कहा—"सुनो भाई यूनिक उस दिन तुमसे दूलम ने जो बातें कही थीं जिनपर तुमने विश्वास नहीं किया उन बातो का हम बहुत कुछ पता लगा आये हैं। और विश्वास भी हमने बहुत कुछ पाया है।"

व्यङ्ग से सहयोगी बेरिस्टर ने कहा "उस कहानी पर तुमको विश्वास हुआ। भाई यही गनीमत है वहाँ तो सब लोग कहते हैं कि दयावती के समान सती लक्ष्मी देववाला दूसरी हुई नहीं है।"

व्यङ्ग का असल मतलब न समझ कर डाक्टर बोले—"क्या

कहाँ उस बेचारी सती लक्ष्मी का तो नसीब अच्छा नहीं है। देवदूत की देह से एक सौ छिहत्तर छर्रें हमने निकाले हैं उनमें कई छोटे और कई बड़े थे। कई तो निकल ही नहीं सके कई जगह देह फूल उठी है। वहाँ सड़न पैदा हो गयी है। उनको सख्त बुखार है। मैं तो देखता हूँ बचेंगे नही।

बातों ही बात मे बारह बज गया। तीनो त्रिदेवा गप्प पर गप्प ढील रहे थे कि यहाँ एक नये आदमी आ पहुँचे। लाल जँघिया, काला कुरता, माथे पर मारवाड़ी पगड़ी, पगड़ी पर मोर पंख का मुकुट है। एक तारा बजाते हुए हँसते चेहरे से आ टपके। उनको देखते ही रेनियस ने सर नीचे कर लिया। यूनिक ने देखते ही अकचकाहट से पूछा—"कौन जानवर हो यार! किस जङ्गल से आये। यहाँ क्या काम है?"

उसने कहा—"मेरा नाम एक तारा बाबा लोग कहते हैं। पहले मैं बिना तिलक का राजा था अब तो यही एक तारा और बाँसुरी बजाकर भीख माँग के पेट जिलाता हूँ।"

यह कहकर जेब से सुनहली बाँसुरी निकाली और बजाने लगे। उसी मे गाया।

हरिमाया भठियारी ने क्या अजब सराय बसायी है।
जिसमे आकर बसते ही सब जग की मति बौरायी है॥
होके मुसाफिर जिसमें सबने घर सी नीव जमायी है।
भांगपरी कूए मे जिसने पिया बना सौदाई है॥
सौदा बना भूर का लड्डू देखत मति ललचायी है।

खाया जिसने वह पछताया यह भी अजब मिठाई है ॥
एक एक कर छोड़ चले हैं नित नित खेप लदाई है।
जो बचता सो यही सोचता उसकी सदा रहाई है ॥
हरिश्चन्द्र भगवत्त भजन बिन इससे नहीं रिहाई है है।

(भारतेन्दु)

डाक्टर ने पाँच रुपये का नोट इनाम मे दिया। कहा—कुछ परवा नहीं! बाबा! मौके से आ जाया करो। ऐसा भजन सुनाया करो हम लोग तुम्हारे खाने खरचे का बन्दोबस्त कर दिया करेंगे।

हँस कर एकतारा बाबा बांसुरी जेब मे रख कर एकतारा बजाते हुए चले गये। रेनियस ने पूछा—"आप लोगो ने इसको पहचाना?"

सब लोग इस सवाल से चौंकपड़े डाक्टर ने कहा—"बारि-स्टरो को चौबीसो घंटे जिरह ही सूझा करती है अरे बेचारा भिखमंगा है। माँग कर खाता है। इसमें पहचानने का कौन काम है?"

रे०—काम क्या है सो दो चार दिन में जाहिर हो जायगा। एक पागल जानवर को पहचानने से काम होने की आशा है तो एकतारा सङ्गीत जानने वाले गायक को पहचान कर काम की आशा करना अनुचित नहीं है। अब मैं जरा जेल मे जाता हूँ। मेरे मित्र सहयोगी जहाँ से निराश लौट आये वहाँ मै कुछ सफल होने की पूरी आशा कर के जा रहा हूँ।

यू०—नहीं यार उन्होने सुबूत देने से इनकार किया था

इसीसे मै लौट आया। अब मेरी राय बदल गयो है। मैं पेशा के दिन उनकी ओर से जरूर खड़ा होऊँगा।

डाक्टर भी चश्मा पोंछ पांछ कर नाक पर रखते हुए छड़ी लेकर बोले—"चलिये साहव मुझे भी अस्पताल जाना है। भुँई-फोड़ की खबरदारी करना है। वहाँ से मैं आपसे जेल मे मिलूँगा।

दोनो वहाँ से चले गये। राजनारायण और वकील साहव भी साथ ही वहाँ से रवाना हुए। जेलखाने पहुँच कर रेनियस ने बड़ी सावधानी से दूलमसिंह को कहा—'घवराना मत एक पुराने जासूस को तैनात किया गया है। मुझे अब आशा है कि तुम्हे बेकसूर छुड़ा लूँगा। एक बार मैं देवदूत की स्त्री से भेंट करने जाता हूँ।"

दू०—अरे! आप! उनसे मिलेंगे? आप मेरी ओर के बैरिस्टर हैं। आपसे वह लोग कैसे बातें करेंगे? फिर आप विदेशी साहव हैं।

रे०—नही तो मैं साहव होकर नहीं जाऊँगा। इस समय एक ज्योतिषी ब्राह्मण बन के जाऊँगा जिससे लोग विश्वास करेंगे। दयावती से मैं बातें करूँगा।

दू०—अच्छी बात है। तब कोई सन्देह नहीं करेगा (कुछ रुक कर) इस मौके पर आप मेरा एक काम कर दीजियेगा।

रे०—वह क्या?

दू०—मैं दयावती के नाम एक चिट्ठी दूँगा। आप उनको दे दीजियेगा।

रे०—अच्छी बात है तैयार है। चिट्ठी ?

दू०—मैं अभी लिख देता हूँ दो चार बात लिखना है बड़ी चिट्ठी नहीं है न प्रेम पत्रिका है।

दूलम ने उसी दम लिख कर साहब को दिया कहा—पढ़िये।

वेरिस्टर ने पढ़ा -

दयावती—तुम मेरी अकाल मृत्यु या जिन्दगी भर काला पानी भेजने का कारण बनोगी यह मैं नही जानता था। मैं बिल कुल बेगुनाह हूँ यह तुम भी अच्छी तरह जानती हो। अब ऐसा करना कि अदालत में धर्म का काँटा ठीक रहे और मेरा इनसाफ़ होवे। पहले के प्रेम का धागा भी नही टूटे। यह इस घड़ी तुम्हारे ही हाथ में है। देखना अभी दुनियाँ से सत्य धर्म्म की ज्योति नहीं डूब गयी है। सूरज चन्द्रमा भी उसी तरह उगते हैं। भगवान की सत्ता अभी वर करार है।

तुम्हारा विश्वासी
दूलमसिंह।

सिरनामा लिख कर सील मुहर कर दी गयी। वेरिस्टर ने अपनी जेब में उसे वडी सावधानी से रखा। वहाँ से चलने लगे कि डाक्टर लोरन भी पहुँच गये। दोनों मे और भी बातें हुईं दूलमसिंह से भी हामी ली गयी। फिर दोनों साहब जेल से साथ ही बाहर हुए।

चौदहवाँ बयान

कोई चार बजे संध्या के सदर सड़क से एक ब्राह्मण देवता चले जाते थे। साथ में एक साहब डाक्टर थे। ब्राह्मण के सिर पर बड़े बड़े बाल लटकते थे, लेकिन सब सनकुट। आँखों की बरौनी कान पर के जमे बाल वे सब सफेद हो गये थे। छाती तक लटकती हुई दाढ़ी जैसे सन नीछकर सजायी गयी हो।

देह मे पीलेरङ्ग का अङ्गरखा माथे पर पीली पगड़ी, ललाट पर रक्त चन्दन का त्रिपुण्ड हाथ मे रामसोटा।

रास्ते में जाते जाते डाक्टर ने कहा –"दोनो आदमी का साथ जाना ठीक नही है। बीमारी सख्त हो रही है। पहले मै कमरे मे जाता हूँ उसके बाद तुम किवाड़ खटखटाना तो कोई सन्देह नहीं करेगा।"

जब ब्राह्मण देवता देवदूत की फुलवारी के सामने पहुँचे तब संध्या हो चुकी थी। फाटक बन्द था वगीचे मे स्वेत पत्थर की कई मूर्तियाँ खड़ी थी। कोई मर्द की कोई स्त्री की हैं। गिनती में चालीस से ऊपर होगी। लेकिन बहुत दिनो से उनकी आड़ पोछ नही सब पर काई जमी है।

डाक्टर ने कहा—नगिया आ रही है। अब दरवान को पुकारना नहीं होगा। इसीसे काम बन जायगा।

नगिया देवदूत की वड़ी लड़की का नाम है। वह एक लौंडी के साथ वगीचे मे हवा खाने आयी है। डाक्टर ने ब्राह्मण को

चहार दीवारी के पास छिप जाने को कहा। आप सामने हुए। नगिया ने पूछा—बाबूजी अब कैसे हैं।"

डा०—मैं तो अभी गया नही तुम को ही देख कर रुक गया हूँ। हवा खा आयी जल्दी।

न०—जब से आग लगी तब से मन में बड़ा डर हो गया है। बाहर देर तक नहीं रहती। यही मन मे आता है कि कोई बाबू जी को गोली मारने के वास्ते आड़े मे छिपा है।

डा०—नही वह सब बात नही। खाली तुम्हारा भ्रम है। तुम्हारा दिल डर गया है। लेकिन आग बड़ी भयङ्कर रही न?

ब०—मैं जानती नही सो गयी थी। माँ ने इतना जोर से दरवाजा पीटा कि मैं जाग गयी। उसके बाद दो बार जब बन्दूक छूटो तब माँ दौड़कर बाहर गयी।

डा०—तो मा कहाँ से आकर दरवाजा पीटे रही?

न०—मुझे तो नही मालूम है। मेरी छोटी बहन सो गयी थी। मैं बैठी रही। कोई आठ बजा रहा होगा। उसी बेला मे मा मुझे जागती रह कह कर घर के बाहर गयी लेकिन मैं फिर जागती कहाँ सो गयी थी।

अरे तो बन्दूक का फैर होने पर तुम्हारी मा बाहर गयी रही तुम को आग से बचाया कौन?

न०—वही भुईंफोड।

डा०—तब तो पागल ने काम किया खाली पागल नही है वह

न०—नहीं वह हमेशा पागल नहीं रहता।

साथ की लौंडी का नाम मुलिया था। वह बोली—जाने दीजिये पागल की बात पर बहुत बात बहस का कौन काम है मालिक का बुखार बहुत बढ़ गया है आप देर मत कीजिये यहाँ।

डा०—हाँ जाता हूँ। तुम नगिया को लेकर भीतर जाकर खबर दो हम पाँच मिनट में आते हैं।

फाटक के दाहिने किनारे चहार दीवारी मे एक दूसरा दरवाजा था उसी की राह नगिया को लेकर लौंडी भीतर गयी। डाक्टर ने छिपे हुए ब्राह्मण से धीरे धीरे कहा—'सुना न तुमने। बच्चों को झूठ नही आता। इसीसे अदालत छोटे बच्चो की बात पर बहुत विश्वास करती है। नगिया कह गयी है। उस रातके आठ बजे दयावती बाहर गयी थी। दूलम भी कहते हैं उसी रात को बतलाये हुए मुकाम पर दयावती से वन मे भेंट हुई थी। बात दोनो को सही मिल गयी। सच्ची बातो में फरक कहाँ पड़ सकता है। जान पड़ता है दयावती ने अपने हाथ से आग नही लगायी न गोली ही चलाई है इसके भीतर कोई और आदमी है। मैं अब जाता हूँ। तुम कुछ देर में आना।

मकान दो मंजिला है। कोई आता है तो भी एक ही मकान मे मुलाकात होती है। बालबच्चे ऊपर ही रहते हैं। डाक्टर भी ऊपर ही चले गये। उनके आधे घण्टे बाद ब्राह्मण भी बगीचे मे घुसे। बगल वाले छोटे दरवाजे पर हाथ मारने से मुलिया लौंडी ने पहुँच कर खोल दिया।

भीतर जाकर एक रोशन कमरे मे पहुँचे। चारो ओर ताक

कर पण्डित जी ने कहा—"तुम्हारी मालकिन से हमको जरूरी काम है उनको खबर दो।"

लौंडी चली गयी। थोड़ी ही देर पर दयावती नीचे उतर आयी तब तक ब्राह्मण देवता एक छोटी कोठरी मे जा चुके थे। वहाँ किसी को न देख कर बोली—"अरे कोई नही है यहाँ तो भूत रहा है क्या ? मेरे ही ऊपर भूत भी उतरे हैं।"

इसी समय ब्राह्मण ने हँसते हुए सामने आकर कहा—"भूत नही देवी जी ! मैं हूँ साक्षात मनुष्य। जीता जागता। आग मे जल कर जो मरे हैं वह भूत नही हुए। यह दुनियाँ है झूठे की अफवाह झूठे उड़ा करती है यहाँ।

ब्राह्मण की ओर ताक कर दयावती बोली—"तो आप कौन हैं ? यहाँ कैसे आये। क्या चाहते हैं आप ?"

ब्राह्मण ने कहा—"मैं एक ब्राह्मण हूँ देवी जी ! आपसे मैं कुछ चाहता नहीं लेकिन एक चिट्ठी आपके नाम की लाया हूँ। मालिक के सामने देनेकी मनाही है। लीजिये वह चिट्ठी यही है।

चिट्ठी हाथ मे लेते ही अक्षर देख कर दयावती काँप उठी। वह पहचानी हुई लिखावट थी। काँपते हाथों से लिफाफा खोल कर मन ही मन पढ़ने लगी। पढ़ते पढ़ते चेहरा लाल हो आया। मानों सारी देह का रक्त मुख मण्डल ही पर दौड़ पड़ा। क्रोध मे भर कर बोली—"यह चिट्ठी तुमको किसने दी है ?"

ब्रा०—दूलमसिंह ने दी है।

"वह तो हवालात मे हैं

ब्रा—हाँ मैं हवालात मे गया था।

"कैसे गये हवालात मे तुम ?

ब्रा०—मैं ज्योतिषी हूँ देवी ! दीन दशा वतलाना, मुकदमे मे हार जीत, होने वाली घटना सब कह देता हूँ। दूलमसिंह की माता ने उनसे भेट करके उनका होनहार वतलाने के वास्ते मुझे भेजा था।"

"इस चिट्ठी मे क्या लिखा है सो तुमको मालूम है ?"

ब्रा०—हाँ मैंने पढ़ा है सब !

अब दयावती चिट्ठी ब्राह्मण के पाँव पर फेंककर गरज उठी। बोली—"ओफ् ! आदमी इतना नीच होता है। छिः छि शरम नही आयी। नाम लेकर मेरी वेइज्जती करते हैं ? मा बाप जैसे नाम धरते हैं स्वामी, पति जैसे सम्बोधन करते हैं वैसा आदर दिखलाते लज्जा नही आयो ! मुझे कोई रजील समझ रखा है। छि. छिः खूनी असामी घर जलाने वाला असामी मेरे ऊपर ऐसा भारी कलङ्क देने चला है। ज़बान गिर नही गयी। मुँह मे कीड़ा नही पड़ा। अगर मेरे स्वामी बीमार नही होते तो अभी यह चिट्ठी उनको दिखला देती तब आटा दाल का भाव मालूम हो जाता। तुम बूढ़े हो गये। ज्योतिषी पण्डित हो ! तुम को कुछ आगा पीछा विचार नही हुआ बड़े शरम की बात है। तुम पण्डित विचारवान होकर ऐसी नीच बातों से भरी चिट्ठी मेरे पास लाये कुछ लिहाज़ नहीं मालूम हुआ तुमको ! धिक्कार है तुम्हारी पण्डिताई को मै स्त्री जनी जाती हूँ। भले आदमी की

बेटी हूँ। धनो की घरवाली हूँ। तुम्हारे हाथ में मेरी इनगी बेइज्जती ओफ! जाव तुम अभी बाहर निकलो यहाँ ने मैं इसको नहीं पहचानती कि यह कौन है?"

गरजती हुई दयावती तेजी से उस घर से निकल गयी। और बड़ी तेजी से जीना चढ़ कर ऊपर जाने लगी। ब्राह्मण अपमानित होकर उसी गुप्त द्वार से बाहर निकला। पांच मिनट बाद ही डाक्टर लोरन रोगी के घर से निकल कर बाहर उससे मिले।

रास्ते में जाते हुए दोनों अपनी अपनी राय कहने लगे। डाक्टर ने कहा—"क्यों दूतगिरी में क्या मिला?" ब्राह्मण ने कहा—"दो फल हाथ आये। एक अपमान मिला, दूसरा मीठा रहा। मैंने चिट्ठी दी। थामते ही तेज वाली सती की तरह आग होगयी और गर्ज कर मुझे दुतकारती हुई चिट्ठी मेरे पांव पर फेंक कर चली गयी।

भवें चढ़ा कर डाक्टर लोरन ने कहा—"स्त्री चरित्रम पुरुषस्य भाग्य दैवो न जानात कुतः मनुष्या। भ्रष्टा नारी बड़ी चालाक होती है। लेकिन कौवा बहुत चतुर होता है और मैला खाता है। ऐसी स्त्री अपनी चतुराई के जाल में आप ही फँस जाती है जैसे मकड़ी अपने ही बनाये जाल से पड़ती है। पहले सेही दयावती पर मेरा सन्देह था। लेकिन गवाहो के बयान से मामला टेढ़ा हो रहा है देखकर मैं चुप रहा। अच्छा दूसरा फल मीठा क्या मिला?"

ब्राह्मण ने कहा—"दूलमसिंह का कहना सही निकला।

दयावती से उसका गुप्त मिलान सच है झूठा नहीं। दुखनी की बात भी सच्ची निकली। जयन्ती के कपार मे वह चतुअर दाग ठीक मिला। जासूस के सामने दु खिनी ने जो कहा था सो मैं दयावती के सिर में अपनी आँखों देख आया।

डाक्टर ने आँखें कपार पर चढ़ा लीं। दोनों बातें करते हुए डाक्टर के घर तक पहुँच गये थे। बँगले के पास खड़े होकर ब्राह्मण ने कहा—"अच्छा यह कहीं जाहिर करने की जरूरत नहीं है कि हम और आप साथ ही देवदूत के बगीचे में गये थे।"

डाक्टर ने इस पर हामी भरी। रातके आठ बज चुके थे। डाक्टर अपने मकान में गये और बैरिस्टर साहब वेष बदल कर हवालात को रवाना हुए।

पन्द्रहवाँ बयान

ऊपर लिखी घटना के तीसरे दिन डाक्टर लोरन के घर पर मजलिस बैठी। राजा राजनारायण राय, डाक्टर, रेनियस बैरिस्टर, फकीरी राम, और यूनिक सब मौजूद हुए। दूलमसिंह के मुकदमे में बहस मुबाहसा होने लगा। पहर रात जा चुकी थी। इसी समय पुलीस का एक सिपाही आदाब बजा लाकर सामने खड़ा हुआ। डाक्टर की ओर मुखातिब होकर बोला—

"हुजूर एक बहुरुपिया एकतारा बजा कर घर घर माँगता फिरता था। हम लोगों की उस पर चार पाँच दिन से नजर थी।

वह आदमी आज सदर सड़क पर एक दूकान के सामने एकतारा बजा कर गा रहा था। एक वयक बेहोश होकर सड़क पर गिर गया। हाथ पाँव ऐंठ गये। मुँह से गाज फेंकने लगा। कई घण्टों में भी जब वह होश मे नही आया तब आप के यहाँ हाजिर हुआ हूँ। आप उसको एक बार देख लेते तो अस्पताल भिजवा दिया जाता।

उसके बाद ही एक डोली मे वह बेहोश आदमी वहाँ पहुँचाया गया सब लोग उसको देख कर आसमान से गिरे। सब लोगो को बड़ी हमदर्दी हुई। वैसे उस्ताद की यह दशा देख कर सब दुःखी हुए।

रेनियस ने कान मे डाक्टर लोरन के कुछ कहा। डाक्टर उठ कर उसकी नाड़ी देखने लगे। चश्मा पोछते हुए सिपाही से बोले "यह तो मिरगी का बीमार है। अच्छा तुम जाव मै इसको अस्पताल भेजने का बन्दोबस्त खुद करता हूँ।"

जब सिपाही चला गया। डाक्टर ने चश्मा नाक पर चढ़ा कर राजा राजनरायण बहादुर से कहा—"वह भुईफोड़ गारद मे अकेले पड़ा है इसको भी उसी मे रखना होगा।"

इसी के अनुसार काम हुआ। एक अलग कमरे मे भुईफोड़ और यह भक्त भगवान दोनो मिरगी वाले रखे गये। लोरन साहब रोज वहाँ जाकर उनका इलाज करने लगे। दोनों का इलाज होने लगा। दोनो मे मिताई भी खूब बढ़ गयी।

सोलहवाँ बयान

वेरिस्टर की दूतगिरी का सब हाल सुन कर दूलमसिंह बड़े चिन्तित हुए। अब उनके मन मे इसकी बड़ी फिक्र हुई कि कैसे दयावती के मुँह से सच्ची बात कहलायी जा सकती है। बहुत कुछ सोच विचार के बाद एक दिन उन्होंने मुखराम जेल वाले को बुला कर कहा—"तुमको बीस हजार और हम देंगे मुखराम! एक रात के मुझे दस बजे से चार घन्टे की छुट्टी दरकार है। मैं दो बजे जरूर लौट आऊँगा। यही चार घन्टे मैं हवालात से बाहर रहना चाहता हूँ।" मुखराम के मुँह मे बीस हजार पर पानी भर आया लेकिन बोला—"बात बड़ी टेढ़ी है। अगर कोई आगया तो मेरी जान नहीं बचेगी।" फिर रुक कर बोला—"कुछ परवा नही मैं आपके वास्ते जान दे दूँगा। एक उपाय है। आपके कमरे के बगल वाले घर में एक कैदी आया है। उसका कोई कसूर तो नही है लेकिन वह बड़ा जॅगरचोट्टा है। काम धाम करना नहीं चाहता। योंही घर घर माँग कर खाता फिरता है। अनार चुराने के कसूर में उसको सजा हुई है। अगर वह भागना चाहे तो उपाय हो सकता है। उसके घर की ओर से आप निकल सकते हैं। मै एक सब्बल दूँगा वह उसी से दीवार खोद कर भागे तो आप भी उसमे से बेखटके जा सकते हैं।"

यही सलाह ठीक ठहरी। दूलम मुखराम के साथ उसके घर मे जाकर सब कह चुके तब वह राजी नही हुआ। बोला—"यहाँ बड़ा मजा है। दोनो जून खाने को मिलता है। अनार चुराने

मे बहुत होगा तीन महीने की सजा होगी तीन महीने तो मौज रहेगी फिर देखा जायगा। मुझे क्या जरूरत है भागने की। मैं नहीं भागूँगा।

इस पर दूलम ने कहा—"देखो जी तुमको मैं एक हजार रुपया देता हूँ तुम लेकर कहीं दूर देश चले जाव मौज करो। तुमको कोई नहीं पूछेगा। कोई जानने भी नहीं पावेगा। चल दो तुम यहाँ से।"

अब हजार रुपये पाकर वह राजी होगया। उसी दिन दूलम ने इक्कीस हजार रुपया मँगाया। और दोनो को दिया। कैदी दीवार फोड़ कर बाहर निकला। दूलम भी उसके साथ ही हवालात से बाहर हुए।

सत्तरहवाँ बयान

उसी रात के ग्यारह बजे दूलमसिंह देवदूत की फुलवाड़ी मे पहुँचे। द्वार पर हाथ मारा। एक दासी ने पहुँच कर किवाड़ खोले वह पुरानी लौंडी मुलिया थी। उससे दूलम ने कहा "अपनी मालकिन को खबर दो। एक भले आदमी भेट करने आये हैं।"

मुलिया खबर लेकर गयी लेकिन लौट कर बोली—"मालिक की बीमारी बढ़ गयी है। लड़की भी मरन सेज पर है। मालकिन किसी से भेट नहीं कर सकती।"

दूलम ने कहा—"फिर जाकर बोलो। मुकदमे की हालत

खराब है वह आदमी उसीके बारे में जरूरी काम के वास्ते आया है। मुलाकात किये विना नही बनेगा।"

मुलिया फिर गयी। जब उसने सब कहा तब मालिक के सामने उसे न बुला कर दयावती खुद नीचे उतर आयी। आते ही दूलम को देख कर चौक गयी। बोली—"अरे तुम हवालात मे न हो ?"

दू०—हॉ मैं हवालात मे हूॅ। तुम तो समझती हो कि मैं सदा हवालात मे ही रहूॅगा या फॉसी पर लटक जाऊॅगा। और तुम एक बेगुनाह को जाली मुकदमे में फॉस कर आप मौज करोगी। लेकिन याद रखो दयावती धर्म्म की दुहाई अभी गयी नहीं है। अभी सूरज और चॉद वैसे ही उगते हैं। संसार मे सत्य की विजय जरूर है। धर्म की ऑख में धूल झोक कर तुम जीत नहीं सकोगी।

चौंक कर दयावती बोली—"तुम बेगुनाह हो ? तुमने मेरे घर मे आग नही लगायी है ? तुमने मेरे मालिक को गोली नहीं मारी है ? तुम बेगुनाह हो तो गुनहगार कौन है ?

दू०—देखो फिर भी मैं कहता हूॅ। धर्म्म को डरो। भगवान का भय करो। मैं बेगुनाह हूॅ यह तुम खूब जानती हो तुम वही दयावती हो मैं वही दूलम हूॅ। क्यो इस तरह बेदरदी कर रही हो?

बिगड़ कर दयावती बोली—"मैं क्या जानती हूॅ। कैसे मैं बे दर्द हो रही हूॅ। क्या बे दर्दी करती हूॅ मै। तुम हवालात से

भाग के आये हो। एक कसूर कर चुके। अब डवल अपराध किया है तुमने। मैं अभी पुलीस को खबर देती हूँ।

दू०—दयावती ! दयावती !

द०—वस फिर वही वात तुम नाम लेकर पुकारते हो ?

दू०—तुमने भी तो पॉच वरस तक मेरा नाम लेकर पुकारा है।

अब और बिगड़ कर बोली—"वस अब तुम सिर मत्त चढ़ो। इतनी ढिठाई ! मेरे घर में आकर ! मैं इसी दम मालिक को खबर देती हूँ।"

दू०—यह सब ढिढाई तुम्हीं ने सिखलायी है दयावती ! देखो ! तुम पॉच वर्ष तक मेरे प्रेम मे पागलिनी थी। मैं भी तुम्हारे वास्ते पाँच वर्ष तक पागल रहा हूँ। वह प्रेम पाक मुहब्बत नही थी यह मैं जानता हूँ। अगर मेरा कुछ कसूर है तो इतना ही कि एक परायी स्त्री को प्रेम की निगाह से देखा लेकिन इसका कारण खुद तुम्ही हो। मेरे नाम की प्रेम पत्रिका पहले तुम्हीं ने लिखी थी। मैं हलफ लेकर कहता हूँ दयावत्ती घर मे आग लगाने या गोली मारने दोनो मुकदमे में मै बिलकुल वे गुनाह हूँ।

दू०—(भवें तानकर) फिर मैं कहती हूँ दूलमसिंह ! तुम अगर वे गुनाह हो तो गुनहगार कौन है ?

दू०—गुनहगार तुम हो या तुम्हारा भुईफोड़ है। तुम दोनों ने सलाह से या सलाह करके किसी तीसरे से यह काम कराया है उसी ने खर मे आग लगाकर गोली मारी है। अब वह कसूर

तुम हमारे कपार पर थोप रही हो। सच कहो दयावती तुम्हारी हमारी मुहब्बत का यही नतीजा है ?

अब दयावती कुछ नरम हुई बोली—"इतना जोर से मत बोलो दूलमसिंह तुमको मैं चाहती हूँ। मेरी छोटी लड़की तुम्हारी है। उसका चेहरा तुम्हारे ही चेहरे सा है। उसी को लेकर मैं तुम्हारे साथ भाग चलूँगी। रुपये की कमी नही होगी। तुम बड़े आदमी धनी के बेटे हो। मैं भी धनी की स्त्री हूँ। वहाँ हम तुम परदेश मे मौज से रहेंगे। यहाँ की अदालत या पुलीस तुमको पा नही सकेगी। हमारी तुम्हारी मुहब्बत की बात किसी को दुनिया में मालूम नहीं होगी। तुम राजी हो जाव। स्वयमवरा से शादी मत करो। हमको लेकर चल दो। मैं स्वामी की माया छोड़ दूँगी। कन्या और धन दौलत का मोह छोड़ दूँगी। अगर छोटी लड़की को ले जाने मे पकड़े जाने का डर हो तो उसको भी छोड़ दूँगी। तुम्हीं को लेकर तुम मे ही मैं लीन हूँगी। पाँच वर्ष जो मुहब्बत रही है, जिसमे मैं डूबी थी उसको मैं भूल नहीं गयी हूँ। तुम्हारी वह मुहब्बत अगर—"

इसी समय पास वाले दरवाजे के खुलने की आवाज आयी। इधर प्रेमिका और प्रेमी दोनो ने देखा तो सब खौरा खपटा लग गया। सामने ही देवदूत पिस्तौल ताने द्वार पर खड़े हैं। शरीर से टूट गये हैं। खड़े नहीं हो सकते। ऊपर से जोर का बुखार है। सारी देह उघार है। बिछौने की मोटी चादर देह मे लपेटे काँप रहे हैं।

एक अजनवी ने उनकी स्त्री को पुकारा वह नीचे उतर आयी। सन्देह मे पड़कर देवदूत पिस्तौल लिये उतर आये हैं।

देखते ही दूलम देवदूत के सामने जा खड़े हुए बोले—"तुम मारने आये हो तो लो मुझे मारो गोली। तुम्हारी स्त्री की बातों में पड़कर उसी की मुहब्बत मे उलझ कर मैंने एक दो दिन नहीं पूरे पॉच वरस तक काटा है। तुम्हारी स्त्री यही कलङ्किनी दयावती इसी की बात मे पड़कर सब किया है। इसने चाहा कि तुम्हें जान से मार कर मेरे साथ सुख की जिन्दगी बितावे। इसी मतलब से इसने खुद गुण्डा तैयार करके तुम्हारे घर मे आग लगवायी है उसी से तुमको गोली मरवायी है। और यह सब संगीन अपराध अब मेरे कपार पर थोप रही है। तुम मुझे मार डालो। मारो गोली हमको अब देर मत करो।"

देवदूत थर थर कॉप रहे हैं। काँपते हाथो से पिस्तौल छूटकर गिर गया। वह खुद भी काँपकर धरती मे मुँह के बल गिर गये। एक दम गिरकर बेहोश हो गये। ढङ्ग खराब देखकर दूलम जी लेकर भागे। दयावती के भी हवास उड़ गये।

अठारहवाँ बयान।

मुकद्दमा जब चालान हो गया। पहली ही पेशी मे पुलीस ने सबूत जुटाने के वास्ते तीन हफ्ते की मुहलत ली थी।

तीसरी पेशी मे दूलमसिंह पर बड़ी आफत आयी। मुद्दई की ओर से सरकारी वकील और असामी की ओर से दो बेरिस्टर

पैरवी को खड़े हुए थे। इजलास पर लोगों की खमखम और कसमस के मारे पीठ पर पीठ छिलती थी। जाबते से इजहार और गवाहों का बयान लेने पीछे हाकिम ने देवदूत के जवानी उनका वयान लेने की इच्छा जाहिर की।

देवदूत खाट पर पड़े थे लेकिन जज साहब की आज्ञा मान कर पालकी पर कचहरी लाये गये। दो नौकर दोनों ओर से थाम्ह कर उन्हें इजलास पर हाकिम के सामने ले गये। देवदूत उन्हीं के बल पर बड़ी कठिनता से किसी तरह खड़े हुए। उनसे हाकिम ने पूछा—"किसने आपकी हवेली में आग लगायी और किस आदमी ने आपको गोली मारी यह आप बता सकते हैं? देवदूत ने जवाब में कहा "पहले तो मैंने उस आदमी को नहीं पहचाना लेकिन बाद को जब वह भागा तब मैंने पहचाना कि वह दूलमसिंह थे।"

उस समय अदालत में दूलमसिंह के जो परिचित आदमी खड़े थे उन लोगों को मनमे तो हँसी आयी लेकिन जाहिरा उन्होंने बड़ा अफ़सोस दिखलाया। हँसने का मतलब उन लोगो का यही समझना था कि इस बात से उनका मुकद्दमा बिगड़ जायगा।

लेकिन दूलमसिंह के बेरिस्टर ने खड़े होकर जिरह किया। पूछा—पहले आपने बयान मे कहा था कि किसने आग लगायी किसने गोली मारी उसको आप पहचाने नहीं न देखा था। लेकिन अब कहते हैं कि पहचाना था कि वह दूलमसिंह है।

आपकी इन दोनो बातो में से कौन सी बात सही है? उस समय आपके मन मे क्या आया था?

देवदूत कॉपने लगे। उनके मुँह से कोई बात नहीं निकली। तब दूसरे बेरिस्टर ने उठकर पूछा "मालूम होता है उस वक्त आपका हवास ठीक नहीं था। अगलही देखकर हिप्नोटाइज्ड हो गये थे। जब वह मोह दूर हुआ। तब आपने दूलमसिंह को देखा होगा क्यों?

इतना सुनने पर सब लोग हँस पड़े। बेरिस्टर के इस व्यङ्ग पर देवदूत सन्नाटा खींच गये। कॉपते हुए वही बैठ गये। पास मे गलीचा रखा था। उसी पर बेहोश हो गये। लोगो ने उन्हे उठाकर दूसरे कमरे मे पहुँचाया। और उनका पङ्खा पानी होने लगा।

एडवर्ड साहब मेजिस्ट्रेट के इजलास पर मुकदमा था। थाने के पास ही एक मकान मे एडवर्ड साहब का डेरा था। जब रात के राय बहादुर राजनारायण को देवदूत के घर में आग लगने की खबर मिली उस समय उन्होने सम्वाद देनेवाले को थाने मे जाने को कह दिया था। पुलीस मे खबर देकर मेजिस्ट्रेट का इत्तिला भेजी। दारोगा के साथ उन्होने राजनारायण से भेट किया। एडवर्ड साहब से दूलमसिंह की दोस्ती थी। इस दोस्ती से मुकदमे को हलका न करके खुद इसमे मुदई बनकर खड़े हो गये। इस वास्ते वह मुकदमे का फैसला तो कर नही सकते थे।

जिलाधीश के इजलास पर मुकदमा शुरू हुआ। एडवर्ड साहब उस मुकदमे के तहकीकाती अफसर रहे।

पहली तहकीकात उन्हीं के द्वारा हुई उनके विचार से दूलम सिंह पर ही सब अपराध आ पड़ा। यह पाठको को ज्ञात हो चुका है। प्रधान मेजिस्ट्रेट के इजलास पर जब मुकदमा शुरू हुआ था तब हर रोज हर मौके पर एडवर्ड साहब वहाँ मौजूद रहे। जब घायल देवदूत इजहार देने के वास्ते इजलास पर पहुँचाये गये तब एडवर्ड साहब उत्साह से फूल गये थे। जब देवदूत गिरकर बेहोश हो गये तब तो एडवर्ड साहब की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा।

जब बेहोशी मे वह इजलास से हटाये गये तब तीन गवाहों के बयान हुए। असामी के वकील और बेरिस्टरों ने हर एक से काफी जिरह की थी।

पहला गवाह था देवदास उसने तहकीकात के समय जो बयान दिया था वही अदालत मे भी कह गया। कहीं कहीं उस बयान मे फरक आया और वही पर यूनिक को जिरह का मौका मिला। जिरह और उनके जवाब यहाँ दिये जाते हैं—

बे०—उस दिन किस महीने की कौन तारीख रही तुमको याद है?

दे०—तारीख तो ठीक याद नही लेकिन महीना असाढ़ का था। आठ दस दिन बीता रहा होगा।

बे०—जब तुमने दूलमसिंह को देखा तब रात कितनी गयी थी ?

दे०—उस दिन बड़ा कुदिन था। बादल बूंदी से मैं नहीं कह सकता कि कितने बजे रहे।

"ठीक न सही कुछ अन्दाज है।"

दे०—मैं ठीक नहीं कह सकता। पहर रात गयी हो या इस से कम हो या ज्यादा हो।

बे०—अच्छा उस दुर्दिन मे उतनी रात के तुम वहाँ करते क्या थे ?

दे०—मैं—मैं तो वहाँ। मैं वहाँ गया नहीं मेरे महाल का चौकीदार मुझे उधर लिवा ले गया था।

बे०—वहाँ गये नही चौकीदार बुला ले गया इसका क्या मतलब है ?

दे०—चौकीदार सरकारी आदमी है उसके पुकारने पर जाना ही होता है। .सी से मैं गया था।

बे०—तो तुम गये नही यह बात तुम्हारी झूठ है ? अच्छा तुमने जब दूलम को देखा तब चौकीदार तुम्हारे साथ रहा ?

दे०—नः।

बे० - यह तो बड़े अचरज की बात है जो तुम्हें बुला ले गया वही तुम्हारे साथ नहीं रहा तुमको पानी मे छोड़ कर चला गया तो तुम वहाँ रहे किस वास्ते ? चौकीदार वहाँ रहने को कह गया था।

दे०—नाः ।

बे० ओ......तब तो ठीक ही है कन्धे पर बन्दूक धरे दूलम सिंह उस रास्ते से आवेंगे यह तुमको शायद पहले से मालूम रहा ? तभी न तुम पानी में वहाँ खड़े रहे । दूलम को देखने के वास्ते वहाँ खड़े रहे क्यों ? अच्छा वहाँ से बाँध कितनी दूर है ?

दे० होगा कोई एक रस्सी ।

बे०—हाँ एक रस्सी ! कितने हाथ की रस्सी होती है ?

दे०—मुझे मालूम नहीं लेकिन जमीन नापने वालों से जमीन नापती बेर रस्सी जरीब सुना है ।

बे०—आस्मान में चन्द्रमा उगा रहा ?

दे०—नहीं ।

बे०—हाँ बादल रहे । बड़ा अन्धेरा रहा । एक रस्सी दूर से तुमने पहचाना जूते का रङ्ग रूप पहचाना क्यों ?

दे०—नहीं चलने की फच फच आवाज से जूता पाँव में है अनुमान किया था ।

बे०—एक रस्सी अस्सी हाथ दूर से तुमने उस अन्धेरे मे दूलमसिंह को पहचाना कि जूता पहने बाँध पर से जा रहे हैं ।

दे०—अस्सी हाथ नहीं मैं समझता हूं आठ दस हाथ दूरी पर दूलमसिंह बाँध पर से जा रहे थे ।

हाकिम के मुँह की ओर देख कर हँसते हुए बेरिस्टर यूनिक साहब ताने से बोले—"ऐसे गवाह की बात पर एक भले आदमी को असामी कहना अङ्गरेजी कानून के अनुसार है यह मैंने

आज ही समझा।" फिर गवाह की ओर ताक कर गम्भीर भाव से बोले—अच्छा इस वक्त तो तुम जाव लेकिन मुकद्मा खतम होने पर तुम्हारी एक बार और मुझे जरूरत होगी, उस वक्त पुलीस तुम्हारी निगरानी करेगी। जाव अब तुम घर चले जाव लेकिन भागना मत।

गवाही के कटघरे से उतर कर देवदास इजलास से बाहर निकल गया। पनारू नाम का दूसरा गवाह कटघरे में आया।

जब उसका बयान होगया यूनिक साहब ने उससे जिरह की

"अच्छा पनारू! उस पानी बूँदी और महा अन्धियारी मे उस रात के तुम जङ्गल में बैठे थे। एक आदमी को आते देख कर पेड़ की आड़ मे छिप गये तुम्हारे मन मे किस बात का डर हुआ था।"

प०—मैंने समझा कि चोर डाकू है तो मुझे मार डालेगा। इसी डर से मैं छिप गया था।

वे०—चोर डाकू तो माल मारने के वास्ते यह सब करते हैं। तुम्हारे पास क्या बहुत दामी माल था रुपया बहुत था जो इस तरह डर गये?

प०—हम गरीब आदमी हैं। हमारे पास रुपया या दामी चीज़ कहाँ साहब?

व०—तब क्या किसी थकेमाँदे को जो जङ्गल में बैठा हो मार कर खा जाना चोर डकैत का काम है?

प०—क्या जानें साहब चोर डाकू है कि भूत प्रेत है अन्धेरे मे

वहाँ सुनसान जङ्गल में भूत चुडैल पिशाच घूमा करते हैं यह तो हम छोटे पन से ही सुनते आते हैं।

बे०—अरे तब तो तुम भूत पिशाच के डर से ही छिपे रहे। लेकिन वहाँ दूलमसिंह को देखकर तुम्हें साहस हुआ और आड़ से निकल कर सामने उनके आये। लेकिन तुम्हारे भीतर भूत पिशाच का इतना भय भरा था कि पहचान नही सके। जान पड़ता है तुम को दृष्टि भ्रम हो गया। तुम्हारी आँखें चकचौंधिया गयीं क्यो ?

प०—हाँ साहब चकचौंधी तो लग गयी थी जरूर। ऐसे मौके पर भूल होना .. ..

बे०—बस ! बस ! तुमको और कुछ नहीं कहना होगा तुम जाव। तुम बे कसूर हो अब यहाँ कुछ काम नही तुम्हारा।

पनारू वहाँ से चला गया। उसकी जगह तीसरा गवाह पुकारा गया और मुसम्मात दरपी कठघरे में आ खड़ी हुई।

बेरिस्टर ने एक बार हाकिम की ओर फिर दर्शक मण्डली की ओर देख कर दरपी की ओर ताका। पूछा—"अच्छा दरपी बहन ! यह तो बतलाओ जिसको देख कर तुम्हारा खच्चर भड़क गया उसको देखकर तुमको डर नही हुआ। स्त्रियों को यहाँ की स्त्रियों को तो अपनी परछाईं देख कर डर लगता है स्त्री तो गधे से भी अधिक डरपोक होती हैं यहाँ ! तुमको डर नहीं हुआ ?"

द०—गदहे ने जिसे देखा उस को मैं उस घड़ी देख नहीं सकी !

वे०—मैं समझता हूँ बन्दूक लिये हुए दूलमसिंह को देख कर ही तुम्हारा खच्चर भड़का था। तुमने उनको नहीं देखा तुम्हारे खच्चर ने देख लिया। फिर तुमने दूलमसिंह को देखा उनको पहचाना। अच्छा दूलमसिंह ने जब तुम्हारा बोरा खच्चर पर लाद दिया तब कितनी रात गयी रही होगी।

द०—उस अन्हारी बारी मे ठीक तो नहीं जान पड़ा लेकिन आधी रात का अमल रहा होगा।

वे०—अभी तुमने हाकिम से कहा नव बजा रहा। हमसे कहती हो आधी रात। तुम डरो मत सच्ची बात याद करके कहो।

द०—सच्ची बात ही हमने कहा है। आधी रात के कितना बजता है यह हमको मालूम नहीं है।

वे०—अच्छी बात है देखो बारह बजे रात के आधी रात होती है। तुम जानती नहीं इसी से रात का अन्दाज ठीक नहीं बतला सकती हो चिन्ता नही जिधर तुम गयी उधर को आगे आगे दूलमसिंह गये वह किस तरफ को गये ?

द०—जिधर बन है उसी ओर से हम लोग घर आते हैं वह दक्खिन भी कहलायगा पूरब भी,

वे०—अच्छा देवदूत का मकान उस बन के किस ओर है जानती हो ?

द०—देवदूत जी की ही जमीदारी मे हम लोग रहते हैं उनका मकान बन की ओर नहीं है ? न उनके मकान के पास कोई बन है।

अब बेरिस्टर ने हाकिम से कहा—अगलही के मामले से इस गवाह के बयान का कुछ सम्बन्ध नहीं है। इसको गवाही में यहाँ लेना ही मुनासिब नहीं है। दूलमसिंह किसी बुरे इरादे से उस बन की ओर जाते तो उनके दिल में दया माया नहीं होती न इस स्त्री की हालत पर दयाकर उसका बोरा खच्चर पर लादते। वैसे मौके पर गदहे या स्त्री की ओर वह ध्यान नहीं दे सकते थे। यह कभी नव बजे कभी आधी रात कहती है अगर आधी रात ही मान लें तो अगलही के बहुत पीछे दूलम से इसकी भेट हुई थी। जो आदमी आग लगाने और गोली मारकर खून करने का कसूर करके आया है वह इस तरह दया परबस होकर वहाँ उपकार करने नहीं जायगा उसको तो किसी तरह भागकर छिपने ही की चिन्ता रहेगी। इन बातों से साफ जाहिर होता है कि दूलमसिंह किसी तरह इस सङ्गीन कसूर के असामी नहीं हो सकते। इसके सिवाय इस इलाके के सब लोग जानते हैं दूलम सिंह बहुत बड़े आदमी और भलेमानस हैं। उनकी चाल-चलन बहुत अच्छी है ऐसे सज्जन से ऐसा अपराव नहीं हो सकता। ऐसी चाल-चलन के सज्जन पर ऐसा कसूर सपने में भी नहीं लाया जा सकता।

चुपचाप हाकिम सुनते रहे। उन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया रूपी वहाँ से बिदा होगयी।

इसके बाद दूलम ने शान्त गम्भीर भाव से खड़े होकर उस रात के जहाँ गये थे सब बयान किया। लेकिन जिस बात से

दयावती के चरित्र पर दोष आता था वही भाग उन्होने छिपा रखा। उनकी गम्भीरता और बेलाग बयान देख सुन कर सब लोग अवाक हो रहे। ऐसे संगीन अपराध लगने पर भी उनको घबराहट नही हुई। किसीको ऐसा विश्वास नहीं हुआ कि उन्होने ऐसा कसूर किया है।

हाकिम ने सब सुन कर थोड़ी देर तक सोचा फिर शरिस्तेदार से बोले—"गवाहो के बयान से तो इतना ही मालूम हुआ कि उन्होने दूलमसिंह को देखा था। लेकिन उनको आग लगाते या गोली मारते तो किसी ने नहीं देखा। केवल भुईफोड़ ने देखा लेकिन उसको यहाँ क्यो पेश नहीं किया गया?"

शरिश्तेदार से तो इसका कुछ जवाब नही बना वह मन में कुछ सोचते हुए मुद्दआलेहोके वकील बेरिस्टरा की ओर ताकने लगे। एक वकील ने हाकिम को अभिवादन करके कहा—सुना जाता है कि भुईफोड़ पागल है। ऊपर से उसको मिरगी आती है। डाक्टर की राय से वह इलाज के लिये अस्पताल भेजा गया है। पागल का इजहार लेना आईन से निषिद्ध है इसी कारण वह यहाँ पेश नहीं किया गया है।

हा०—जिस डाक्टर ने उसको पागल बतलाया है उसको यहाँ पेश करना था। अगर वह पास नहीं हो तो शीघ्र उसका सरटिफिकेट पेश होना चाहिये।

वकील—घायल देवदूत का जिस डाक्टर ने इलाज किया है, उन्होंने उस भुईफोड़ को पागल बतलाया है। वह यहीं रहते हैं।

अदालत मे मौजूद हैं। आपका हुक्म होने से सामने आ सकते हैं। उनका नाम डाक्टर लोरन है।

प्रसन्न होकर मेजिस्ट्रेट ने कहा—"डाक्टर लोरन! अच्छी बात है उनको लाया जाय।"

हुक्म सुनते ही डाक्टर लोरन ने सामने आकर सलाम किया। हाकिम ने उनको गवाह के कठघरे मे खड़ा होने को कहा। उनको हलफ दिया गया। नियमानुसार कार्य्य होने पर हाकिम ने खुद पूछा—"भुईफोड़ नाम का लड़का जो इस मुकदमे मे चश्मदीद गवाह बनाया गया है। वह पागल है आपने जॉचकर देखा है?"

लो०—जी हॉ! मैंने कई बार उसको ज वा है। पागल के जो लक्षण हैं वह सब मुझे तो उसमे नहीं मिले है लेकिन बुद्धि कुछ कम है। बात करने की शक्ति भी कम है। जो बात पूछी जाती है उस पर ध्यान न देकर अलाय बलाय बकता है। बात करने में विकलाङ्ग हो जाता है। जैसे पक्षाघात का रोगी हो। ना समझ लोग उसको देखकर पागल कहेंगे लेकिन पागलो के लक्षण उसमें कुछ नही हैं।

डाक्टर का बयान सुनकर हाकिम फिर गम्भीर हुए। उन्होने भुईफोड़ को हाजिर होने का हुक्म लिखा। डाक्टर गवाह के कटघरे से उतर गये। अस्पताल पासही था। थोड़ी ही देर पर सिपाहियो के पहरे में भुईफोड़ हाजिर हुआ।

हाकिम ने उसको अच्छी तरह देखा। पागल नहीं है उनके

मन मे भी धारणा हुई। कठघरे में वह हाजिर किया गया। यथा रीति हलफ दिया गया। ऐंठ ऐंठ कर उसने हलफ लिया।

तहकीकाती अफसर के सामने उसने जो बयान दिया था यहाँ भी लगभग वैसाही कहा। बीच में एकाध जगह खिलाफ बयान हुआ। उसने कहा—रात को सोता नहीं। देवदूत के सदर बरांडे पर ग्यारह बजे रात को खड़ा था। लकड़ियों की आड़ से निकल कर डूलम ने दियासलाई से लकड़ी जलाई। पुआल मे आग लगा दिया। आग बढ़ गयी। धीरे धीरे ऊपर महल के जंगले पर पहुँची। उसने मालिक को खबर दी। मालिक नीचे उतर पड़े। सदर दरवाजा खोलकर बाहर हुए बन्दूक का फैर हुआ। दूसरा फैर हुआ। मालिक गिर पड़े। मालिक की दोनो लड़कियो को आग से बचाया। मालिक को भी फुलवाड़ी में पहुँचाया इत्यादि।

कही कही बयान में अन्तर पड़ा। सब लोग नही लेकिन यूनिक साहब ने नोट कर लिया था। उन्होंने जिरह की। हकला हकलाकर भुईफोड़ ने जवाब दिये लेकिन जवाब मे फरक पड़ा। बेरिस्टर ने हाकिम की ओर देखा। हाकिम ने बेरिस्टर का भाव समझा उस समय उनका भुईफोड़ के बयान पर कैसा विश्वास हुआ यह तो जाहिर नहीं किया लेकन बेरिस्टर से बोले—"अभी इसके बयान मे कुछ स्थिरता नहीं है यह भी जाहिर है कि यह असल मे पागल नहीं है। इसको बेहतर है कि अभी अस्पताल भेजा जाय जब वहाँ यह ठिकाने से हो जाय तब फिर अखीर फैसले के समय इसका बयान लिया जाय।

अब मुईफोड़ अस्पताल भेजा गया।

अखीर फैसले के समय इसका बयान हो हाकिम से इतना सुन कर लोगों ने समझा कि अभी मामला बहुत आगे जाने वाला है। दूलम की रिहाई अभी दूर है।

हाकिम थोड़ी देर तक हंस को पॉख (क्वीलपेन) दॉत से दबाये सोचते रहे। फिर बोले—देवदूत की स्त्री दयावती का बयान यहॉ दरकार है। या तो वह पालकी पर इजलास में लायी जाय या कमीशन उनके घर पर जाकर गवाही लेवे। दोनों ओर के वकीलो ने कमीशन से गवाही लेना उचित बतलाया और उसकी तारीख उसी दिन डालकर उस दिन मुकदमा मुलतवी किया गया

दूसरे दिन मुकदमा पेश हुआ। अव्वल वक्त दूलमसिंह की ओर से कई नये कागज नत्थी मे शामिल हुए। कमीशन की रिपोर्ट पढ़ी गयी। रिपोर्ट मे काम की कोई बात नही मिली।

सदर द्वार पर शोर गुल सुन कर के नीचे उतर गयी। घर भर उजियार था। सदर दरवाजा खुला था। द्वार के पास ही हमारे मालिक बेहोश पड़े थे। आदि बातें दयावती के मुँह से निकली। भले घर की स्त्री कह कर वकीलों ने अपने जिरह बन्द रखे। इतना सुन कर हाकिम ने असामी के बेरिस्टर की ओर देखा।

इसके बाद बेरिस्टर की बहस हुई। कहॉ सत्य है, कहॉ रञ्जित है, कहॉ सजाया गया है, कहाँ सिखलाया गया है। कहॉ कहॉ सॅवार सुधार किया गया है दोनो बेरिस्टरों ने हाकिम को कह

कर बतलाया लेकिन वहाँ कुछ इसकी दाद नहीं दी गयी। बेरिस्टरो ने यहाँ तक कहा कि भुईफोड़ ने सब सिखाई पढ़ाई बातें कही हैं। लेकिन कुछ फल नही हुआ।

मुकदमा बड़ा सङ्गीन है लेकिन गवाहों की बातें वजनदार नहीं हैं। आग लगायी गयी गोली चलायी गयी। भुईफोड़ ने यह सब अपनी आँखो देखा था दयावती ने भी सदर द्वार पर पहुँच कर स्वामी को बेहोश पाया था इन बातो पर सन्देह करके भी हाकिम ने मुकदमा सेशन सुपुर्द कर दिया।

उन्नीसवाँ बयान।

दूलमसिंह सेशन सुपुर्द हो गये। अभी एक महीने पीछे जिला जज की अदालत खुलेगी। दूलमसिंह की ओर से उन्हें जमानत पर छोड़ने के वास्ते दो बार अर्जी पड़ी लेकिन मेजिस्ट्रेट ने मंजूर नहीं किया।

ऐसे बड़े आदमी की जमानत न होने का कारण था। उस दलके कुछ बड़े बड़े रईस दूलमसिंह से खार खाते थे। कारण यही कि उन लोगों से दूलम की नेकनामी बढ़ी हुई थी। दूसरे प्रान्त से आकर यहाँ उन्होंने रोजगार किया और अपने उद्योग मे बढ़ गये यही उनका कसूर था। बहुतेरे डाही लोग उनका नाम नया रईस कह कर पुकारते थे। दूलमसिंह परोपकार मे सबसे आगे रहते थे। सङ्कट में पड़े लोगो की हर तरह से मदद

करते थे। नाम के पुराने बड़े किन्तु गाँठ के छूछे लोग उनसे ऋण लेते थे। वादे पर बड़े लोगो के यहाँ उनका तकाजा जाता था। गरीबों के यहाँ तकाजा कभी नही भेजते थे। गरीब रोगियो का अपने खर्च से इलाज कराते थे। बेटे बेटी के ब्याह मे गरीबी के कारण जिन्हे कष्ट होता उन्हे धन देकर उबारते थे। इन्हीं सब उपकारो के कारण दूलमसिंह बहुतो की आँखों मे गड़ते थे। कितने नाम के बड़े आदमी दूलम से आर्थिक सहायता पाकर भी गुप्त रूप से दुश्मनी रखते थे।

ऐसे ही परोक्षे कार्यं हन्तारं प्रत्यक्षे प्रिय वादिनम स्वभाव के लोगों की करनी से दूलमसिंह आज आफत मे पड़े हैं। जो लोग मुकदमे का आदि से अन्त तक सुनते रहे वह सब कहते थे कि यह सब मुकदमा बनाया हुआ है। देवदूत मुद्दई नहीं हुए। खुद दयावती भी मुद्दई नहीं केवल भुईफोड़ को सिखा बनाकर अनेक दुष्टो की चालबाजी से एडवर्ड साहब मुद्दई बने हैं।

एडवर्ड साहब भी दूलम से बहुत कुछ उपकार पा चुके हैं। वह मित्र भी दूलम पर आफत डालने के लिये कुछ उठा नहीं रखते। बाहर मित्रता दिखाते हैं और भीतर जड़ काटते हैं। ऐसे कपट मित्र हमारे देश में बहुत हैं। दूलम को ऐसे मित्र बहुत नसीब हुए हैं। उन्हीं की दुष्ट करनी से दूलम की जमानत ना मंजूर हो गयी।

एक महीना बीत गया। जिला कोर्ट की सेशन बैठी। दूलम-सिंह के मुकदमे की पेशी आयी। अदालत मे उस दिन बड़ी भीड़

हुई। लोहे की सॉकल मे जकड़े हुए दूलम असामी के कठघरे में पहुँचाये गये। गवाह हाजिर हुए। जिन गवाहो के वयान हो चुके थे वह तो हाजिर हुए ही उनके सिवाय और वहुतेरे मातवर आदमी गवाही में पहुँचे। पहले विचार करके जिन मेजिस्ट्रेट ने मामला दौरा सुपुर्द कर दिया था वही प्रधान गवाह होकर पहुँचे थे। इसके सिवाय एडवर्ड साहव, डाक्टर लोरन, पुलीस के दरोगा, और दूलमसिंह के प्यारे मित्र राजनारायण रायवहादुर सव सेशन जज के इजलास पर गवाही देने के लिये मजवूर किये गये। सव गवाहो के वयान मे मिलान नही हुआ। डाक्टर लोरन के वयान से असामी को वहुत कुछ सहायता मिली। तौभी आईन का कूट तर्क ऐसा कि जज साहव का भ्रम नहीं गया उन्होंने सुवूत के गवाहों पर ही अधिक विश्वास किया। मातहत अदालत के कागजात देखने आदि मे तीन दिन वीत गये। अदालत में असेसर बैठे थे। वही जूरी का काम करते रहे। इस मुकदमे में पॉच असेसर थे। उनमे दूलमसिंह के कपटी मित्र भी कई थे।

सवकी राय सुन लेने पर जज साहव ने अपनी राय जाहिर करदी। एक के सिवाय सब असेसरो ने दूलमसिंह को अपराधी वतलाया। इससे चारो की राय मे राय देकर जज साहव ने दूलम को वीस वर्ष कैद का हुक्म सुना दिया। वहुत लोग इस हुक्म से दु खी हुए। हुक्म मुताविक सिपाही दूलमसिंह को कैद खाने ले गये।

जव यह दुःखदायक समाचार सन्मान सिंह को मिला, प्यारी

बाई आदि सब लोगो को बड़ा दुख हुआ सबसे अधिक दुख स्वयम्वरा को हुआ लेकिन हाय हाय और रोने के सिवाय और उपाय ही नहीं रहा।

दामोदर के घर पर रात के दोनो बेरिस्टर, डाक्टर लोरन, मेजिस्ट्रेट और क्लर्क फकीरी राम प्रधान वकील सहित इकट्ठे हुए। दामोदर को प्रबोध देकर बेरिस्टरों ने कहा—"इस बेइन्साफी का इलाज अपील मे तुरत होगा। और हम लोग उन्हें वहाँ से छुड़ा लावेंगे। चिन्ता मत कीजिये।"

यह प्रबोध की बातें जेलखाने में दूलम के पास भी पहुँचायी गयी। उनको भी इससे सन्तोष हुआ।

बीसवाँ बयान।

दूलमसिंह की सजा हुए दस दिन बीत गये। उनके वकील बेरिस्टरों ने ऊपर की अदालत में अपील दायर कर दी। वहाँ की पेशी भी पास आ गयी। नगर में इस मुकदमे की घर घर चर्चा रही। सब के मन में बड़ी चिन्ता हुई। कुछ आदमी दूलमसिंह के विरोध मे खड़े हुए वह लोग कहने लगे—"घमण्ड किसी का नही रहता। जितनाही मिजाज आस्मान पर था वैसीही सजा मिली है। अपील से भी यह सजा रद्द नहीं हो सकती।

इसके पहले गारद से जो एक हवालाती असामी भाग गया

था उसके विषय मे दूलमसिंह के विरोधियों ने कहा था कि यह सुरंग चूहों की करतूत नहीं आदमी की बनायी हुई सेंध है। यह दूलमसिंह भी कोठरी के पासही था दीवार मे सेंध काटना उनका काम नहीं है। दूलम ने ही अपने किसी मतलब के लिये दीवार मे छेद कराकर उसको भगा दिया है। सुविधा नहीं होने से दूलम नहीं भाग पाये हैं। कैद खाने के जेलर को ढाई सौ रुपया जुर्माना हुआ। अपील मे सरकारी वकील उस बात को भी उठावेंगे ऐसी किम्वदन्ती सुनी जाती है।

ऐसी वहुत सी वातें लेकर वहुत लोग वाद बहस करते हैं भले आदमी इन वातो पर कान नहीं देते। कानून के कीड़े इसी धुन मे हैं कि पहले दिन से सजा होने तक के सव कागजात और रिपोर्टों का मुआइना किया जाय। अस्पताल मे भी दो रोगियों की खबर ली जा रही है। भगवानदास एक तारा वाला और मिरगी का रोगी मुईफोड़ दोनों एकही कमरे मे अस्पताल मे पड़े हैं। डाक्टर लोरन उनको रोज देखते और दवा देते हैं। लेकिन दोनो मे से किसी को आराम नहीं होता। एक दिन डाक्टर लोरन ने भगवानदास को बुलाकर कान मे कुछ वातें कहीं। भगवानदास सुन कर हँस पड़े।

एक साथ वहुत दिनों तक अस्पताल मे रहने से दोनों मे मेल जोल होगया था। एक साथ ही दोनों खुशी खुशी दवा खाते थे। दयावती के सिवाय और कोई मुईंफोड़ के मुँह से कुछ बात नहीं निकाल सकता था। लेकिन अस्पताल में मुईफोड़ से भगवानदास

की बड़ी मैत्री गठ गयी। दोनों मे बड़ी बड़ी बातें होने लगीं। ऐंठ मैठ कर बातें करने पर भी भगवानदास उसकी बातें समझने लगे। अस्पताल जाने पर भगवान को उसका एक तारा मिल गया था। वहाँ अक्सर उसे बजाकर भगवानदास गाया करता था। गाना सुनकर भुईंफोड़ मस्त होकर हँसता था। जिस दिन भगवान से डाक्टर की गुप्त बातें हुई उस रात के बड़ी विचित्र घटना हुई।

दस बजे रात के भुईंफोड़ और भगवानदास दोनों आमने सामने बैठकर मिरगी रोग की दवा खा रहे थे। खाने के बाद एकतारा पर मस्त होकर भगवान गाने लगे। भुईंफोड़ खुशी से सुन रहा था। उस दिन कई दाग दवा बोतल से माँग कर भुईंफोड़ खा गया। गाना सुन कर उसे बड़ा आनन्द हुआ। वह बैठे ही बैठे नाचने लगा। भगवान भी आनन्द मे मस्त हुआ। भुईंफोड़ वाहवा! और दो! कह कर माँगने लगा।

बोतल खाली हो गयी। तब भगवान ने पूछा—"क्यों भुईंफोड़! तुम तो अब अच्छे हो रहे हो यार हम भी नीरोग हो जायेंगे दवा बहुत बढ़िया है। अब तुमको कई दिन से मूर्च्छा नही आयी है। अब नहीं आवेगी। हम तुम दोनों अच्छे होकर लेंगे। अच्छा देवदूत के यहाँ तो तुमारे वह लोग बड़े भले आदमी है न?

भु०—हाँ हाँ! बहुत भले आदमी है।

भ०—वहाँ तो तुम बड़े सुखी थे न?

भु०—हा ! खूब मौज थी ।

भ०—सब लोग तुमको चाहते रहे ?

भु०—हाँ ! सब ! दो और दवाई ।

भ०—(एक दाग और देकर) अच्छा यह तो कहो भुई-फोड़ ! वहाँ तो तुम बड़े मौज से थे । सबलोग तुमको पसन्द करते थे । तब तुमने उस मे आग क्यो लगायी ?

भु०—(दवा खाकर मस्ती से) ना—ना—घर मे नही खर में लगाया था ।

भ०—तो क्यों जरूरत क्या थी ।

भु०—मालिक को बाहर लाने के मतलब से ।

भ०—बाहर क्यों आग बुझाने के वास्ते ।

भु०—नही पु · पु ·· · पु · पुलीस को बुलाने के वास्ते ।

भ०—ओ हो ! तब तो तुम में बड़ी अकल है भुईफोड़ ! पुआल में आग तुमने लगायी लेकिन वह बढ़कर लकड़ी पहुँची और सभी मकान जलने लगा । अच्छा तुमने तो उसको बचाने की खूब कोशिश की लेकिन पुलीस बुलाने को मालिक आ गये बाहर ?

भु०—हाँ ! हाँ दो दवा—

एकदाग और देकर भगवान ने कहा "अच्छा तुमने मालिक को गोली क्यो मारी ?"

दवा खाकर भुईफोड़ बोला—"अरे गोली तो बिआह के वास्ते.. ..."

भ०—विश्राह किसका तुम्हारा ?

भु०—नाः सुश्रमरा—

भ०—तो विश्राह के वास्ते सुश्रम्बरा के तुमने देवदूत को गोली क्यो मारी ?

भु०—मा...मा...मा......

भ०—मा कौन दयावती

भु०—हाँ ! हाँ ! दयावती माई।

भ०—तो दयावती ने तुमको गोली चलाना बतलाया था ?

इस सवाल पर भुईफोड़ का सिर घूम गया। कमजोर आदमी को क्रोध आ जाता है तब बड़ा सङ्कट होता ही है। गुस्से के मारे भुइँफोड़ आग होगया और काँपता हुआ वहाँ से उठ खड़ा हुआ। इतनी देर तक भगवान के सवालो का मर्म्म उसने समझा नही था। पिछला सवाल सुनकर ही वह अधीर हो उठा। और दवा का बोतल दोनो हाथ से उठाकर भगवान के कपार पर जोर से दे मारा।

भगवान के सर पर बोतल टूट गया। कपार से खून बहने लगा। उस समय हाँ! हाँ! हाँ! करते हुए पाँच आदमी आ पहुँचे। डाक्टर लोरन, बेरिस्टर रेनियस यूनिक, एडवर्ड और फकीरीरास उनके साथ मे चार सिपाही भी पहुँचे।

भुईफोड़ का नशा उतर गया। वह घूसा ताने चारो ओर घूरता हुआ एक कोने मे जा खड़ा हुआ। मुँह से बराबर गाली बकने लगा। उसकी आँखे शिकारी शेर की तरह जलने लगीं,

दोनो मुट्ठियाँ बँधी थीं। दाँत पर दाँत पीस रहा था। भयङ्कर दीठ से चारों ओर ऐसा देखता था मानो जिसको पावेगा कच्चे खा जायगा। एक सिपाही जमीन से सटकर धीरे धीरे पास गया और पाँव ऐसा खींचा कि भुईंफोड़ धरती पर धम्म से गिर पड़ा। दो और सिपाहियों ने बड़ी तेजी से उसको बाँध लिया। एक सिपाही उसी दम भुईंफोड़ के सिर पर पानी डालने लगा।

उसी समय वहाँ बहुत आदमी जमा हो गये। राजनारायण रायबहादुर सरकारी वकील, और तीन चार पुलीस कर्म्मचारी भी थे।

उस समय भुईंफोड़ का इकरार साबित हुआ। उसने यही कबूल किया कि दयावती के सिखलाने से उसने आग लगायी और देवदूत को गोली मारी। दयावती के उपदेश से ही उसने अब तक इतना सब छिपा रखा था। कभी किसी से भूलकर भी इन बातो का कहीं जिक्र तक नही किया था। बातो से भगवान ने अच्छी तरह समझ लिया था कि दयावती देवी ही इस मामले की जड़ है और भुईंफोड़ उसका विश्वासी सहायक है। अस्पताल के बोतल की दवा के प्रसाद से भुईंफोड़ सच्ची बात को अब जब्त नहीं रख सका। उसी दवा से उसने इकरार किया।

डाक्टर लोरन की चतुराई से यह काम सिद्ध हुआ। भगवान को भुईंफोड़ के साथ अस्पताल में रखकर दोनों को रोज वह दवा देते थे। यह उनको मालूम था कि उन दोनों को कोई बीमारी नहीं है। जो कुछ जानने को बाकी था वह रेनि-

यस साहब के इशारे से जान गये थे। दवा मे दो औंस पानी एक औंस गुलाबजल, तीन औंस ह्निस्की यही बोतल मे रोज बना कर दवा का नाम मिक्सचर लेवल देकर दिया करते थे।

एकान्त मे बुला कर डाक्टर ने भगवान से सलाह करके जो काम करने को कहे थे उसी के अनुसार उसने तीन दिन पहले से दवा देना शुरू किया था। भुईफोड़ उसे पीकर वहुत प्रसन्न हुआ और रोज माँगने लगा। इस तरह दोनो में बड़ी मैत्री हुई और उसी के फल से भगवान ने सब बातें उसके भीतर से निकाल लीं बात निकालते समय वीच वीच मे हँसी मजाक भी हो रहा था, अखीर सवाल के पहले तक भुईफोड़ बिलकुल वेखबर था। डाक्टर लोरन ने भगवान को वतला दिया था कि अगर भुईफोड़ कुछ शरारत करे तो इशारा पाते ही बगल वाले कमरे से हम लोग आ पहुँचेंगे।

इस सलाह के बाद ही लोरन साहब ने दोनो वेरिस्टर सरकारी वकील और राय वहादुर ने भी सब कह दिया उसी के अनुसार काररवाई हुई थी।

जब एडवर्ड ने भुईफोड़ और भगवान की सब बातें अपने कानो सुनी तब बड़े अचरज मे पड़े। डाक्टर के नेवते पर अस्पताल मे तमाशा देखने गये थे। वहाँ असल मामले का नाटक देख अवाक् हो रहे।

इक्कीसवाँ बयान

जब भुईंफोड़ पकड़ गया। सिपाही उसको अस्पताल में ... लात ले गये। मामले का भेद पाँचपञ्चों को मालूम हो गया।

देवदूत अभी अपने बगीचे में हैं। उनका ... आगे हालत दिनो दिन खराब होती जाती है। रोज दिन में ... उनको बेहोशी होती है। दयावती अब बगीचे मे ... की ही कोठी मे रहती है। दिन मे एक बार रोज स्वामी को दे... बागीचे जाया करती है, सदा स्वामी के पास नहीं रह सकती। छोटी लड़की को माता का ज्वर है उस कारण वहाँ बराबर ... है। स्वामी की सेवा पूरी तरह से नहीं कर सकती। ... लड़कियाँ भी कोठी मे हैं अगलही में जो भस्म हो गया है मालिक की बीमारी से उसकी मरम्मत नहीं हो रही है।

एक दिन सन्ध्या के बाद दयावती सिर झुकाये सोच रही ... कि एक लौंडी ने खबर दी कि एक नये ढङ्ग की स्त्री नीचे ... आपसे भेंट करना चाहती है।

मन में दयावती को नये ढङ्ग की स्त्री सुनकर सन्देह हुआ तौ भी लौंडी से कहा कि बुला लाओ।

लौंडी सुनकर बोली—ऊपर नही आती नीचे ही किसी क... में अकेले आपसे भेंट करेगी किसी के सामने नहीं आपसे कुछ गुप्त बात कहने आयी है। दयावती को ऐसा पसन्द नही था तौ भी न जाने क्या सोचकर नीचे गयी। एक कमरे में जाकर लौं...

से कहला भेजा। वहाँ दयावती बड़ी चिन्ता मे थी। बिखरे बाल उदास चेहरा, कपड़े शिथिल थे। वह भेट करने वाली उसी कमरे में गयी। वह बहुत लम्बी न बहुत नाटी थी। कपड़े स्वच्छ चोली पहने हुए, देह पर संन्यासी रंग की चादर ओढ़े थी। बदन पर कोई गहना नहीं। बाल बिखरे हुए जटा की तरह हो रहे थे।

जब वह आसन पर बैठी दयावती ने कहा—"आप कौन हो! पहले तो कभी नहीं देखा था। मुझे फुरसत नही है। मेरे स्वामी बहुत बीमार हैं। मैं बड़ी चिन्ता में हूँ। जो कुछ कहना हो थोड़े मे जल्दी कह डालो।

स्त्री बोली—"आपका दर्शन ही मेरा खास मतलब था। सो हो गया। मैंने आपकी मान मर्यादा सब सुनी है। यह भी मालूम हुआ है कि आपके स्वामी को किसी ने गोली मारी है। और एक भलेमानस सज्जन अपराध मे पकड़े गये हैं। लेकिन इसमें असल सत्य क्या है वह मैं आपसे सुनना चाहती हूँ। यह मेरी इच्छा अपनी नही मैं अपने गुरू संन्यासी महराज के हुक्म से आपके पास आयी हूँ। कल रात को गुरूजी ने कहा कि यहाँ एक संगीन मुकदमा हो रहा है उसमे एक भले आदमी का लड़का पकड़ा गया है। वह बिल्कुल बेगुनाह है। गुरूजी उस बेगुनाह को बचाने के लिये कई दिनों से होम जाप कर रहे हैं। गुरूजी योगी हैं। योग बल से ही उन्होंने समझ लिया है कि जो पकड़ा गया है वह बेकसूर है हाकिम लोग उसको गुनहगार बना रहे हैं। इस मामले

की और कुल सङ्गीन बातें गुरू जी का योगबल से मालूम हो गयी है।

इतना सुनते ही दयावती लापरवाही से उठी और उस कमरे से बाहर होने लगी द्वार की ओर मुंह करके बहुत लापरवाही दिखाकर बोली—"यह सब मैं सुनना नहीं चाहती न सुनने का समय ही है। मामले मुकदमे मे हाकिम जैसा समझते हैं वैसा करते हैं। जिसने जैसा किया है वैसा वह फल पावेगा। मैं एक गृहस्थी की परदेनशीन हिन्दू नारी हूँ। मुझे इस मामले में योग-याग से कोई सम्बन्ध नहीं है।

इतना सुनकर वह देवी भी उठी और तेजी से दयावती के सामने खड़ी हुई। हाथ के इशारे से नौकरानी को बाहर भेज दिया और आप दयावती का रास्ता रोक कर तेज नजर से देखने लगी। दयावती को क्रोध हुआ कि मालकिन का हुक्म पाये बिना वह बाहर क्यों गयी।

लौंडी क्या करे। जब उस देवी ने कहा—"मैं मङ्गल कामना से यहाँ आयी हूँ। मङ्गल के लिये ही मालकिन को उपदेश दूँगी। तू बाहर चली जा।"

इसी पर लौंडी बाहर गयी थी। झट द्वार बन्द करके उसने दयावती से कहा—"लौट आओ मालकिन अपने स्थान पर बैठो। तुम लोग अभी कच्ची हो योगी की बात मानो चाहे नहीं। मुझे विश्वास पक्का है। मेरी बात नहीं मानोगी तो तुम्हारा भला नहीं होगा। मैं कहे देती हूँ।"

यही कहती हुई स्त्री ने अपने कपड़े के भीतर से एक पीर नहीं कागज़ का टुकड़ा निकाल कर दयावती के सामने रखा। उसमें कुछ थोड़ा नागरी मे ही लिखा था। उसमे तीन चार पंक्तियाँ थीं उन्हे पढ़ कर दयावती का कलेजा काँप गया। वह आसन पर बैठी उस स्त्री का मुँह ताकने लगी। उस स्त्री ने और कहा—इसमें जो लिखा है उसके सिवाय भी बहुत सी बातें योगी के प्रसाद से मुझे मालूम हो गयी हैं। अब तुम और सब बातें छोड़ो, क्रोध चिन्ता और अभिमान त्याग कर दो। ध्यान से इस कागज़ को पूरा पढ़ जाव। तुम होश मे आ जाव। योगी के यज्ञकुण्ड में यह अक्षर निकले हैं। यह आदमी के हाथके लिखे नहीं है। कोई लिखता तो होम की आग मे भस्म हो जाता। तुम योगबल दैव-शक्ति पर विश्वास करो। विश्वास न हो तब भी विश्वास करना होगा पढ़ डालो इसको! पूरा पढ़ जाव।"

दयावती के भीतर बड़ा भय हुआ। उस स्त्री के घूर कर ताकने से और भय बढ़ गया। दयावती की आँखें ऊपर से लौट पड़ीं। हाथ से कागज़ छूट पड़ा। उस स्त्री ने कई बार कहा—'उठा कर पढ़ो! पढ़ो! डरो मत! ऊपर आँख उठा कर देखो। योगिनी नाच रही हैं। और तुम्हारी ओर घूर रही हैं। अगर तुम नहीं सुनोगी तो सैकड़ों त्रिशूल तुम्हारे चारों ओर नाचते हुए तुम्हारी आँखें निकाल लेंगे। खबरदार हो जाव। मैं अब भी तुम्हारे भले के लिये कहती हूँ। अगर अब भी मेरी बात नहीं मानोगी तो मैं तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकूँगी तुम जानो अब!

की काँपती हुई दयावती कागज़ उठा नही सकी। उस स्त्री ने मुसकुरा कर कहा—"दयावती मैं तुम्हारा नाम जानती हूँ। जो जो तुमने किया है सब जानती हूँ। वह सब कागज़ में लिखा है। यह नागरी अक्षर मैं नही पहचानती। गुरूजी के कहने से सब मैं जान गयी हूँ। तुम पढ़ सकती हो। गुरूजी ने जो कहा है वह सब मुझे याद है। तुम पढ़ नहीं सकती हाथ काँपता है कागज़ भी नहीं उठा सकती। इसका कारण भी गुरूजी हमको बतला चुके हैं। तुम पढ़ नही सकोगी। यह भी मैं जानती हूँ। गुरूजी ने कहा है। संसार मे जो सती है वही इस कागज को हाथ मे ले सकती है पढ़ सकती है। देखो दयावती! तुम मुझे नहीं जानती लेकिन मैं तुमको पहचानती हूँ। तुम्हारे मन की मैं सब जानती हूँ। जवानी मे जो तुमने किया है सब मुझे मालूम हो चुका है। तुम यहाँ से उठना नही। भागने की कोशिश नहीं करना। मैं जो कहती हूँ सब सुनो।"

दयावती अब लापरवाही दिखाकर बोली—"क्या जानती हो तुम? तुम कहना क्या चाहती हो। मैं आर्यकुल नारी हूँ। तुम योगिनी हो तुम मुझे डेराती क्या हो? मैं भूत प्रेत, योगी योगिनी कुछ नहीं जानती मानतीं। मैं कुछ किसी से नही डरती। मुझे डराने धमकाने की नाहक कोशिश मत करो। मेरे स्वामी मरण सेज पर हैं। कन्या भी अब तब की दशा में है। ऐसे मौके पर तुम मुझे मत रोको अब जो कहना था तुम कह चुकी। अब चली जाव तुम यहाँ से बाहर दरवाजा खोलो मैं भी जाऊँ। मैं अगर

जानती कि इसी काम के लिये आयी हो तो हरगिज यहाँ नहीं आती। तुम भी यहाँ नहीं आने पाती।"

इतना सुनने पर उस स्त्री को हँसी आयी। दयावती ने देखा कि द्वार पर भीतर ताला भरा है। अब बाहर नही जा सकती न पुकारने से कोई सुन सकता है न कोई बचा सकता है। दयावती भीतर बहुत डरी है लेकिन ऊपर खाली साहस से यह बात कह रही है यह भी वह सफेद कपड़े वाली योगिन समझ गयी। वह मन्द मुसकान से बैठी रही।

दयावती वही बैठी रही। वह स्त्री उसके और पास गयी और गम्भीर होकर बोली—"दयावती! तुमने जन्म लेकर पृथ्वी को कलङ्कित किया है तुम कलङ्किनी हो। धरती तुम्हारा पाप बोझ नहीं सम्हाल सकती। देवी दयावती! तुमने अपने नाम को पातक की नदी मे डुबाया है मैं वह बात कहूँगी जिसे सुन कर तुम्हे सब अपनी करनी याद आ जायगी।"

दयावती तुम्हे उस गाँव की बात याद है? देवनाथ बाबू की याद है? वहाँ तुम्हारे चेहरे पर सदा गाढ़ा घूँघट रहता था याद है? दयावती! रातके सदा तू छिप कर वहाँ जाती रही उस बँगले मे जाती रही तुम्हें याद नही है?

दयावती को कप कपी आ गयी थी बोलती बन्द थी। काँपते हुए ही उसने कहा—"यह सब तुम क्या कहने लगी—कहाँ का गाँव! कहाँ का देवनाथ! किसके सिर का घूँघट! मैं कुल नारी हूँ। तुम यह सब क्या बकती हो? अगर मेरे पति बीमार नहीं

होते। उनको यह सब मैं कह देती तो तुम्हारा निस्तार नहीं था यहाँ से तुम चाहे योगिनी हो या जो हो! यहाँ से कुशल से नहीं जा सकती थी। अब भी मैं तुम्हारे भले के वास्ते कहती हूँ यहाँ से चली जाव बाहर हो जाव! अच्छी तरह स्वामी होते तो जो कुछ वह करते वह मैं खुद कर सकती हूँ। अब चली जाव देर मत करो तुरत चली जाव।"

मुसकराती हुई वह स्त्री बोली—"बाहर जाने से पहले दो बातें और मेरी सुनलो दयावती! खूब ध्यान से सुनो। भुईंफोड़ तुम्हारा पालक पुत्र है वह बात नहीं कर सकता। कोई पूछे तो ऐंठ मैंठ कर दाँत दबा कर दो एक बात निकालता है। तुम पूछो तो उसके मुँह से मानो शब्दों का लावा फूटने लगता है। कागज़ जलाकर पयार मे आग लगाना, तुम्हारी करनी है कि भुईंफोड़ की यह हाकिम को भी मालूम नहीं हुआ है। देवदूत को किसने गोली मारी है इसका भी सुबूत नहीं पहुँचा है। हमारे गुरूजी योग बल+ से सब जान गये हैं। आग लगाने और खून करने की सब कारवाई तुम्हारे भुईंफोड़ की है। तुम्हारे ही हुक्म पर उसने यह सब किया है। अब भी खबरदार हो जा। होश मे आकर सच्ची बातें मेरे सामने कबूल करो?

+ इस योगविद्याका एक अंश मोहिनी विद्या मेसमेरिजम है उसका सब साधन जानने और सीखने की रीति मोहिनी विद्या में छपा है। दाम १॥) हमसे मगाकर पढ़ें— —मैनेजर जासूस बनारस सिटी।

स्वयम्वरा सती का एक सज्जन उपकारी से व्याह सम्बन्ध है उसको तोड़ने के लिये तू हज़ार कोशिश करके भी सफल नहीं हो सकी। वह सज्जन तुम्हारे पास देवनाथ बना था उससे तुम्हारी गहरी थी। वही देवनाथ बनकर तुम्हारे साथ गाँव मे बरसों रहा। याद रखो। सत्य को छिपाना महापातक है। सत्य कह देने से सन्तों के दरबार मे क्षमा मिलती है। हाकिम भी बड़े अपराध में लघु दण्ड देकर दया करते हैं। देखो दयावती! तुम निर्दयावती मत बनो। तुम कुल कलङ्किनी अ सती हो। यह गुप्त पाप तुम और देवनाथ दो ही जानते हैं और नही अगर और कोई इस भेद को जानने वाला है तो एकही स्त्री है जिसको तुम लोगो ने वहाँ गाँव में लौंडी बनाया था। तुमको सब बातें याद है। तुम वही बातें मेरे सामने कह दो। जाहिर करने से तुम्हारा भला ही होगा। क्योंकि तुम्हारी यह चाल चलन जो जानते हैं उनके सिवाय और किसी को मालूम नही होगा। अगर अब भी वह सब तुम छिपा रखोगी तो इसका ढिंढोरा गाँव नगर, और देश भर में पिट जायगा। उस हालत मे तुमको मुँह दिखाते नही बनेगा। यह तो एक बात हुई दूसरी बात मेरी तुम ध्यान से सुनो। तुमने अपने ही मुँह से अपने मिलनुआ से कहा है कि छोटी लड़की का मुँह तुम्हारे ऐसा है वह तुम्हारी जार कन्या है। अगर मैं यह बात—"

इतना कहते ही बाहर से कोई दरवाजा पीटने लगा। दयावती ने घबराकर कहा - "यह कौन है?" उस आगता ने कहा—

"जान पड़ता है भगवान का भेजा हुआ कोई गवाह आया है।"

यही कहकर मुसकुराती हुई स्त्री ने ताला खोलकर किवाड़ भी खोल दिये। सामने ही पुलीस का आदमी मिला। वह बाहर ही खड़ा रहा। उसकी बगल से एक स्त्री निकल आयी।

दयावती उसे देखकर मानो आसमान से गिरी सदर दरवाजा वन्द है फिर पुलीस कैसे भीतर आयी। यह स्त्री कहाँ से निकल आयी ?"

उस स्त्री ने इन बातो का कुछ जवाब नहीं दिया। उस स्त्री को हाथ धर कर भीतर लायी और इशारे से पुलीस को विदा करके पहले के समान किवाड़ वन्द करके ताला भर दिया। फिर उस स्त्री को दयावती के पास ही सामने लाकर उस आगता देवी ने उस नयी आयी हुई का घूँघट खोल दिया। कहा—

"देखो दयावती ! इस स्त्री को पहचानती हो ?"

इतना सुनते ही जो दयावती ने उसे देखा तो उसकी बोलती वन्द हो गयी। वह आगता देवी खड़ी थी। दयावती अपने आसन पर वैठी थी। ज्योंही उस नवागताका घूँघट हटाया गया। दयावती वहीं वैठी पत्थर हो गयी।

केवल वही आगता देवी वात करने लगी—"देखो दयावती ! इस तरह चुप्पी साधने से नहीं वनेगा। वोलो इसको पहचानती हो या नहीं ?"

दयावती फिर वैसी ही वोली—"यह न जानें कहाँ से आयी है। मैं परदेनशीन घर से वाहर नहीं हुई। मैं इसको क्या जानूँ।"

अब उस नवागता की ओर देखकर वह देवी बोली—"क्यों जी! तुम बोलो यह दयावती इस घर की मालकिन हैं। यह माननीय देवदूत की पतिव्रता सहधर्मिणी हैं तुम इनको पहचानती हो?"

इनके सिरमें चतुश्र की ओर ताक कर वह बड़े अचम्भे मे आयी। कुछ बोल नही सकी फिर बहुत आग्रह पर वह कहने लगी—"हाँ इनको वही देवनाथ बाबू के बॅगले पर मैंने देखा था। देवनाथ बाबू रात को इन्हें वहाँ बराबर ले जाते रहे। मै उसी बॅगले मे नौकरानी रही।"

फिर उस आगता देवी ने दयावती से कहा—"क्यो दयावती! अब कहो तुम इस दुखिनी लौंडी को पहचानती हो जो देवनाथ असल नाम दूलम होकर तुम्हारी करनी से कैदखाने पड़े हैं उन्हीं के यहाँ तुम्हारे रहते यह लौडी रही। तुम्हारा जो भुईंफोड़ बहुरूपिया को बोतल मार कर हवालात मे बन्द है वह मिरगी का रोगी बनकर पहले अस्पताल मे रहा। कहो कुछ और सुनना चाहती हो तो हम सब कहने को तैयार हैं लेकिन उस गड़े मुर्दे को उखाड़ने की अब जरूरत नही है। योगबल की महिमा अपार है * जो योगी है उससे संसार की कोई बात छिपी नहीं रहती। हमारे गुरुदेव योगिराज सब जानते हैं। मैं उनकी दासी हूँ। जो

---

* योगबल का अङ्ग—मोहिनी विद्या मेसमेरिजम है उसको सीखना, समझना चाहें तो मोहिनी विद्या १॥) पर हमसे मंगा लेवें।

मैनेजर जासूस बनारस सिटी।

बेगुनाह कैद पड़ा है उसकी भलाई के लिये गुरूजी ने सब हमको बतला दिया है अब तुमको उचित है कि सब सच्ची बात कबूल कर लो। मैं फिर कहती हूँ कि सच्ची बात कबूल करलो तो तुम्हारी भलाई ही होगी।

दुखिनी की ओर कुछ देर इकटक देखती हुई दयावती उस आगता देवी के पाँव पर कटे रूख की तरह गिर पड़ी। दुखनी को और कुछ कहना नहीं पड़ा।

दयावती रो रो कर कहने लगी—"दया करो देवी। इस अभागिनी को क्षमा करो। तुम को बिना जाने पहचाने मैंने कटुवचन कह कर पाप किया है उसे माफ करो। अब बतलाओ मैं इस महापाप का क्या प्रायश्चित करूँ। योगबल से तुम्हारे गुरू जी ने जो कुछ जाना है उसको मैं काटूँगी नहो। मैं कलङ्किनी हूँ। जरूर तुम्हारे भीतर बड़ी दया होगी। मुझे अब क्षमा करो देवीजी अब मेरा कुल मान मर्यादा रखकर जो कहो मैं तैयार हूँ। कैसे तुम प्रसन्न होगी सो कहो और मेरी इज्जत बचाओ।" यही कह कर दयावती उनका पाँव पकड़ रोने लगी। देवीने धीरे से कहा—"चुप रहो पातकिनी अब जबान बन्द करो। तुझे अनुताप आया है यह मैं समझ रही हूँ। इस आतङ्कके साथ अनुताप आया है यह भी तेरे लिये मङ्गल है। अब मैं जो कहती हूँ करो। तुम्हारा अपराध तुम्हारा पाप इससे ढका रह जायगा।

तुम्हारा मुईफोड़ अभी फौजदारी की हवालात में बन्द है। वह जल्द बड़े इजलास पर लाया जायगा वहाँ बड़े बड़े वकील

बेरिस्टर जिरह करके सब सच्ची बात उसके भीतर से निकाल लेंगे तब तुम्हारी मान मर्य्यादा नहीं बचेगी। लेकिन अभी समय है। भुईफोड़ को खबरदार कर देने से काम बन जायगा। मैं एक दिन जल्दी भुईफोड़ को तुम्हारे पास भेजूँगी। तुम उसको खबरदार करके समझा देना कि तुम्हारे कहने से उसने घर में आग लगायी है या गोली चलाई है यह बात अदालत मे जाहिर नहीं करे। जिन लोगो ने इस मुकदमे को मजा बनाकर तैयार किया है। उनकी बुद्धि की बलिहारी है। उन लोगो ने भुईफोड़ को भी बड़ी चालाकी से पागल बना दिया है। पागल बनकर बड़े बड़े अपराधी इजलास से छूट जाते हैं तुमने उससे यह दोनों काम कराये हैं यह हरगिज वह जाहिर नहीं करे। वह इतनाही कहे कि अपनी बुद्धि से ऐसा किया है तो तुम्हारे ऊपर कुछ भी अपराध या कलङ्क नहीं लगेगा। तुम सब तरह से बरी हो जाओगी। वह बेगुनाह जो हवालात में पड़ा है वह बेचारा भी रिहाई पा जायगा। केवल भुईफोड़ को थोड़ी सी सजा हो जायगी। उसके काम मे तुम किसी तरह शामिल हो ऐसा हरगिज जाहिर नहीं होना चाहिये। यह मुझे मालूम है कि भुईफोड तुम्हारे ही इशारे पर नाचता है। अगर वह सब बात इजलास पर जाहिर कर देगा तो तुम्हारी क्या गति होगी सो तुमको समझने से बाकी नहीं रहा है। देखो! खूब ख्याल से मेरी बात याद रखो। मैं कह चुकी हूँ तुम्हारी ही भलाई के वास्ते मैं आयी हूँ। जिनको तुम लोगों ने नाहक असामी बनाकर पकड़वाया है उन्होने हवालात से ही तुम

को जो चिट्ठी लिखी थी उस पर तुम आग हो गयी थी लेकिन उसने सब सच्चा सच्चा लिखा था। जो ब्राह्मण चिट्ठी लाया था उसकी हतक करके भी तुमने बड़ा पाप किया है। तुम्हारे ऊपर बहुतेरे लम्पटो की नजर रहती है और अभी तक है यह सब भुईफोड़ को मालूम है। वह अदालतके सामने इन गुप्त बातों को हरगिज जाहिर नहीं करे इसका उपाय तुम जरूर कर डालो। जिसको तुमने असामी बनाया है वह भी एक दिन तुमसे भेट करने आया रहा। तुम्हारा कमजोर स्वामी हाथ में पिस्तौल लिये द्वार पर छिपकर तुम लोगो की बातें सुनता रहा था और जो बात वहाँ हुई वह तुमको भूली नहीं है। तुमने उनका पहले अपमान किया फिर विनती की कि स्वयम्वरा को न व्याहे तुमको लेकर भाग चलें। तुमने बेटी माता पिता सबको त्याग कर उनके साथ भागने को ठहराया था। तुम्हारे स्वामी को वहाँ देखकर उन्होने उनसे कहा था कि मुझे (उन्हें) मारकर सब बखेड़ा दूर कर दो। सो सब सुनने पर तुम्हारे स्वामी के हाथसे पिस्तौल गिर पड़ा वह खुद भी बेहोश होगये। इधर मुकदमे की अपील बड़े इजलास पर दायर हो चुकी है। तुमको चाहिये कि भुइफोड़ को ऐसा सजा समझा कर तैयार करदो कि तुम्हारा हाजिर होना हाईकोर्ट जरूरी न समझे। खूब खबरदार हो जाव। मेरा कहना राई रत्ती सब याद रखो। मैं अब जाती हूँ। अगर मौका मिला और जरूरत पड़ी तो एकबार फिर आ जाऊँगी। इस दुखनी को भी मैं साथ लिये जाती हूँ। अब इससे भी तुम्हारी भेट नहीं होगी।

इस समय दो स्त्रियाँ उस घर से बाहर हो गयीं। दयावती ढलती ढुलकती ऊपर चली गयी।

बाईसवाँ बयान

ऊपर कही घटना के एक अठवाड़े पीछे अपील के इजलास पर दूलमसिंह के मुकदमे की पेशी हुई।

इस हफ्ते में जो घटनाएँ हुईं उनकी व्याख्या यहाँ पाठकों को दरकार है। दुखनी लौंडी को लेकर जो स्त्री भीतर गयी थी वह स्त्री नहीं गेरुआ बाबा उर्फ मस्तराम जासूस खुद बदौलत थे। उनकी रक्षा में दस बारह आदमी भी थे।

मस्तराम ने जाबते से जेल में जाकर भुईफोड़ को अपने साथ लिया। और एक चतुर पुलीस अहलकार देहाती की पोशाक में उनके सङ्ग होकर दयावती से मिले।

सन्ध्या हो चुकी थी। दयावती भुईफोड़ को देख कर आँसू बहाने लगी। पुलीस वाले ने धीरे से कहा—"अरे रोना मत गोल माल मत करो। सब बात छिपा के रखो। एक देवी ने हम लोगों को भेजा है उस देवी ने जो कहा था वही बात जल्दी से भुईफोड़ को समझा दो। याद रखो उस देवी के कहने से कोई बात इधर उधर न होने पावे। एक ही घंटे में फिर इसको उस देवी के सामने ले जाना होगा।"

पुलीस मेन का नाम था मुरारीराव। दयावती पहले आयी

हुई देवी की बात याद करके कॉप गयी। उसने आँसू पोछ कर भुईफोड़ को पास बिठाया उसके कान मे कहा—"देख भुईफोड़ मैं तोको मानती हूँ। तू भी मुझे माई कहके मानता है। मै जो कहती हूँ वही करना।"

फिर दयावती मुरारी की ओर ताकने लगी। मुरारी ने भाव ताड़ कर कहा—"अब आप रुको मत। सब हाल जल्दी से कह दो। वह देवी जो कह गयी थी वह सब हमारे भीतर उसने भर दिया है। मेरे दिल की पेटारी में वह सब बन्द है। एक बात भी इधर उधर होने से बड़ा अनर्थ हो जायगा याद रक्खो देर मत करो। बोलो जल्दी।"

दयावती कई बार लम्बी साँस लेकर बोली—"देखो भुइफोड़ जो हो गया वह सब भूल जाव जो कुछ तुमको हमने कहा या सिखलाया था वह बात किसी के पूछने पर हरगिज़ मत कहना। तुम यही कहना कि अपने मन से खेल ही खेल मे दियासलाई जलाकर पुआल धराया वह आग बढ़कर कड़ी काठ जलने लगा। और कहना कि बन्दूक भी खेलवाड़ मे छोड़ा जो मालिक को लग गयी यही बराबर कहना भूल कर भी मेरा नाम नहीं लेना। तुम पर जो दु:ख-संकट आवेगा सब से मैं बचा लूँगी। चिन्ता किसी बात की नहीं करना। समझ गया न ?"

भु० फो०—हाँ! हाँ! हाँ। चू......चू.. ..चू......झगड़ली! दू. दू.. . दूसरना ...ना. .. क.... .क... . क. ...... कहब

और भी इसी तरह हकलाकर भुईंफोड़ कुछ बोला मुरारी की समझ में कुछ नहीं आया। फिर भुईंफोड़को लिये हुए मुरारी वहाँ से चलता हुआ।

अब भुईंफोड़ फिर मस्तराम के यहाँ पहुँचा। वहाँ बहुत लोग आये थे। सबको हटाकर मस्तराम भुईंफोड़ से अकेले में बोले — "अरे भुईंफोड़ तुम तो बिल्कुल आराम हो गये यार! मुझे आज बड़ी खुशी हुई कि अपने अस्पताल के साथी से भेट हुई है। तुम हमारे प्यारे भाई हो। हम मस्त हैं तुम भुईंफोड़ हो। तुमने क्यों उस भले आदमी को सिर में ऐसा बोतल मारा कि तुम को मुकदमे में फँसना पड़ा। लेकिन वह आदमी तो अब आराम होकर कहीं चला गया है। तुमको कुछ अब डर की बात नहीं।

हाँ आज तो तुम दयावती से भेट करके आये हो। देखो ख्याल रखो जो वह बोली है वही कहना। कोई कितना ही पूछे दूसरी बात हरगिज नहीं कहना। मैं वकील मुख्तार खड़ा कर दूँगा। मामला बहुत खफीफ है एक आदमी के सिर पर बोतल मारा है यही तो है। फिर खेलते खेलते पुआल में दिया सलाई लगाना, खेल ही खेल में भूल से गोली छोड़ देना यह तो बिलकुल मामूली बात है अगर कुछ थोड़ी सजा भी हुई तो जल्दी भोग कर छूट जाओगे। कुछ बड़ी बात नहीं है। यह सब सच्ची बात कह देना खबरदार हाकिमों के सामने दयावती का नाम

सब सुनता रहा फिर सिपाही